महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मासिक

वैदिक गर्जना

सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर–२०२२ (संयुक्तांक) वर्ष : २२ । अंक : ६

समग्र कान्ति के सूत्रधार महर्षि दयानन्द सरस्वती

(१९४८–२०२३)
हैदराबाद राज्य स्वतन्त्रता के ७५ वर्ष

(१९४७–२०२२)
भारतीय स्वतन्त्रता
के ७५ वर्ष

प्राणों के दीप बुझाकर तूने, दीवाली का दीप जलाया !
धन्य हे महर्षि दयानन्द तुझे, तूने सोया विश्व जगाया !

– कर्मनिष्ठ आर्य व्यक्तित्त्व डॉ.ब्रह्ममुनि जी का भव्य अभिनन्दन समारोह– दि.१७ अप्रैल २०२२
गौरव करते हुए पूर्व केंद्रीय मन्त्री डॉ.श्री सत्यपालसिंह जी एवं अन्य । * डॉ.ब्रह्ममुनि जी का सम्बोधन तथा मंच

डॉ.ब्रह्ममुनि जी अभिनन्दन समारोह के दृश्य (दि.१५,१६,१७ अप्रैल २०२२)

आमन्त्रित विद्वानो व अतिथियों का सम्मान एवं अन्य कार्यक्रम

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,१२३ विक्रम संवत् २०७९
दयानन्दाब्द १९८ सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर २०२२

प्रधान सम्पादक
राजेन्द्र दिवे

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य

सहसम्पादक **प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, ज्ञानकुमार आर्य, राजवीर शास्त्री, डॉ.अरुण चव्हाण**

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) श्रुतिसुगन्ध ०२
२) द्विजन्मशताब्दी व सार्धशताब्दी-हमारे कर्तव्य(सम्पादकीयम्)... ०३
३) सुख से दूरी क्यों ?.......... ०५
४) दयानन्द के अनन्त उपकार ०६
५) पुरुष पशु का बन्धन ०७
६) आजादी का अमृतमहोत्सव १०
७) हुतात्मा भाई श्यामलालजी ११
८) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द १४
९) कर्मयोगी डॉ.ब्रह्ममुनिजी-अभिनन्दन समारोह(वृत्तान्त).. १५
१०) सच्चे शिव की खोज २३
११) समाचार दर्पण २५
१२) शोक समाचार २७

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/दयानंद वाणी २९
२) व्रतपती व्हा ! ३०
३) स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव आणि आपण ३२
४) हैदराबाद लढ्यात आर्य समाजाचे योगदान ३३
५) आयुर्वेद परिचय ३५
६) राज्य श्रावणी महोत्सव - वृत्तांत ३६
७) पू.स्वामी श्रद्धानन्द - १०६ वा जन्मदिवस-वृत्तांत ३९
८) वार्ताविशेष ४१
९) शोक समाचार ४५
१०) सभा उपक्रम ५०

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रू.१००/-
आजीवन रू.१०००/-

* प्रकाशक :- मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,परली-वै.

* मुद्रक :-वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली-वै.

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है।
किसी भी विवादकी परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा।

श्रुतिसुगन्ध

स्त्री-पुरुषों के कर्तव्य

विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारु मन्ये वां जातवेदसा यजध्यै ।
ऊर्ध्वं नो अध्वरं कृतं हवेषु ता देवेषु वनथो वार्याणि।।

(ऋग्वेद-७/२/७)

पदार्थान्वय- हे स्त्री पुरुषो! जो (**मानुषेषु**) मनुष्यसम्बन्धी (**यज्ञेषु**) सत्कर्मों में (**कारू**) वा शिल्पविद्या में कुशल वा पुरुषार्थी (**जातवेदसा**) विद्या को प्रसिद्ध प्राप्त हुए (**विप्रा**) बुद्धिमान् तुम दोनों (**नः**) हमारे (**हवेषु**) जिन में ग्रहण करते उन घरों में (**अध्वरम्**) रक्षा करने योग्य गृहाश्रमादि के व्यवहार को (**ऊर्ध्वम्**) उन्नत(**कृतम्**) करो। (**देवेषु**) दिव्य गुणों वा विद्वानों में (**वार्याणि**) ग्रहण करने योग्य पदार्थों को (**वनथः**) सम्यक् सेवन करो। (**ता**) वे (**वाम्**) तुम दोनों (**यजध्यै**) सङ्ग करने के अर्थ मैं (**मन्ये**) मानता वैसे तुम दोनों मुझ को मानो।

भावार्थ - (इस मन्त्र में वाचकलुप्तोपमा अलंकार है) जैसे ब्रह्मचर्यसेवन से विद्या को प्राप्त हुए क्रिया में कुशल विद्वान् स्त्री-पुरुष सब घर के कामों को शोभित करने को समर्थ होते हैं और वे संग करने योग्य होते हैं, वैसे तुम लोग भी होओ।

महर्षि दयानन्द सरस्वतीजी की **२००वीं जयंती**
एवं आर्य समाज स्थापना के १५० वर्ष
के उपलक्ष्य में द्विवर्षीय विश्वव्यापी कार्यक्रम आयोजनों का

भव्य शुभारम्भ

रविवार दि.१२ फरवरी २०२३
प्रातः ९ बजे

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री

माननीय श्री नरेन्द्रजी मोदी

के करकमलों से उद्घाटन

स्थान : इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम, आई पी स्टेट, नई दिल्ली

आप सभी उपस्थित रहें तथा लाईव कार्यक्रम में सम्मिलित हो।

द्विजन्मशताब्दी व सार्ध शताब्दी - हमारे कर्तव्य!

महापुरुषों की जीवनियां हमारे लिए नई चेतना, सत्प्रेरणा व नवोत्साह का विषय बन जाती है। जब जब भी उनके जन्मदिवस या स्मृतिदिवस मनाने का सुअवसर प्राप्त होता है, तब मानों उनका दैदीप्यमान व्यक्तित्व हमारे सम्मुख ज्योतिस्तम्भ के रूप में उपस्थित हो जाता है । सत्पुरुषों की पुनीत सुमनमाला को सुशोभित करने वाले महर्षि दयानन्द के विषय में तो क्या कहना ? वैदिक विचारों व सद्गुणों से ओतप्रोत उनका आदर्श जीवन परिवर्तन की राह पर खड़े विश्व के हर एक मानव को आत्मसुधार करने तथा मानव जाति के काम आने हेतु सदैव प्रेरित करता है।

इस दृष्टि से आगामी दो वर्ष हम आर्यों के लिए ऐतिहासिक सिद्ध होंगें । हजारों वर्षों की प्रतीक्षा के बाद इस पावन धरती पर ऋषि दयानंद जैसा महान युगपरुष अवतरित हुआ, जिनकी अपूर्व साधना से हमें वेदों का यथार्थ ज्ञान मिला। वर्ष २०२३-२४ में ऐसे दिव्यात्मा का २००वां जन्मोत्सव मनाने का सद्भाग्य हम सबको प्राप्त है । साथ ही उससे अग्रिम वर्ष २०२४-२५ में इस आद्य क्रांतिकारी सुधारक द्वारा विश्वकल्याणार्थ स्थापित **'आर्य समाज'** इस महासंगठन का भी १५० वां स्थापना वर्ष मनाने का शुभ अवसर हमें मिल रहा है, जिसके हम सभी साक्षीदार हैं।

'व्यष्टि से समष्टि' के आधार पर व्यक्ति ही समाज व विश्व के निर्माण का मूलभूत आधार होता है। पहले आदर्श गुणसंपन्न व्यक्ति का निर्माण और बाद में उसके माध्यम से एक सभ्य व सुसंस्कृत समाज ! अखण्ड तपश्चर्या के फलस्वरूप बालक मूलशंकर पहले महान योगी महर्षि दयानन्द बनें और बाद में उन्होंने 'आर्य समाज' जैसी महान संस्था स्थापित की। इस परिप्रेक्ष्य में आनेवाले दो वर्ष 'व्यक्ति' व 'समाज' इन दोनों के नवनिर्माण हेतु नवसंकल्पित होने हेतु बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। अतः पहले अपना व्यक्तिसुधार और बाद में समाज व राष्ट्र का उद्धार करना है। जब तक हम अपना निर्माण कर नहीं सकेंगे, तब तक समाज व राष्ट्र के निर्माण की बात करना हास्यास्पद हो जाएगा। जैसे जैसे व्यक्ति सिद्धान्तों के अनुरूप जीवनयापन करने लगता है, तब इससे अन्यों पर भी प्रभाव पड़ने लगता है और समाज का निर्माण भी शुरू होता है। इन दो वर्षों में हमें व्यक्ति से व्यक्तित्व व समाज से राष्ट्र व विश्व के निर्माण हेतु आगे बढना है। ये दोनों वर्षों को हम कैसे मनाएं ? इस पर आज सर्वत्र चिंतन और मंथन जारी है । दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा तथा अंतर्राष्ट्रीय आयोजन समिति की ओर से जो भी निर्देश व सुझाव मिले हैं, वे सभी स्वागतार्ह तो हैं ही, लेकिन उससे भी आगे बढ़कर हमें और अधिक विचार करना पड़ेगा।

महर्षि दयानंद का आदर्श व्यक्तित्त्व व उनका अविचल सत्यानुग्रह अत्यंत अप्रतिम रहा, जो कि उनके क्रांतिकारी जीवन प्रसंगों ज्ञात होता है। वैदिक सिद्धांतों के प्रचार और प्रसार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगाया, क्या उन वैदिक मन्तव्यों को हम अपने जीवन से जोड़ने का प्रयास कर सकते हैं ? इस पर हमें सोचना होगा। इसलिए आज हम जहां भी और जिस भी स्थिति में हैं, वहां से दयानंदानुमोदित विचारों के अनुसार जीने की पहल करें। स्वामीजी का जीवन वैदिक सत्य की स्थापना और अवैदिक मिथ्या धारणाओं को मिटाने के लिए था। असत्य, अविद्या,अज्ञान एवं और अनीति के बढ़ते घनें बादलों

को हटाकर महर्षि ने वेदज्ञान का सूर्य चमकाया और उसका ज्ञानप्रकाश सर्वत्र फैलाया । आर्यों का कर्तव्य है कि इस प्रकाश को और अधिक सर्वत्र फैलाने हेतु जी जान से प्रयत्न करें । हम हमारा व्यक्तित्त्व आर्योचित गुणों से ओतप्रोत एवं अध्यात्ममय बनावें।

एक समय ऐसा था, जब ऋषि दयानंद के अनुयायियों व आर्य समाज के सदस्यों पर लोगों का बहुत बड़ा विश्वास था। उस समय आर्यजन अपने शुद्ध आचरण से सर्वत्र पहचाने जाते थे। वैदिक सिद्धांतों पर उनकी दृढ़ निष्ठा थी। इनकी मति, उक्ति व कृति की एकसमानता को देखकर अन्य लोग बहुत ही प्रभावित होते थे। वे सर्वतोमना वैदिक विचारों को आधार बनाकर ही जीते थे। जबकि आज आर्यों की वह अलग पहचान धीरे-धीरे कम होते नजर आ रही है। अब महर्षि के २०० वे जन्मवर्ष के बहाने उसी पहचान को पुनः स्थापित करने के लिए कटिबदद्ध होवे। अपने आर्यत्त्व को जीवित रखने हेतु हर एक दयानन्दभक्त आर्य को सोचना होगा। हम अपने जीवन को योग एवं अध्यात्म के साथ जोड़े। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिग्रह इन पांच यमों तथा शौच, संतोष, स्वाध्याय, तप, ईश्वरप्रणिधान इन पांच नियमों को जीवन का अंग बनाते हुए व्रतस्थ बनकर जीवन बिताएंगे, तो स्वयं को आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति होगी और हम एक आदर्श व्यक्ति बनने में सक्षम हो पाएंगें। इसके लिए हम पंचमहायज्ञों का अनुष्ठान करते रहे। और आचार, विचार व व्यवहार को वैदिक सिद्धांतों के अनुरूप बनायें। व्यक्ति निर्माण के साथ ही अपने परिवार में वैदिक विचारों की स्थापना के लिए जाग्रत रहे।

आज आर्यों में और अन्य लोगों में कुछ अंतर ही नहीं दिखाई देता । जैसा वे लोग जीते हैं, वैसे ही हम भी जीते हैं। स्वयं का ही जीवन सुधरा नहीं, तो हम अन्यों को कैसे सुधार सकते हैं ? हमारा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्!' यह ऊंचा लक्ष्य है। हम वेदज्ञान के आधार पर संसार में मानवता, शाश्वत सुख, शांति एवं परस्पर बंधुभाव की स्थापना करना चाहते हैं । लेकिन हममें नानाविध कमियां, सिद्धान्तविहीनता रहेंगी, तो हमारा व्यक्तिगत जीवन वेदानुकूल नहीं बना, तब इतना बड़ा सपना कैसे साकार होगा? इसीलिए हरे कार्य को चाहिए कि हम अपने व्यक्तिगत जीवन को सिद्धांतनिष्ठ बनावें। मनसा, वाचा, कर्मणा हम वेदमार्ग पर चलते रहे । तभी तो वैदिक मन्तव्यों को अन्यों में स्थापित करने में सक्षम हो पाएगें ।

इन दो वर्षों में हमें समाज, राष्ट्र व वैश्विक स्तर पर भी कुछ करना है। ढेर सारी चुनौतियां हमारे सम्मुख उपस्थित है । इनका समाधान केवल महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज ही कर सकता है। विश्व में हो रहा दानवता का नंगानाच देखकर क्या हम शांत बैठ सकते हैं ? मत- संप्रदाय व जातिवाद का बढ़ता विषैला उन्माद, नारीजाति पर हो रहे अत्याचार, आधुनिकता की दौड़ में बढ़ रहा नैतिक अध:पतन, धार्मिक व आध्यात्मिक क्षेत्र में पंडित, पुजारियों, बाबाओं, मौलवियों, पादरियों द्वारा भोले भाले भक्तजनों को बहकाना, दिन प्रतिदिन बिगड़ता जा रहा खान-पान व रहन-सहन, राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, दलगत स्वार्थ एवं एक दूसरों पर किए जाने वाले आरोप-प्रत्यारोप, फिल्मों द्वारा दिखाये जानेवाले अश्लिल व अर्धनग्न दृश्य, संविधान की आड़ में बढ़ता राष्ट्रद्रोह, अभिव्यक्ति के नामपर बेताल वक्तव्य, देवी-देवताओं के नाम पर बढ़ती पशुबलि, नरबलि प्रथाएं, बढती आत्महत्यायें व जघन्य नरसंहार, शैक्षणिक दुरवस्था तथा पारिवारिक कुसंस्कार आदि चुनौतियां हमारे सामने हैं। इन सभी का स्थायी समाधान केवल महर्षि दयानन्द के वैदिक विचारों से ही हो सकता है। इसका गुरुतर भार निभाने में क्या हम आर्यजन समर्थ हो पायेगें? बस इसीलिए तो हमें आगामी दो वर्षों में स्वयं को सक्षम बनाना है। आर्यत्त्व की रक्षा का उत्तरदायित्व पूर्ण करने की शक्ति ईश्वर हममें प्रदान करें।

- डॉ.नयनकुमार आचार्य

सुख से दूरी क्यों..?

- एड.प्रकाश आर्य

संसार का प्रत्येक प्राणी सुख चाहता है, क्योंकि शास्त्रों में कहा भी गया है- **'सुखार्था सर्वभूतानां मताः सर्वा प्रवत्तये।'** अर्थात् सभी प्राणियों की पसन्द(इच्छा) सुख है। इसे सभी ने स्वीकार किया है। प्राणिमात्र की आत्मा के लक्षण में भी सुख का अन्तर्भाव है। आत्मा के लक्षण दर्शाते हुए न्यायदर्शन में बताया है- **'इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगम्।'** इस प्रकार विश्व के समस्त प्राणियों से यदि बिना पूछे उनकी सर्वोत्तम सर्वोपरि किसी इच्छा का अनुमान लगाया जा सकता है, तो वह है सुख, इसका कोई विरोध नहीं करेगा।

मानवजीवन का लक्ष्य बताते हुए कहा जाता है- **'जीवनस्य उद्दिष्टं शाश्वतं सुखम्।'** इस सुख को प्राप्त करना इसका उद्देश्य है, यह सभी चाहते है। कोई भी इसके विकल्प में दुःख लेना नहीं चाहता। इसीलिए तो कहा गया है-

सुख सम्पत्ति और मित्र को कौन कहे तू जा।
दुःख दुर्मति और दुष्ट को कौन कहे तू आ।

निश्चित रूप से सुख जीवन की सर्वोत्तम चाह है। मानव जन्म पाकर इसे ज्ञानमय पुरुषार्थ से संजोया जा सकता है। उस आनन्द तक पहुंचा जा सकता है, जिस हेतु यह मानव जीवन मिला है। क्योंकि इसी में कुछ करने की स्वतंत्रता है। ज्ञान को विकसित करने के साधन है, योग्य शिक्षा और मार्गदर्शन की सुविधा का प्राप्त होना। इन्हीं के द्वारा मनचाहे स्थायी सुख की प्राप्ति कर दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है।

पर स्थायी सुख कैसे मिले? तो इस सुख की प्राप्ति का आधार बताते हुए कहा- **'सुखस्य मूलं धर्मः।'** सुख का मूल धर्म हैं। इस वाक्य को पढने पर एक प्रश्न मन में उठता है, जो स्वाभाविक भी है। आज धर्म का यत्र तत्र सर्वत्र बहुत प्रचार है। धर्म के नाम पर बडे बडे आयोजन हो रहे हैं। देवपूजा के नाम पर भी कार्यक्रम हो रहे हैं। पूजा पाठ के लिए मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारों की संख्या निरंतर बढ रही है। अनेकों गुरु, धर्म प्रचारक व सन्त अपने को 'भगवान' के रुप में घोषित कर रहे हैं। चारो ओर धर्म ही धर्म नजर आता हैं, धर्म प्रचार में वैज्ञानिक साधनों का प्रयोग रात दिन टी.वी.चैनल्स, मोबाईल के द्वारा हो रहा हैं । किन्तु आज व्यक्ति से लेकर विश्व अशान्त है, दुःख-दुविधाओं से जूझ रहा है। अलगाववाद, हिंसा व मतभेदों में उलझता जा रहा हैं। जब धर्म का प्रचार इतना है, तो फिर धर्म को सुख का आधार कैसे माने? यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है और यह धर्म के प्रति अश्रद्धा अविश्वास का कारण भी पैदा करता है। किन्तु यह क्यों है? क्या वास्तव में धर्म का परिणाम यही है? इस पर चिन्तन नहीं है। इसका प्रमुख कारण है धर्म के सत्य स्वरुप की जानकारी का अभाव! धर्म के आधार व धर्म के मूल लक्षणों की जानकारी न होने से उन कार्यों, विचारों और मान्यताओं को भी समाज धर्म मान रहा हैं।

किसी खाद्य पदार्थ को मीठा करना हो, तो उसमें शक्कर, गुड, शहद, मिश्री, जैसी किसी मिठी वस्तु का उपयोग करना होता हैं। तभी वह पदार्थ मीठा होता है। इसके अभाव में पदार्थ मीठा नहीं हो सकता। इसी प्रकार धर्म के नाम पर कुछ और मानेंगे तो उसका परिणाम अच्छा हो ही नहीं सकता। धर्म को मानने के पहले आचार्य चाणक्य कहते है - **'यस्तर्केण अनुसंधत्ते, स धर्म नेतरः।'** वेद ज्ञान की कसौटी पर तर्कानुसार धर्म को मानना चाहिए।

धर्म का लक्ष्य एक श्रेष्ठ जीवनपद्धति है। एक संयमित, अनुशासित, मानवीय संविधान है। धर्म की दोनों विशेषताएं किसी भी मनुष्य को पतित होने से बचाती है। **'धर्मो रक्षति रक्षितः।'** धर्म ही पतित होने से रक्षा करती हैं। यह अपने स्वयं के प्रति परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व के प्रति किए जाने वाले कर्तव्यों

का और अधिकारों का बोध कराता है। समाज को संगठित कर **'सर्वे भवन्तु सुखिनः।', 'वसुधैव कुटुम्बकम्।'** का सन्देश देता है। अहिंसा, सत्याचरण, पवित्रता, जैसे मानवीय गुणों से श्रेष्ठ धार्मिक व्यक्ति का निर्माण होना संभव हैं। **'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।'** जो भावना दुसरों से स्व आत्मवत् व्यवहार दूसरों से करने की सीख देती है, यह धर्म हैं।

समस्त मानवों का धर्म एक ही हो सकता है, अनेक नहीं। किन्तु उसके स्थान पर धर्म के नाम पर चल रही साम्प्रदायिक मजहबी विचारधारा को जिसमें धर्म की आड में शोषण, हिंसा, हत्या, लूट, अपहरण, बलात्कार आदि दुष्प्रवृत्तियों को भी धर्म माना जा रहा है। परमात्मा का स्थान मनुष्यों को दिया जा रहा है। परमात्मा की पवित्र कल्याणी वाणी, जो सबके लिए है, पूर्ण है, सदा के लिए है जो धर्म का मूल स्रोत है। उसके स्थान पर संकुचित मानवीय विचारधारा को अपनाया जा रहा है। समाज आज सनातन को छोडकर नूतन या पुरातन को मानने की गलती कर रहा हैं। आज धर्म को माननेवालों की संख्या तो बहुत है, किन्तु सत्य स्वरुप को जाननेवालों की बहुत कम।

आज विश्व की अशान्ति का कारण मानवीय ज्ञान से फल फूल रही साम्प्रदायिक विचारधारा हैं। दुर्भाग्य से इसे निज स्वार्थ के लिए धर्म बताकर सब पर थोपने का षडयन्त्र चल रहा है।

सही धर्म तो ईश्वरीय ज्ञान वेद ही है। **'वेदोऽखिलो धर्ममूलम।'**

संत तुलसीदास जी लिखते है- जेहि विधि चलहिं वेद प्रतिकूला, तेहि विधि होई धर्म निर्मूला

अर्थात वेद के बिना धर्म निर्मूल है।

- महू (मध्यप्रदेश)
मो.६२६११८६४५१

***

महर्षि दयानन्द के अनंत उपकार!

- आचार्य चतुरसेन शास्त्री

तीस करोड नामर्दों में जो अकेला मर्द होकर जन्मा! बरसाती घास-फूँस और मच्छरों की तरह फैले हुए मनुष्य-जन्तु की मूर्खता की चरमसीमा के प्रमाणस्वरुप मत-मतान्तरों को जिसने मुठमर्दी से विध्वंसिनी ज्वाला की तरह विध्वंस किया। मरे हुए हिन्दू धर्म को अपने जादू के चमत्कार से जीवित कर दिया और उसे नोच-नोचकर खानेवाले गीदडों को एक ही हुंकार में जिसने भगा दिया, कीडे-मकडों की तरह रेंगकर पलनेवाले हिन्दू बच्चों के लिए जिसने पुण्यधाम गुरुकुलों और अनाथालयों की रचना की, निर्दयी हिन्दुओं की आँखों के सामने डकराती, गर्दन कटाती, गायों के आंसू जिसने अग्निनेत्र से देखे, अबला विधवाओं के ऊपर जिसने अमर छाया की और अछूतों असाध्य घावों पर जिसने संजीवनी मरहम लगाया, जो करोडों व्याभिचारियों में अकेला अखण्ड ब्रह्मचारी था, जिसके प्रकाण्ड पाण्डित्य ने नदिया और काशी की पुरानी ईंटों को हिला दिया, सारी पृथिवी पर जिसकी आवाज गूँज गई थी, युग के देवता की तरह जिसने वेदों का उद्धार किया, जो प्रत्येक हिन्दू के दरवाजे पर निरत्नर ५९ वर्ष तक आवाज में पुकारता रहा, **''उठो, जागो, निर्भय रहो, खडे रहो!''** और सच्चे सिपाही की तरह घाव खाकर जिसने बीच रणक्षेत्र में प्राणों का विसर्जन किया वह दयानन्द था।'' किसी कवि के शब्दों में बस इतना ही कहा जा सकता है -

गिने जायें मुमकिन है सहरा के जर्रे,
समुन्दर के कतरे, फलके के किनारे।
मगर तेरे ऐहसाँ दयानन्द स्वामी,
है कैसे सम्भव गिने जायें सारे।।

- ('दिव्य दयानन्द' से साभार)

पुरुष पशु का बन्धन

- डॉ.रघुवीर वेदालंकार
(पूर्व प्रोफेसर, रामजस कॉलेज, दिल्ली वि.वि.)

सप्तास्यासन् परिधयः त्रिसप्तसमिधः कृताः।
देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नत्पुरुषं पशुम्।।

(ऋ.१०/९०/१६)

(**अस्य**) इस यज्ञ की (**सप्त परिधयः**) सात परिधियां या परकोटे (**आसन्**) थे तथा (**त्रिसप्त**) तीन गुना सात अर्थात् ३x७=२१ (**समिधः कृताः**) समिधाएं बनायी। (**देवाः**) देवों ने(**यज्ञं तन्वानाः**) यज्ञ का विस्तार करते हुए (**पुरुषं पशुम्**) पुरुष पशु को (**अबध्नत्**) बांधा।

व्याख्या :-कहीं-कहीं पर इस मन्त्र की व्याख्या यज्ञपरक की गयी है। सम्भवतः पहले भी इसके आधार पर यज्ञ होते रहे हैं। इसमें पुरुष बन्धन की प्रक्रिया यह थी कि यज्ञकुण्ड के पास यज्ञयूप गाडे जाते थे। यूप का अर्थ है एक ऊँचा खम्भा। यह यज्ञ का पारिभाषिक शब्द है। ऋत्विक लोग उस यूप के साथ यजमान को बांधने का नाटक या प्रदर्शन करते थे। इसका अभिप्राय यह था कि यह यज्ञभाव अब तक पशु के स्वार्थ, अज्ञानता आदि दुर्गुणों से ओतःप्रोत है। यज्ञ के माध्यम से इसे वास्तव में मनुष्य अर्थात् विचारशील ज्ञानी व्यक्ति बनाया जा रहा है। **'पश्यति स्वार्थमिति पशुः।'** जो केवल अपने स्वार्थ को ही देखता है, वह पशु है। चाहे वह आकृति से पशु हो या मनुष्य! यज्ञ का यही प्रयोजन है कि, मनुष्य स्वार्थ से उपर उठकर मनुष्यत्व की ओर चले।

यह उद्देश्य तो ठीक था, किन्तु कालान्तर में इसमें विकृति उत्पन्न हो गयी तथा यज्ञयूप के साथ पशुओं को भी बाँधा जाने लगा। प्रारम्भ में तो इसका भी यही भाव था कि रोगी पशुओं को यज्ञशाला के पास बांधकर यज्ञ में रोग निवारक औषधियाँ डालकर उनके रोगों की चिकित्सा की जाती थी। इसके प्रमाण रुप में एक प्रयोग अभी भी ग्रामों में किसान लोग करते हैं कि पशुओं का एक रोग गलघोटूं होता है। इसमें पशु के गले में एक फोडा सा निकलता है, जो उसकी पूरी गर्दन को घेर लेता है। जिसके कारण पशु को श्वास लेना भी कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में गूगल को अग्नि में डालकर उसकी धूनी पशु को देने से यह रोग ठीक हो जाता है। यह प्रयोग अभी भी ग्रामों में प्रचलित है। इसी प्रकार अन्य रोगों की चिकित्सा भी यज्ञ में रोगनाशक औषधियां डालकर की जाती होगी। यज्ञ, क्योंकि सामुहिक कार्य है। अतः सामुहिक रुप में ही वहां पशुओं को लाया जाता था। पशु हैं तो उन्हें बांधना भी पडेगा। उन्हें यूपों से बांधा जाता था। यूप का अर्थ खूंटा भी होता है।

कालान्तर में इस कार्य में भी विकृति उत्पन्न हो गयी तथा यज्ञयूप से बांधे जानेवाले पशुओं की चिकित्सा न करके यज्ञ में उनकी आहुति देना प्रारम्भ हो गया। यह वेदों के वास्तविक अर्थों को न जानने के कारण ही हुआ। क्योंकि वेदों में कहीं भी पशुबलि का विधान नहीं है। यूपों में पशुबन्धन की यह प्रक्रिया कुछ भी रही हो, यहां हमें उसका विस्तृत विश्लेषण अभीष्ट नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि, यज्ञ मन्त्र बाह्य यज्ञ परक है ही नहीं। इसमें हेतु यह है कि किसी यज्ञ में ७ परिधियां तथा २१ समिधाएं नहीं होती। यज्ञ के सम्बन्ध में परिधि का अर्थ यज्ञ की वह मेखला है, जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर बनी होती है। वर्तमान में तीन ही मेखला बनायी जाती है। वस्तुतः यह मन्त्र आन्तरिक यज्ञपरक है। उसी पक्ष में ७ परिधियों तथा २१ मेखलाओं की संगति इस प्रकार लगती है-

पुरुष ही यज्ञ है - छान्दोग्य उपनिषद कहती है कि -

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि
चतुर्विंशति वर्षाणि तत् प्रातः सवनम्।
यानि चतुश्चत्वारिंशद् वर्षाणि तन्माध्यन्दिनं सवनम्।
यान्यष्टाचत्त्वांरिंशद् वर्षाणि तृतीयं सवनम्।

(छान्दो.उप.३/१५)

अर्थात् यह मानव जीवन ही यज्ञ है। इसके तीन सवन हैं।

१) प्रातः सवन– यह २४ वर्ष तक होता है। इसका सम्बन्ध २४ अक्षरोंवाली गायत्री से है। इस प्रकार यह प्रातः सवन गायत्र सवन है।

२) माध्यन्दिन सवन– यह ४४ वर्ष का हैं। इसका सम्बन्ध ४४ अक्षरोंवाले त्रिष्टुप् छन्द से है।

३) तृतीय सवन – यह ४८ वर्षों का सवन होता है। इसका सम्बन्ध ४८ अक्षरोवालें जगती छन्द से है। यज्ञ के भी तीन सवन होते है।

इस प्रकार उपनिषद्कार ने सवनों का सम्बन्ध मानव जीवन से कहकर सम्पूर्ण मानव जीवन को ही यज्ञ कह दिया है। इसका यही भाव है कि सम्पूर्ण मानव जीवन यज्ञमय बना रहे, राक्षसी न बन जाए। अब देखना है किस मानवजीवन की सात परिधियां तथा इक्कीस समिधायें क्या हैं?

सात परिधियां –

परिधि 'परकोटे' को कहते हैं, जिससे कोई भी वस्तु घिरी रहती है। मानव जीवन की भी सात परिधियां हैं। अन्यत्र उन्हें ही सप्तमर्यादा भी कहा गया है। वेद मन्त्र इस प्रकार है–

सप्तमर्यादा कवयस्ततक्षुस्तासामेकाभिदभ्यं
हुरो अगात्। (ऋ.१०/५/६)

अर्थात् मानव जीवन की सात मर्यादाएं हैं। इनमें से एक को भी तोडने पर व्यक्ति पाप का भागी होता है। निरुक्त में आचार्य यास्क ने यह सात मर्यादाएं इस प्रकार गिनायी हैं – १) चोरी, २) परस्त्रीगमन, ३) ब्रह्महत्या, ४) भ्रूणहत्या, ५) सुरापान, ६) बुरे कार्य को बार–बार करना, ७) किसी पाप को छिपाने में मिथ्या बोलना।

यह ठीक ही है कि व्यक्ति को जीवन में इन मर्यादाओं का पालन करना चाहिए। अन्यथा उसे पाप लगेगा। इनकी विशेष व्याख्या यहाँ नहीं की जा रही। अमर्यादित जीवन निश्चित रूप में पाप का ही जनक है। मर्यादा नियम/नियमित या मर्यादित जीवन ही श्रेष्ठ है, अमर्यादित उच्छृङ्खला नहीं।

*** इक्कीस समिधाएं** –

'सम्यक् इन्धन्ते इति समिधः।' भली प्रकार जलनेवाले काष्ठ को भी समिधा कहते है। यह यज्ञ का पारिभाषिक शब्द है। चूल्हे में जलनेवाली लकडी को समिधा नहीं कहेंगें। यज्ञीय समिधा की कुछ विशेषताएं होती हैं। यथा १) वह पूर्णतः स्वच्छ होती है। २) उसमें कीडा लगा नहीं होता। ३) उसका परिमाण भी मर्यादित होता है। बहुत मोटी लकडी समिधा नहीं कहलाएगी। ४) ये समिधाएं ही यज्ञाग्नि को प्रदीप्त करती हैं। इनसे ही यज्ञाग्नि बढती हैं। ५) प्रत्येक वृक्ष की लकडी यज्ञ में नहीं डाली जाती। पीपल, बेल, गुलर, आम आदि की ही समिधाएं होती हैं। नीम तथा शीसम आदि की नहीं।

*** मानव जीवन की इक्कीस समिधाएं** –

जिस प्रकार यज्ञ का आधार समिधाएं हैं, उसी प्रकार मानव शरीर का आधार शरीर की सप्त धातुएं हैं। ये धातु इस प्रकार है– रस, रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, वीर्य, ओज। इन सात धातुओं पर भी शरीर टिका हुआ हैं। भोजन के द्वारा इनका भी निर्माण क्रमशः होता रहता है। इनके द्वारा ही जीवन यज्ञ प्रदीप्त होता है, वृद्धि को प्राप्त करता है। **'सम्यक् इन्धते।'** यदि इनमें से एक भी कम हो जायेगी तो जीवन यज्ञ की ज्योति बुछ जायेगी, प्रदीप्त नही होगी। लोक में भी रोगी व्यक्ति को देखकर कहते हैं कि, तेरा चेहरा बुझा–बुझा सा क्यों रहता है?

इन सातों धातुओं की वे ही विशेषताएं है जो कि यज्ञीय समिधाओं की है।

१) इन्हें शुद्ध रखने के लिए व्यक्ति को अपने भोजन पर नियन्त्रण करना होगा, क्योंकि भोजन से ही इनका निर्माण होता है। भोजन अच्छा, शरीर को पुष्ट करनेवाला होना चाहिए। न कि रुखा–सूखा, दुर्गन्धित, गला–सडा। उससे तो ये धातु भी उसी प्रकार की बनेंगी, जिससे शरीर रोगी हो जायेगा।

२) जिस प्रकार अच्छी प्रकार जलनेवाली भी प्रत्येक लकडी यज्ञ के लिए उपयुक्त नहीं है, उसी प्रकार शरीर की वृद्धि करनेवाला प्रत्येक पदार्थ भी खाने योग्य नहीं होता। इसे ऐसे समझें– शरीर तो अनेक पदार्थों के

खाने से पुष्ट हो सकता है। मांसाहारियों का शरीर अधिक मांसल होता है। क्योंकि-**मांस मांसेन वर्धते।** मांस के द्वारा ही मांस बढता है। किन्तु मांस खाने से विचार तथा स्वभाव तो हिंसक बन जाते हैं। वह तमोगुणी भोजन है। अतः व्यक्ति में तमोगुण = पशुत्व की ही वृद्धि करता है। इसी प्रकार रजोगुणी भोजन रजोगुण की वृद्धि करेगा तथा सात्विक भोजन से शरीर की रस-रक्त आदि धातुएं भी सात्विक ही बनेंगी। जिससे जीवन भी यज्ञ की भांति सात्विक तथा शुद्ध रहेगा, अन्यथा वधशाला की भांति बन जायेगा, न कि यज्ञशाला! मांसाहारियों का जीवन वधशाला ही है। जीवन में पता नहीं कितने निरीह, निर्दोष प्राणियों का वध इनके लिए किया जाता है। मांसाहारियों का पेट भी उनकी कबर बनता है।

३) यज्ञीय समिधाओं में घुण, कीडा आदि लगा हुआ नहीं होना चाहिए, तभी वे यज्ञ के लिए उपयुक्त हैं। इसी प्रकार रस-रक्त आदि शरीर की ये सातों धातुएं भी शुद्ध-दोष रहित होनी चाहिए। तभी जीवनयज्ञ ठीक चलेगा, अन्यथा नहीं। यदि शरीर में बननेवाला रस या रक्त ही दूषित हो जाए, तो पूरा शरीर ही दूषित हो जायेगा। शरीर की ये सातों धातु वात-पित्त तथा कफ से संयुक्त रहती हैं। शरीर में वात, पित्त तथा कफ तीनों ही सर्वथा विद्यमान रहते हैं। किन्तु यदि ये कुपित होकर विषम हो जाएं, किसी एक ही तत्त्व की प्रधानता या न्यूनता हो जाए, तो शरीर रोगी जाएगा। इसलिए इनका सम रहना आवश्यक है। इस प्रकार ये २१ तत्त्व ही जीवनरूपी यज्ञ की समिधाएं है, जिनके आधार पर शरीर वृद्धि को प्राप्त करता है, यज्ञाग्नि के समान दैदीप्यमान होता है।

देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नत् पुरुषं पशुम्। -

देवों ने इस जीवन यज्ञ का विस्तार करते हुए अपने हृदय में पुरुष पशु को बांधा। कौन है यह पुरुष पशु? वही पुरुष जिसको योगदर्शनकार ने 'क्लेश-कर्म-विपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेषः ईश्वरः।'(योगसूत्र-१-२४) कहा हैं। ईश्वर भी ब्रह्माण्डरुपी पुरी में तथा मानव शरीर रुपी पुरी में निवास करने के कारण पुरुष है, किन्तु यह हमारे जैसा लौकिक जन्म, मरण के बन्धन में पडनेवाला सामान्य पुरुष नहीं है, अपितु अजर, अमर, अविनाशी आदि विशेषणों से युक्त पुरुष विशेष है तथा **'पश्यति जानाति सर्वं संसारं संसारस्थान् जीवान् वेत्ति पशुः।'** वह पुरुष विशेष परमेश्वर समस्त ब्रह्माण्ड को, सभी जीवों को तथा उनके कर्मों के देखने के कारण पुरुषपदवाच्य है। देवगण इस पुरुष पशु को अपने हृदय में बांधते हैं। कब? **'यज्ञं तन्वानाः।'** जीवन यज्ञ का विस्तार करते हुए तथा इसे समुह करते हुए! शुभ कर्मों एवं गुणों से जीवन को विस्तार प्रदान करते हुए ही देवगण अपने हृदय में परमेश्वर को बांधते है, स्थापित करते है।

यज्ञ का अर्थ सङ्गतिकरण भी है। परमेश्वर का सङ्गतिकरण अपने हृदय में करते हुए देवजन परमेश्वर को अपने हृदय में स्थापित करते है, यह अर्थ भी 'यज्ञ तन्वानाः' का है। यज्ञकुण्ड भी नीचे से बहुत छोटा होता है, किन्तु उपर को आते-आते ही विस्तृत होता चला जाता है। इसी प्रकार मानव जीवन भी एक अबाध शिशु के रुप में भी प्रारम्भ होता है, किन्तु वही विस्तृत होते-होते समष्टि भाव को धारण कर लेता है। विस्तृत होकर यज्ञ जनता को प्रकाश देता हैं, सुगन्ध देता है। शान्ति देता है, पवित्रता देता है।

इसी प्रकार मानव भी अपने जीवन यज्ञ का विस्तार करते हुए संसार को प्रकाश, शान्ति, सुगन्ध तथा पवित्रता आदि प्रदान करें। यही हैं जीवनयज्ञ का विस्तार! इस प्रकार का यज्ञ स्वार्थ के लिए न होकर परमार्थ के लिए होता है। वेद में इसे विश्वतोधार यज्ञ कहा हैं। अर्थात् जिसकी धाराएं चारों ओर से गिर रही है। ऐसा व्यक्ति समष्टि के लिए **'सर्वभूतहिते रतः।'** की भावना से ही अपने जीवन यज्ञ का विस्तार करके अपने हृदय में परमेश्वररुपी पुरुष पशु को बांधते हैं, यह आशय है।

- बी-२६६,
सरस्वती विहार, दिल्ली
दूरभाष-९८६८१४४३१७

* * *

आजादी का अमृत महोत्सव

- प्रो.डॉ.सारस्वत मोहन मनीषी(मो.९८१०८३५३३५)

वीरों ने खुद को फांसी लटकाया है।
बजा हथकडी झूम झूमकर गाया है।
जालियांवाला बाग न कभी भुलाया है।
पानी और दूध का कर्ज चुकाया है।
सांस सांस आजादी शंख बजाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

बहरे कानों को बम फोड सुनाया है।
निज घर फूंक तमाशा सदा दिखाया है।
अपनी चिडियाओं को बाज बनाया है।
वीर प्रसूता भारत मां दिखलाया है।
सींचा खेत लहू से तब फल पाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

काले पानी को जब लाल बनाया है।
नहीं पसीना खुलकर रक्त बहाया है।
कोल्हू चला चलाकर खून जलाया है।
बर्फ सिल्लियों पर तन को पिघलाया है।
दीपक बाती का निज खून पिलाया है।
एक जन्म में दो जीवन दुख पाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

सात लाख बत्तिस हजार कुर्बान हुए।
छोटे-छोटे बच्चे तक बलिदान हुए।
बने नींव के पत्थर वही महान हुए।
अभिशापों के बीच बढे वरदान हुए।
पकड-पकड गर्दन को शीश बजाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

पीडा झेली पेचिश और मरोडों की।
देह हुई शरणागत कातिल कोडों की।
मानव होकर जून मिली थी घोडों की।
हड्डी-हड्डी चटकी तन मन जोडों की।
बिना खिले जब कलियों को चटकाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

राष्ट्र यज्ञ में तन मन की समिधा डाली।
लहू दिया घृत सम जीवन घट कर खाली।
गोरों के छोरों की नहीं सही गाली।
नीचे नहीं गिराई पूजन की थाली।
रात दिवस देखी न धूप या छाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

भारत से लन्दन तक गये क्रान्तिकारी।
दुष्टों के कंठों पर चला गये आरी।
कहीं प्रकट हो जाते थे इच्छा धारी।
चर्म-चक्षुओं से फूटी थी चिंगारी।
चुन-चुनकर बदला लेकर टपकाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

किस किस का लें नाम असंख्य तारे हैं।
वे जागे तो जागे भाग्य हमारे हैं।
सबके सब स्वतंत्रता के हरकारे हैं।
अँधियारी दुनिया के शुभ उजियारे हैं।
सिर बोये स्वतंत्रता बाग लगाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

कहीं गर्म दल कहीं नर्म दल के उत्पल।
दोनों में ही खिले सहस्रदल या शतदल।
राष्ट्र-राष्ट्र की माला जपते थे पल पल।
जागा सारा देश तभी तो निकला हल
मगर माउजर का अवदान सवाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

पूरा देश जगाया हम सब जाग गये।
चोर लुटेरे डाकू डर कर भाग गये।
भाग्यवान हम बने सभी निरभाग गये।
पूंछ और फण कुचले तब ही नाग गये।
कविर्मनीषी की ही यह सब माया है।
उसने ही तो यह शुभ नि दिखलाया है।
तब जाकर यह अमृत महोत्सव आया है।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम के आद्य नेता

हुतात्मा भाई श्यामलालजी

- स्मृतिशेष डॉ.कुशलदेव शास्त्री

''हैदराबाद रियासत में वह हिंदू-मुस्लिम दंगों का काल था। हिंदुओं के दिलो-दिमाग में असंतोष की ज्वाला धधक रही थी। निजाम सत्ता का निरंतर चल रहा दमनचक्र अब उनके लिए बिलकुल असह्य होता जा रहा था। फलतः इस दमन के विरुद्ध हिंदुओं ने विद्रोह शुरु कर दिया। दौर्भाग्य से इस विद्रोह को सांप्रदायिक दंगों का रुप-रंग मिलता चला गया, और उसकी साम्प्रदायिक में परिणति होने लगी। पर इसके लिए भी धैर्य और कष्ट सहन करने की मानसिक तैयारी की आवश्यकता थी। ऐसी स्थिति में दमनचक्र पर प्रतिबंध लगाने की विश्लेषणात्मक चर्चा करने में लोग तल्लीन थे। वे उनका नेतृत्त्व करनेवालों को पूर्ण सहयोग देने के लिए बिलकुल तैयार एवं उत्सुक थे। ऐसे समय में आर्य समाज ने इन असंतुष्ट-क्षुब्ध लोगों का नेतृत्त्व किया। फलस्वरुप निजाम सरकार की वक्रदृष्टि आर्य समाज के अनेक कार्यकर्त्ताओं की ओर घुमने लगी। ये सभी आर्य कार्यकर्त्ता सरकारी रोष के शिकार हुए, फिर भी उनका प्रतिकारात्मक संघर्ष चालू ही था। आर्य समाज यह एक विशुद्ध-निर्मल- ईमानदार-प्रामाणिक संस्था थी।'' इन शब्दों में हैदराबाद मुक्ति संग्राम के सेनानी स्वामी रामानन्द तीर्थ जी ने अपनी आत्मकथा - **'हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्रामाच्या आठवणी'** में आर्य समाज का गौरव गान किया है, हैदराबाद राज्य में आर्य समाज को जो यह प्रतिष्ठा मिली, उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका भाई श्यामलाल जी वकील की रही है।

हैदराबाद राज्य के इतिहास में राम-लक्ष्मण की जोडी के नाम से प्रसिद्ध पं.बन्सीलाल जी वकील और भाई श्यामलाल जी वकील से कौन अपरिचित है? जिन्होंने उस समय आर्य समाज की पताका को उन्नत किया, जिस समय निजाम राज्य उसे गिराने में संलग्न था। आर्य समाज बनाने की आज्ञा न थी, हवन करना वर्जित था, उपदेश देने और सुननेवालों के लिये हथकडियाँ तैयार रहती थी, उस समय इन दोनों सहोदर बन्धुओं ने शूरवीरता के साथ हैदराबाद राज्य में जन-जागृति का कार्य किया। महाराष्ट्र के प्रख्यात समीक्षक प्रा.नरहर कुरुंदकर जी अपने एक लेख में श्यामलाल जी का निम्नांकित शब्दों में कृतज्ञता के साथ स्मरण करते हैं -

'स्वर्गीय श्यामलालजी हमारे मुक्ति आंदोलन के आद्य नेताओं में से एक है। उनका स्मरण किसी हाल में नहीं भुलाया जा सकता,..... दस वर्ष की आयु से श्यामलालजी की कहानी, हमारे श्रद्धेय हुतात्माओं की कहानी होने के कारण बडी श्रद्धा से सुनता व कहता आया हूं। स्टेट कांग्रेस की स्थापना से भी पहले १९३०' से लेकर आर्य समाज जन-जागृति पर जोर दे रहा था और संघर्ष के लिये लोगों को प्रेरित कर रहा था। जिला बीदर में यह काम करनेवालों में अग्रभागी थे हुतात्मा श्यामलाल और उनके साथी। मराठवाडा विभाग में इस बलिदानी परम्परा के अग्रदूत हुतात्मा श्यामलालजी हैं। इस शहीद के खून ने हमारी सम्मानपूर्वक जीने की इच्छा को मजबूत किया।''

वास्तव में भाई श्यामलाल जी का व्यक्तित्त्व बहुगुणसम्पन्न था, वे आजीवन ब्रह्मचारी रहे। भाई जी में संगठन करने की अद्‌भुत क्षमता थी। उनके जिधर भी कदम बढते, उधर ही एक संगठन तैय्यार होता। उन्होंने अखाडे खोले, जिसमें नौजवानों ने शारीरिक शक्ति की उपासना की। शास्त्रार्थ एवं शुद्धि के माध्यम से बिछुडों को गले लगाने में भी आप सर्वाग्रणी रहे। आपने जातीयता निर्मूलन के लिये सहभोज व अन्तर्जातीय विवाह की प्रेरणा अनेक युवकों को दी। भाई श्यामलालजी दलितोद्धार के कार्य में भी सबसे आगे नजर आते थे। उनका घर रात्रि में दलितों की निःशुल्क पाठशाला बन जाता था। स्त्री-जाति के उद्धार के लिये भी वे सतत संलग्न रहे। उन्होंने उदगीर में **'आर्य महिला सभा'** की स्थापना की

थी। स्त्री शिक्षा के वे कट्टर समर्थक थे, फलस्वरुप उनका घर निःशुल्क कन्या पाठशाला के रुप में परिवर्तित हो गया था। वे सत्यवादी वकील थे, सदैव अत्याचारों से सन्त्रस्त निर्धन निहत्थों की ही वकालत करते रहे। महामारियों में पीडित जनता के वे सर्वप्रिय वैद्य थे। आयुर्वेद का उन्हें अच्छा ज्ञान था। हिन्दू-मुस्लिम, दलित-सवर्ण उनके दिये हुये निर्णय को अन्तिम मानते थे। वे वैर-वैमनस्य की धधकती अग्नि में कुशलता व निर्भीकता के साथ शान्ति प्रस्थापित करते थे। कट्टर आर्य समाजी व वैदिक धर्म के प्रचारक होने के बावजूद भी हिन्दू-मुस्लिम, जैन-बौद्ध, दलित-सवर्ण सभी उनके सामने श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते थे। इसका सबसे बडा कारण यही था कि वे कट्टर मानवतावादी थे। उन्होंने साम्प्रदायिक व जातिवाद की भावनाओं से ऊपर उठकर सदेव मित्रता की दृष्टि से मानवमात्र की सेवा की, इसलिये वे सबके मसीहा कहलाये। उनमें इन्सानियता का भाव सबसे प्रबल रहा। वे महामानव थे। सन् १९२१ से १९३८ तक का यह एक ऐसा काल था, जब जागृति के प्रत्येक मोर्चे पर भाई श्यामालाल जी खडे नजर आते थे।

भाई श्यामलालजी का जन्म १९०३ ई.में बीदर जिले के अन्तर्गत भालकी गांव में ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हलीखेड में हुई तथा शेष शिक्षा गुलबर्गा में सम्पन्न हुई। १९२५ में आप वकील बनें और उदगीर आपकी कर्मभूमि हो गई। २३ दिसम्बर १९२६ को आर्य समाज के वीर संन्यासी, भारत के महान् राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हुआ। **'अग्निना अग्निः समिध्यते।'** इसी बलिदानी व्यक्तित्त्व ने भाई श्यामलालजी जी को उदगीर में **'आर्य समाज'** स्थापना करने की प्रेरणा दी। भाई श्यामलालजी की रचनात्मक जन जागृति की गतिविधियों को देखकर रजाकार बौखला उठे और भाई जी को मारने के षड्यन्त्र शुरु हो गये। दो बार आपके घर पर आक्रमण किया गया, जो कि विफल रहा। होली के अवसर पर जब उदगीर मे आर्य समाज का जुलूस निकला, तब दो रजाकारों ने आप पर आक्रमण किया, परन्तु आप बाल-बाल बच गये। १९२८ में उदगीर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव हुआ, तभी से पुलिस आपके पीछे लग गयी, पुलिस ने उन्हें डाके से लेकर कत्ल तक बीसियों झूठे अभियोग में फंसाकर आतंकित करने व उनकी वकालत की डिग्री जब्त करने की कोशिश की, पर सब कुछ विफल हुआ। वे तिलमात्र भी विचलित न हुये।

४ अप्रैल १९३१ ई. को **'आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य'** की स्थापना हुई। हैदराबाद हाईकोर्ट के जज श्रीयुत केशवराव कोरटकर प्रधान बनें और पं.श्यामलालजी वकील उपप्रधान चुने गए। १९३३ में आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य का द्वितीय निर्वाचन हुआ। जिसमें बैरिस्टर विनायकरावजी विद्यालंकार प्रधान और मन्त्री पं.भाई श्यामलालजी वकील चुने गये। उदगीर आर्य समाज के मन्त्री पद से आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के मन्त्री पद की यह यात्रा भाई श्यामलालजी की विलक्षण प्रतिभा एवं संगठन चातुर्य व निर्भीक व्यक्तित्त्व की परिचायक थी। उस समय आर्य समाज के पद सही अर्थों में कांटों के ताज थे। आर्य समाज का पदाधिकारी बनना, अपनी मौत को निमन्त्रण देने के बराबर था, पर भाई जी तो उन व्यक्तियों में से जिनका एक मात्र तराना (गीत) होता है -

सर से कफन लपेटे। कातिल को ढूंढते हैं।

शहीदों की पंक्ति में ला खडा करनेवाला

अमरत्व का वह क्षण धीरे-धीरे पास आने लगा।

आर्य कांग्रेस कार्यकारिणी सभा(सोलापुर-कैंप) के मन्त्री श्री शिवचन्द्र जी (जो ३ मार्च १९४२ को रजाकारों के आक्रमण से शहीद हो गये) ने निजाम सत्ता व अत्याचारों के सम्बन्ध में १६-१७ घटना स्थलों का दौरा कर जो रिपोर्ट तैयार की, वह दिल को दहला देनेवाली है। इस रिपोर्ट के परिशिष्ट नं.३ पर भाई श्यामलालजी से सम्बन्धित अनेक शासकीय आर्डरों की प्रतिलिपियां प्रकाशित की गई हैं, जिन में से कुल दो प्रतियां इसलिये दी जा रही हैं कि पाठक इस बात का अनुमान लगा सकें कि भाई श्यामलालजी पर सरकार की कितनी कठोर दृष्टि थी।

अ) ''पं.श्यामलालजी वकील जिला उदगीर से निलंगा तालुका अन्तर्गत कासार शिरसी के सब इन्सपैक्टर पुलिस सय्यद मुहम्मद अहमद ने पांच आर्दी वैहशत १३४२ फस्ली को निम्न प्रश्नों के उत्तर मांगे –
१) तुमने अपना उत्सव किसकी आज्ञा से मनाया है? २) क्या तुम्हारे पास कोई आज्ञा पत्र है? यदि हैं तो उसकी लिपि भेजें। ३) तुम्हारे साथ के दो लडके कौन थे? उनके नाम और पूरे पते हमारे पास भेजे? ४) यदि उत्सव के लिये तुमने आज्ञा प्राप्त की थी, तो लिखो कि वह किससे प्राप्त की थी।''

***

ब) कलेक्टर का सब डिविजनल आफिसर के नाम गुप्त पत्र (२०-८-३४) संख्या ७४, १४ मेहर फसली(१३४३) की लिपि-

''निजाम साहब की प्रजा'' के कुछ लोगों ने हिन्दू महासभा के अधिवेशन में भाग लिया है। राज्य की आज्ञाओं के अनुसार सूचित किया जाना चाहिये कि यदि कोई व्यक्ति इस प्रकार की राजनीतिक मिटिंगों में जायेगा, तो उसके साथ कडा सलूक किया जायेगा। हल्लीखेड के श्यामलाल वकील तथा उदगीर के बन्सीलाल वकील, जिन्होंने उपर्युक्त अधिवेशन में भाग लिया है। आपकी तहसील के हैं और उनके साथ लगभग ४० मरहटे भी अधिवेशन में गए थे। उन्हें सरकारी हुक्म की सूचना देकर उनके हस्ताक्षर प्राप्त किया जाय।''

१९३६ ई. में माणिकनगर के मेले पर आयोजित आर्य समाज के नगर कीर्तन में जब श्यामलाल जी शामिल हुये तब पुलिस की उपस्थिति में रजाकारों ने उनकी पीठ पर छुरे से प्रहार किया। अभी दूसरा बार श्यामलाल जी पर पडनेवाला ही था कि बाबूप्रसाद आर्य नामक युवक बीच में आ कूद पडा और उसने जटायु की तरह क्षत-विक्षत होकर भाई पं.श्यामलालजी वकील की रक्षा की।

'समझा है खेल शहीदों ने,अपना सर्वस्व लुटा देना।
वीरों का यह मनोरंजन, अपना अस्तित्व मिटा देना।।'

सन् १९३८ विजयदशमी पर्व पर उदगीर में आर्य वीरों का जलूस निकला। अभी जुलूस कुछ दूर ही गया था कि लाठी उठाये अत्याचारी जुलूस पर टूट पडे। दंगा समाप्त होने के पश्चात् सायं निरपराध भाई श्यामलालजी को गिरफ्तार कर बीदर जेल भेज दिया गया। भाई श्यामलालजी इस जेल से सजीव बाहर न आ सके। बस अकस्मात् १७ दिसम्बर १९३८ को यह दुःखद समाचार बिजली की तरह फैला गया कि, 'बीदर जेल में भाई श्यामलालजी का स्वर्गवास हो गया।' कहा जाता है कि दूध में उन्हें विष दिया गया। जिसके कारण उनकी मृत्यू हो गयी। श्याम भाई का शव परीक्षा करनेवाले सोलापुर के प्रसिद्ध डाक्टर श्री निलकण्ठराव एल.एस., के.एल.ओ.(बियाना) ने लिखा था- **''पेट सिकुडकर पीठ से जा लगा था, हाथ के नाखून काले पड गये थे, दाई टांग के गट्टे के पास आध इंज घेरे का एक घाव था। बाई टांग पर भी एक लम्बा घाव था। अतः यह निःसंशय कहा जा सकता है कि उनकी मौत जेल के कठोर दुर्व्यवहार के कारण हुई।''**

इस प्रकार पं.भाई श्यामलालजी वकील हैदराबाद राज्य की आजादी के लिये अन्तिम श्वास तक संघर्ष करते हुए शहीदहो गये थे। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में शहीद भगतसिंह के बलिदान ने जो जन जागृति उत्पन्न की, वही जन-जागृति हैदराबाद मुक्तिसंग्राम में भाई श्यामलालजी के बलिदान से हुई। अस्ताचल की ओर जाते हुए जैसे सूर्य भगवान् अपनी किरणों से मेघों को रंग देता है, ठीक उसी प्रकार भाई श्यामलाल जी के तेजस्वी व्यक्तित्व ने निजाम राज्य की जनता को प्रभावित किया। इस क्रान्तिकारी आर्यवीरों को शत्-शत् प्रणाम। उनका व्यक्तित्त्व हमें सदैव हर अन्याय-अन्धकार से टकराने की प्रेरणा देता रहेगा।

(वैदिक गर्जना- पं.भाई श्यामलाल जन्मशताब्दी विशेषाङ्क - नवम्बर-दिसम्बर २००३)

***

जयन्तीदिवस-२० फरवरी २०२३ पर विशेष -

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

- पं.नन्दलाल निर्भय-सिद्धान्ताचार्य

देश, धर्म के लिए वीर जो, हँसकर होते हैं कुर्बान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनियां गाती है गुणगान।।

उन्हीं महावीरों में से थे, श्रद्धानंद गुणों की खान।
देव पुरुष को पुण्य-पाप का, भले-बुरे का था सब ज्ञान।।
स्वामी दयानंद योगी का, शिष्य निराला श्रद्धानन्द।
मानवता का तपःपूत वह, गाता था नित वैदिक छन्द।।
मानव जीवन सर्वोत्तम है, उसको थी पूरी पहचान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनिया गाती है गुणगान।।१।।

भारत था परतंत्र, यहां था पापी अंग्रेलों का राज।
मानवता के हत्यारों के, सिर पर था भारत का ताज।।
गौ हत्या करते थे पापी, व्याकुल थे भारत के लोग।
पनप गई थी यहां अविद्या, जाति-पाति का था तब रोग।।
देश धर्म को हित अनहित का, नहीं किसी को भी था ज्ञान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनियां गाती है गुणगान।।२।।

कलह फूट का जोर यहां था, गोरे करते थे अति पाप।
निर्बल, निर्धन थे सब व्याकुल, झेल रहे थे जो सन्ताप।।
यवन और ईसाई पापी, चला रहे थे अपने दाव।
मतांतरण कराते ये खल, चढा हुआ था भारी चाव।।
फौज विधर्मी बढा रहे थे, व्याकुल थी भारत सन्तान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनियां गाती है गुणगान।।३।।

स्वामी दयानंद का चेला, गर्जा श्रद्धानन्द बलवान।
'अंग्रेजों, भारत से भागों', निर्भय किया बडा ऐलान।।
'रौलट एक्ट का किया सामना', दिल्ली में गर्जा रणधीर।
भारतवासी जाग गए हैं, देंगे तुम्हें पकड कर चीर।।
संगीनों के सम्मुख स्वामी, खडा हुआ था सीना तान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनिया गाती है गुणगान।।४।।

शुद्धि चक्र चला स्वामी ने, शुद्ध किए ये लाखों लोग।
उंच नीच का, भेदभाव का, मिटा दिया था घातक रोग।
अब्दुल रसीद विधर्मी पापी, स्वामीजी के आया पास।
मुझे सन्त जी! शुद्ध करो तुम, मैं आया हूँ करके आस।।
स्वामी जी ने पास बिठाया, उसको अच्छा मानव जान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनियां गाती है गुणगान।।५।।

मौका पाकर उस जालिम ने, फौरन पिस्टल ली थी तान।
स्वामी जी को गोली मारी, निकला दगाबाज हैवान।।
आर्य कुमारों! कदम बढाओ, निर्भय करो वेद प्रचार।
श्रद्धानन्द, लाजपत बनकर, करो धर्म की नौका पार।।
'नन्दलाल' तुम भूल न जाना, श्रद्धानन्द जी का बलिदान।
हो जाते हैं अमर बहादुर, दुनियां गाती है गुणगान।।६।।

- (कवि)आर्य सदन, ग्राम बहीन,
जनपद-पलवल (हरि.)
चलभाष-९८१३८४५७७४

कर्मयोगी डॉ.ब्रह्ममुनिजी अभिनन्दन समारोह

स्वामी श्रद्धानंदजी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, डॉ.वाघमारे जी, प्रकाश आर्य, विनय आर्य, डॉ.वेदपाल जी, ओममुनिजी आदियों की उपस्थिति में ५१ लाख रू. की राशि भेट

अथक संघर्षमय जीवन, अपूर्व दूरदर्शिता एवं समर्पण भाव से वैदिक सिद्धांतों के प्रचार- प्रसार में तन, मन, धन से योगदान देनेवाले आर्य जगत् के तपस्वी कर्मठ समाजसेवी व्यक्तित्व डॉ. श्री ब्रह्ममुनि जी का भव्य अभिनंदन समारोह दि. १७ अप्रैल २०२२ को अपूर्व उत्साह के साथ संपन्न हुआ। इस भव्य समारोह में सन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, मनीषी, आर्य नेता तथा कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

महाराष्ट्र के परली वैजनाथ (जि.बीड) स्थित श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम में आयोजित इस भव्य समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध विचारविद् एवं पूर्व राज्यसभा सदस्य श्री जे.एम. वाघमारे जी ने की तथा प्रमुख अतिथि के रूप में पूर्व केंद्रीय राज्यमन्त्री तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ.श्री सत्यपाल सिंह जी उपस्थित रहे। इस विशाल समारोह में पूज्य श्री ब्रह्ममुनि जी का ५१ लाख रुपए की गौरव निधि, सम्मानपत्र गौरव चिह्न प्रदान कर तथा पुष्पमाला पहनाकर अभिनन्दन किया गया ! उपस्थित जनसमुदाय ने पुष्पवृष्टि करते हुए मुनिजी के लिए 'जीवेत शरद शतम्!' की कामना की ।

समारोह में आशीर्वाददाता के रूप में १०५ वर्षीय तपस्वी सन्यासी पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती(हरिश्चन्द्र गुरुजी) की विशेष उपस्थिति रही। इस ऐतिहासिक समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री प्रकाशजी आर्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय जी आर्य, वैदिक विद्वान तथा परोपकारिणी सभा के संरक्षक श्री वेदपालजी, ट्रस्टी श्री ओममुनिजी, आर्य भजनोपदेशक पंडित श्री दिनेश जी 'पथिक' एवं पूर्व विधायक श्री शिवाजीराव पाटिल आदि उपस्थित थे।

डॉ.सत्यपालसिंहजी –

समारोह के प्रमुख अतिथि पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री डॉ.श्री सत्यपाल सिंहजी के विस्तृत ओजस्वी भाषण से उपस्थित श्रोताओं में नया उत्साह संचारित हुआ। आरम्भ में १०५ वर्षीय वयोवृद्ध स्वामी श्रद्धानन्दजी के प्रति आदर प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि मैं जहां भी गया हूं, वहां के १०० वर्ष अधिक आयुवालों के आशीर्वाद लेता हूं और उन चित्रों को समाज माध्यमों में प्रसारित करता हूं। गौरवमूर्ति श्री ब्रह्ममुनिजी का अभिनन्दन करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे कर्मठ आर्यजनों का सम्मान करने से समाज में नवचेतना का संचार होता है। सम्प्रति विश्व में दुर्गुण, दुःख, अकाल, भय, भूखमरी व कोरोना जैसी भयंकर बिमारियाँ बढ रही है। यदि इन सभी रोगों से बचना हो, तो अपने आसपडोस के अच्छे व्यक्तियों का गौरव करना सीखों! इस दृष्टि से महाराष्ट्र की आर्य प्रतिनिधि सभा अपने त्यागी व तपस्वी आर्यनेता का गौरव कर रही है, यह अतिहर्ष एवं प्रेरणा का विषय है। डॉ. ब्रह्ममुनि जी जैसे त्यागी एवं तपस्वी महात्मा का सम्मान करना मानों आर्योचित सद्गुणों व सत्कर्मों का गौरव है । श्रीमुनिजी ने महर्षि दयानंद एवं आर्य समाज के विचारों को समाज में फैलाने हेतु अपना सारा जीवन लगाया है। अच्छे लोगों की पूजा नही होती और बुरे लोगों का सम्मान होगा, तो समाज में बुरी प्रथाएं शुरु होगी। गौरवमूर्ति डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी जीवनभर वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार जीवनयापन करते रहे। असंख्य कष्टों को सहते हुए उन्होंने

व्यक्तित्त्व का निर्माण किया और आर्य समाज के लिए अपना सर्वस्व दिया। सत्कर्म व ज्ञानदान में सदैव आगे रहे। अच्छे व्यक्तियों को नानाविध कठिनाइयों से गुजरना पडता है। इस अवसर पर आपने निम्न पंक्तियां गुनगुनाई–

जो जीवनभर अन्धियारों से लडते हैं,
दुनियां उनके चरणों में दीप जलाती है।
फूलों जैसी झरने की जिनकी तैयारी है,
खुशबू उनके माथे पर तिलक लगाती है।
जिन्दगी बनें ऐसी, खूशबू फैले चन्दन जैसी।।

उन्होनें महर्षि दयानन्द के विषय में कहा – महर्षि दयानंद के वैदिक विचारों में शाश्वत सुख एवं वैश्विक शांति का मूलमंत्र छिपा हुआ है। यदि दुनिया घर, परिवार, समाज व राष्ट्र में सुख–शान्ति चाहती है या कोई धरती पर स्वर्ग बनाना चाहती है, या कोई धरती पर स्वर्ग बनाना चाहता हो, तो उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों का अनुसरण करना होगा। स्वामीजी ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक की ऋषि परम्परा का निर्वहन किया है। इसलिए उन्होनें स्थापित किये 'आर्य समाज' के सिद्धान्तों पर हमें चलना होगा। आज सारी दुनिया परेशान है। बच्चे, युवा, प्रौढ, बूढे सभी आयुवाले दिशाहीन हो रहे हैं। समाज में बडे पैमाने पर अनैतिकता छा रही है। इन सभी का स्थायी समाधान कहीं पर है, तो वह 'आर्य समाज' के पास है। अज्ञान, अविद्या एवं अन्याय जैसे रोगों से मुक्ति मुक्ति पाने की मूलभूत औषधि आर्य समाज है । अतः आर्य समाज के साथ जुड़कर रहने में ही मानव मात्र का कल्याण निहित है। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर सर्वोन्नति का सत्पथ है 'आर्य समाज!' ऋषि ने कोई अपना नया मत या सम्प्रदाय नही चलाया। ईश्वर व सत्य वेदज्ञान का जो रास्ता है, वही उन्होंने पुनश्च बताया है। दूसरी कोई भी पुस्तक वेदज्ञान की बराबरी कर नहीं सकती। जिसने वैदिक सिद्धान्तों को जाना, ऋषि के 'सत्यार्थ प्रकाश' व अन्य ग्रन्थों को पढा, उसे दुनिया की कोई भी साम्प्रदायिक या अधार्मिक शक्ति बहका नहीं सकती।

अतः स्वाध्यायशील सज्जन ऋषि के ग्रन्थों को पढे और अन्यों को भी पढने हेतु प्रेरित करें। आज हमारे सम्मुख बच्चों के नवनिर्माण की समस्या भी खडी है। हर एक अभिभावक अपने बच्चों को बडा बनाना चाहता है। लेकिन इससे बढकर वे इन्हें अच्छा मानव बनाने का प्रयास करें, ताकि ये ही अच्छे बच्चे हमारे पदचिह्नों पर चलते हुए हमें आनन्द प्रदान करते रहेंगें और हमारी वृद्धावस्था में हमारी देखभाल करते रहेंगें। अच्छे इन्सान बनाने की फैक्ट्री और वर्कशॉप कहां पर है, तो वह है आर्य समाज! अतः अपने बच्चों को आर्य समाज के साथ जोंडे।

महर्षि दयानन्द के उपकारों की चर्चा करते हुए डॉ.सत्यपाल सिंहजी ने कहा कि – महर्षि दयानन्द का समग्र जीवन आदर्शों की खान है। यदि वे न होते, न जानें हम कहां होते? इसलिए हम सदैव ऋषि को याद करें। आज पूर्वोत्तर भारत, बंगाल तथा केरला में क्या हो रहा है? दयानन्द के सन्देश को भुलाने से ही राष्ट्र की दुर्दशा हो रही है। समस्या कोई भी हो, उसका स्थायी समाधान म.दयानन्द प्रतिपादित वैदिक विचारों से ही हो सकता है। जब किसी प्रकार का भय या परेशानी हो, तो महर्षि दयानन्द को याद करो, आर्य समाज के सिद्धान्तों व उसके नियमों को याद करों। जब किसी सवाल का उत्तर ढूंढना चाहो, तो **'सत्यार्थ प्रकाश'** खोलो। आपके सभी प्रश्नों का उत्तर मिलेगा। अपने विस्तृत सम्बोधन का समापन करते हुए डॉ.सत्यपाल सिंहजी ने निम्न पंक्तियां गुणगुणाई, जिनमें महर्षि दयानन्द के उपकारों का वर्णन निहित है –

पराई पीर में जलना, मरीजों की दवा होना,
अरे कोई जाने दयानन्द, धर्म में फिदा होना।
भंवर में किश्ती फंसती हो और नजर में मौत बसती है।
लगाकर वेद का चप्पू किनारे पार हो जाना।

श्री प्रकाशजी आर्य –

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश जी आर्य ने कहा –'मुनिजी जैसे ऊर्जावान् व्यक्तित्त्व का गौरव सही आर्यों में एक प्रेरक प्रंशसनीय

कार्य है। मैं उनके विषय में कहना कहां से प्रारम्भ करुं? जमीन से जुडकर आकाश तक स्पर्श करने जैसा मुनिजी का कार्य है। सभी एषणाओं से दूर उनका व्यक्तित्त्व हम सबके लिए सचमुच प्रेरणास्रोत है। अभावों के कारण सादगीपूर्ण जीवन बिताना एक अलग बात है, लेकिन सब कुछ होते हुए भी त्याग, समर्पण व दातृत्त्व के साथ आर्य समाज के नवनिर्माण में आगे बढते रहना, यह एक विशेष बात है। पू.श्री मुनिजी ज्ञानवृद्ध, आयुवृद्ध, धनवृद्ध, तपोवृद्ध आदि बातों के साक्षात् प्रतीक है। किसी से काम कराने से पहले वे स्वयं उस कार्य में जुट जाते हैं। छोटे से व्यक्ति को भी साथ लेकर वे कर्तव्यपथ पर आगे बढते हैं, यह उनकी विशेषता है। जब भी वे महाराष्ट्र से चलकर सभाओं की मिटिंगों के लिए दिल्ली पहुंचते, तब हमें महाराष्ट्र के स्वादिष्ट पदार्थों का प्यार से आस्वादन कराते। ऐसे विनम्रता, स्नेहशीलता, कर्मठता, प्रखर दूरदर्शितावाले आर्य व्यक्तित्त्व का सम्मान मानों उनमें विद्यमान उत्तमोत्तम गुणों का ही तो गौरव है। परमात्मा इन्हें लम्बी आयु व सुस्वास्थ्य प्रदान करें।

मुनिजी का तपस्वी जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। ज्ञान एवं कर्म का समन्वय स्थापित करते हुए तन, मन, धन से वे समाज के लिए वे एक कर्मयोगी की भांति जीवन जीते रहे। उनका आदर्श जीवन नव समाज की स्थापना के लिए सदैव दिशा देता रहेगा। गुरुकुल का निर्माण , प्रांतीय सभा के कार्यों को बढ़ाना एवं सार्वदेशिक सभा तक सभी को दिशानिर्देश देना आदि कार्यों में वे सदैव अग्रणी रहे।'

श्री विनयजी आर्य -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनयजी आर्य ने कहा - पूज्य डॉ.ब्रह्ममुनिजी ने आरम्भ से अब तक जमीन से जुडकर कार्य किया है। विगत २२ वर्षों से मेरा इनसे सीधा सम्पर्क है। सभी तरह की सुख-सुविधाओं को त्यागकर आपने आर्य सभा महाराष्ट्र को एक ऐसा नेतृत्त्व दिया, जो अन्यों के लिए दीपस्तम्भ की भांति सदैव नई प्रेरणा व दिशा देता रहेगा। परिवार की सम्पन्नता होते हुए भी रेल के साधारण डिब्बे में बैठकर इन्होंने दिल्ली तक का सफर किया। इसका एकमात्र उद्देश्य रहा कि अन्य यात्रियों से सम्पर्क बनाते हुए आर्य समाज का प्रचार-प्रसार होता रहे। अपने भाषण में उन्होंने कहा कि सभी लोग मुनिजी के गौरव निधि के लिए अधिक सी अधिक दानराशियां घोषित करें, ताकि उद्देशित राशि से भी अधिक निधि का संकलन हो। इस अवसर पर श्री आर्य ने उपस्थित आर्यों से अपील की कि वे अपने बच्चों को आर्य समाजों के कार्यक्रमों व सत्संगों में जरुर लावें। क्योंकि आर्य समाज का उज्ज्वल भविष्य उन्हीं के द्वारा पूर्ण हो सकता है।

श्री ब्रह्ममुनि जी का सरल व सादगीपूर्ण जीवन अपूर्व साधना व कठोर तपस्या से ओतप्रोत है । परिवार के निर्माण के साथ ही उन्होंने समाज एवं राष्ट्र के नव निर्माण में तथा आर्य समाज के कार्यों को बढ़ाने में जो योगदान दिया है, वह निश्चय ही ऐतिहासिक है। ऐसे साधुजनों का सम्मान करने से समाज में नई जागृति आती है। ऐसे साधुमना व्यक्तित्त्व के लिए दिल्ली सभा की ओर से मैं शतायु की कामना करता हूँ। श्री विनयजी ने इस अवसर पर मुनि जी की गौरव निधि में अधिकाधिक सहयोग देकर इस राशि को बढ़ाने का भी आवाहन किया।

आचार्य डॉ.वेदपालजी -

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान एवं परोपकारी पाक्षिक पत्रिका के सम्पादक डॉ.श्री वेदपालजी ने कहा कि महाराष्ट्र सभा द्वारा किया जा रहा श्री ब्रह्ममुनिजी का यह गौरव सही अर्थों में प्रेरणा का विषय है। दीखने में साधारण किन्तु कर्त्तृत्व से असाधारण व्यक्तित्त्व के धनी श्री मुनिजी हर कार्य में आगे रहे। उन्होंने स्मरण दिलाते हुए कहा - लगभग ११ वर्ष पूर्व जब मैं सोमयाग हेतु लातूर में शास्त्रीय पक्ष रखने हेतु आया, तब जाते-जाते इस गुरुकुल भूमि को देखा तब मैंने पाया कि, गुरुकुल में कडी धूप में भी श्री मुनिजी लक्कड फाड रहे थे, तभी लगा कि निश्चय ही ऐसे आर्यजन ही समाज के निर्माता

बन सकते हैं। इतने बडे व्यक्तित्त्व के कारण ही महाराष्ट्र की आर्य प्रतिनिधि सभा गतिमान हो चुकी है। वर्णव्यवस्था का पूर्ण स्वरुप ऐसे सच्चे आर्यों में देखने मिलता है। जन्मना जाति व सम्प्रदाय को विखंडित, विश्रृंखलित करने का काम ब्रह्ममुनिजी व स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज जैसे तपस्वी व्यक्तियों के कारण हुआ और हो रहा है। मुनिजी का यह गौरव समारोह सही अर्थों में ऋषिऋण से उऋण होना है।

श्री मुनिजी के त्यागपूर्ण जीवन के कारण ही महाराष्ट्र में आर्य समाज का काम व्यापकरूप से बढ़ता जा रहा है। वैदिक सिद्धांतों को जीवित रखने में उन्होंने काफी योगदान दिया है। ईश्वर इन्हें सुन्दर स्वास्थ्य और दीर्घायु प्रदान करें।

श्री ओममुनिजी –

परोपकारिणी सभा के वरिष्ठ ट्रस्टी एवं पूर्व मन्त्री श्री ओममुनिजी ने कहा – डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी के साधनामय जीवन व उनके महनीय कार्यों को कौन नहीं जानता? महाराष्ट्र सभा को इन्होंने नई पहचान प्रदान की है। महाराष्ट्र में आर्य समाज को जागृत रखने का कार्य किया है। साथ ही सार्वदेशिक सभा व परोपकारिणी सभा को सैद्धान्तिक दृष्टि से सुरक्षित रखने हेतु वे दिशानिर्देश करते रहे। अपने उद्‌बोधन में उन्होंने श्रद्धानन्द गुरुकुलाश्रम में अध्ययनरत छात्रों के लिए अष्टाध्यायी कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता हेतु प्रतिवर्ष रु.५००० /– देने की घोषणा की, जो डॉ.ब्रह्ममुनिजी महाराज के गौरव में निरन्तर चलती रहेगी।

श्री ब्रह्ममुनि जी का त्याग व समर्पण से परिपूर्ण जीवन सही अर्थों में आर्य जगत में मूर्तिमंत उदाहरण है। परोपकारी सभा को उनका काफी योगदान मिलता रहा है। ऐसे कर्मठ आर्य व्यक्तित्त्व के लिए मैं शतायु की कामना करता हूँ।

पूज्य स्वामी श्रद्धानंद –

१०५ वर्षीय समाजसेवी संन्यासी पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) ने कहा कि– श्री ब्रह्ममुनिजी सदैव मान–सम्मान से दूर रहें। इन्होंने आर्य समाज के साथ अनेकों को जोडा। गृहस्थ के साथ इनका वानप्रस्थ आश्रम भी सफल रहा है। महाराष्ट्र सभा को समाजोपयोगी बनाने एवं आर्थिक दृष्टि से सबल बनाने में वे दिनरात जुटे रहे। वैदिक सिद्धान्तों का बडी निष्ठा से पालन करते हुए इन्होंने स्वयं को एक 'पक्का वैदिकधर्मी व एकनिष्ठ आर्य समाजी' स्थापित कर दिया। राज्य की सभी आर्य समाजों को पुनर्जीवित कराने में आपने ऐतिहासिक योगदान दिया है। इन्हीं के समान अन्यों ने भी आर्य विचारों के प्रचारक बनकर आर्य समाज को बढाने में योगदान देना चाहिए। महाराष्ट्र के इस कर्मठ आर्यपुरुष को परमेश्वर अधिकाधिक आयु प्रदान करें, जिससे हम सभी को उनका निरंतर मार्गदर्शन मिलता रहे।

सांसद डॉ.प्रीतमदीदी मुण्डे –

समारोह में सम्मिलित बीड जिले की सांसद डॉ.प्रीतमदीदी मुण्डे ने बताया कि, बडी प्रसन्नता है कि मुझे आर्य समाज के इस सामाजिक एवं धार्मिक कार्यक्रम में उपस्थित होने का सद्‌भाग्य मिला। आदरणीय डॉ.ब्रह्ममुनिजी जैसे समाजसेवी व्यक्तित्त्व का सम्मान समारोह सभी व्यक्तियों को नई ऊर्जा प्रदान करता है। परोपकार के विषय को लेकर भाषण देना सरल है, किन्तु उसपर प्रत्यक्ष अमल करना बहुत ही कठिन है। जिस महामना व्यक्तित्त्व ने परोपकार, सेवा व समर्पण का व्रत धारण कर जीवनभर सिद्धान्तों पर चलने का महत्प्रयास किया, तथा जो सदैव समाज के नवनिर्माण में जुटे रहे। साथ ही सामाजिक कार्य करते हुए अन्यों को किसी प्रकार को कष्ट नहीं पहुंचाया, उनके अभिनन्दन समारोह में पहुंचना हम सबके लिए सर्वाधिक हर्ष का विषय है।

गौरवमूर्ति डॉ.ब्रह्ममुनिजी का सम्बोधन –

अपने सम्मान के उत्तर में गौरवमूर्ति डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी ने दिये सम्बोधन का आरम्भ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः...' इस श्लोक से किया। मेरा जीवन साधु–महात्माओं के सानिध्य से बना है। उन्हीं के मार्गदर्शन के

फलस्वरूप मैं जीवन में कुछ कर पाया हूं। मैं विज्ञान का छात्र हूं। अतः मेरी दृष्टि में भौतिक विज्ञान एवं आध्यात्मिक ज्ञान- विज्ञान का सुंदर समन्वय होना चाहिए, जिससे सारा संसार वेदों की ओर आकृष्ट होगा। आज के परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज की व्यापकता, वैज्ञानिकता एवं कल्याणकारी विचारधारा को फैलाने की सर्वाधिक आवश्यकता है। आज बडे खेद से कहना पड रहा है कि सृष्टि में विद्यमान वैज्ञानिक तत्त्वों के मूलाधार को आधुनिक विज्ञान ने समझा ही नहीं सका। वस्तुतः जो सृष्टि में है, वह सब वेदों में है और जो वेदों में है, वह सृष्टि में दिखाई देता है। इस बात को समझने का हर एकने प्रयत्न करना चाहिए। जब 'धर्म और विज्ञान' में भिन्नता ही नहीं है, तब आधुनिक विज्ञान को धर्म व अध्यात्म से तथा अध्यात्म को वर्तमान विज्ञान से अलग होना ही असम्भव है।

श्री मुनिजी अपने पुराने प्रसंग को अवगत कराते हुए बताया कि जब येलदरी (ता.अहमदपुर जि.लातूर) में आर्य सम्मेलन हुआ, जिसमें वैदिक विद्वान ब्रह्मचारी श्री आर्य नरेशजी पधारे थे। उस समय एक दिन प्रातःवेला जब वे भ्रमणार्थ बाहर गये, तब पूज्य उत्तममुनिजी मुझे गले लगाकर रोने लगे। इस दुख का कारण पूछने पर मुनिजी ने कहा कि अब आर्य समाज का क्या होगा? तब उसी समय उन्हें आश्वस्त किया कि **'मैं जीवनभर ईमानदारी से आर्य समाज का काम करुंगा!'** मुनिजी के दिये इसी वचन का मैं आज तक निष्ठा से पालनकर रहा हूँ। इन्हीं कार्यों में अब तक लगा हूँ।

आर्यो! अभी भी समय नहीं गया, वैदिक सिद्धान्तों का निष्ठा से पालन करो। साधनामय जीवन बिताओ। क्योंकि आज तक साधना के ही बल पर अनेकों ने अपना जीवन बदला है। फलस्वरूप समाज व राष्ट्र को भी शुद्ध आचारवान् आर्यपुरुषों द्वारा ही दिशा मिली और समाज परिवर्तन हुआ है।मैं सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए ऋण व्यक्त करता हूं।

डॉ.जनार्दनराव वाघमारे का अध्यक्षीय सम्बोधन –

समारोह के अध्यक्ष प्रसिद्ध शिक्षाविद्, पूर्व राज्यसभा सदस्य एवं पूर्व उपकुलपति डॉ.जनार्दनराव वाघमारे ने कहा – मेरे छात्र श्री.सुग्रीव काले अर्थात डॉ.ब्रह्ममुनिजी का छात्रजीवन बहुत ही प्रतिकूलताओं में व्यतीत हुआ।

क्रान्तिकारियों की केन्द्रस्थली रहे गुंजोटी ग्राम के समीपस्थ औराद नामक छोटे से गांव के कृषक मजदूर परिवार में जन्म लेकर आपने बौद्धिक बल से भारी प्रतिकुलताओं को अनुकूलताओं में बदला। घर-परिवार के निर्माण के साथ ही शैक्षिक एवं आर्य सामाजिक कार्य में पुनीत योगदान दिया, यह सब अपूर्व होने के साथ ही अद्भुत भी है। परली के वैद्यनाथ महाविद्यालय के निर्माण में आपने एक क्रियाशील प्राध्यापक के रुप में जो भूमिका निभाई, वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। वनस्पतीशास्त्र(साईन्स) के छात्र होते हुए भी वैदिक शास्त्रों का आपका गम्भीर अध्ययन रहा है। धर्म एवं विज्ञान का श्री मुनिजी ने किया हुआ समन्वय निश्चित ही उनके गहरे चिन्तन की फुलश्रुति है। आर्य समाज के प्रचार व प्रसार मे इनके द्वारा दिया गया योगदान अनुपम सिद्ध होता है। महर्षि दयानन्द का सच्चा शिष्य हमें श्री कालेजी में दिखाई देता है। आर्य समाज के दसों नियमों के पालन में ये सदैव अग्रणी रहे। महाविद्यालयीन सेवा से अवकाश प्राप्त होने पर आप रात-दिन इसी कार्य में मिशनरी भाव से जुटे रहे। कडी तपस्या से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा को पुनर्जीवित किया। सभी आर्य समाजों के लिए प्रचार कार्यक्रम दिये। नवदिशा दी और आर्यजनों को सक्रिय बनाया। आर्य समाज को चार दीवारी से बाहर लाकर सभी के लिए खुला किया।

परली में श्रद्धानन्द गुरुकुल स्थापन कर इसे वेदविद्या के प्रचार का केन्द्र बनाया। यहाँ के क्रियाशील आर्यजनों की सम्मति व पूर्ण सहयोग से इस उबडखाबड पथरीली बंजर भूमि को मंगलमय बना दिया। आज यहां पर प्राच्य भारतीय शिक्षा प्रणाली के अनुसार आदर्श संस्कृति का नजारा दिखाई दे रहाहै। यह सब श्री काले जैसे कर्मठ तपस्वी व्यक्ति का ही प्रताप है। वैदिक विचारों का सर्वतोमना पालन करते हुए इन्होंने आर्यत्त्व की जो पहचान

बनाई, वह निश्चय ही लाजवाब है। मनुष्यकृत जातिव्यवस्था यह समग्र मानव समाज के लिए एक बडी महामारी है। आर्य समाज ने इसे नष्ट करने में अहंभूमिका निभाई है। अनेकों विद्वानों व कार्यकर्त्ताओं ने परम्परागत जातिप्रथा तोडकर अन्तर्जातीय विवाह किये। श्री सुग्रीव काले भी इस परिवर्तनधारा में सम्मिलित हुए। इन्होंने स्वयं का अन्तर्जातीय व अन्तप्रान्तीय विवाह कर समाज के सम्मुख उंचा आदर्श प्रस्थापित किया। अपने पुत्रों, रिश्तेदारों एवं अन्य युवकों के भी अन्तर्जातीय विवाह कराकर जातिविरहित समाज स्थापन करने में योगदान दिया।

डॉ.श्री वाघमारे जी ने अपने विस्तृत व्याख्यान में आर्य समाज के ऐतिहासिक कार्यों का भी गौरव किया। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं, जिसमें आवश्यक सुधार हेतु आर्य समाज ने प्रयत्न न किये हो। अज्ञान, अभाव, अन्याय इन तीन शत्रुओं को समाज व राष्ट्र से दूर करने हेतु इस संस्था ने पुरजोर प्रयत्न किये। दक्षिण के हैदराबाद राज्य में निजाम का तक्ता आर्य समाज ने ही पलट दिया। रजाकारों के अत्याचारों से पीडित हिन्दू जनता को मुक्ति दिलाई। आर्यों के प्रभावशाली सत्याग्रह के कारण निजाम का राज्य समाप्त हुआ।

देश में बढती सामाजिक दुरवस्था पर चिन्ता जताते हुए डॉ.श्री वाघमारेजी ने आर्य समाज को नई अंगलाई लेने का आवाहन किया। देश के हालातों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा – आज देश में साम्प्रदायिक एवं जातीय तणाव बढ रहा है। भ्रष्ट एवं दलगत स्वार्थपूर्ण राजनीति के कारण धर्म व जाति को बढावा मिल रहा है। जिस आर्य समाज ने ऐसी विषैली जातिव्यवस्था को तोडने का प्रयत्न किया, अब वही अनिष्ठ व्यवस्था बढते जा रही है। आर्य समाज को अब पुनः इसके लिए आगे आना होगा। केवल जातिप्रथा नष्ट करने से काम नही चलेगा। बल्कि 'मनुष्यकृत जाति' ही नामशेष होनी चाहिए। एक समय आर्य समाज का यही तो उद्देश्य था।

महर्षि दयानन्द ने तो 'हिन्दू' शब्द का उल्लेख भी नही किया। इसके अलावा उन्होंने 'आये' शब्द का प्रयोग किया। आर्य उसे कहते हैं, जो श्रेष्ठ हो। सद्‌गुणों, उत्तम कर्मों एवं वेदज्ञान के अनुसार जीवनयापन करनेवाला हो! यदि वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा करनी हो, तो आर्य समाज को ग्राम–देहातों तक पहुंचना होगा। जन–जन में आर्यत्व जगाना होगा, जातिव्यवस्था को समाप्त करना होगा। एक समय आर्य समाज का प्राधान्यक्रम से यही तो आद्य विषय था, जिसे पुनरपि सर्वत्र फैलाना होगा। वर्तमान स्थिति को देखते हुए असंख्य टुकडों में बंटा हुआ सारा आर्य (हिन्दू) समाज एक होना चाहिए। इसी एकता के लिए जातिगत भेदभाव समाप्त करने हेतु हमें कार्यप्रवण होना पडेगा। वेदों का प्रचार–प्रसार, अध्ययन आदि बातें तो होनी ही चाहिए, किन्तु यदि देश में सुधारात्मक नवपरिवर्तन लाना हो, तो अपने अंतर्गत क्षुद्र जातिभेदभाव नष्ट कर हिन्दू (आर्य) को सुसंघटित होना नितान्त आवश्यक हैं।

सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करनी हो, तो महर्षि दयानन्द के वैदिक सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार व प्रसार होना आवश्यक है।

एक समय आर्य समाज ने गुरुकुल एवं डी.ए.वी. इन दो शिक्षालयों के माध्यम से शिक्षाजगत् में परिवर्तन का शंखनाद किया था। गुरुकुलों से वैदिक संस्कार तथा डीएवी से आधुनिक शिक्षा पद्धति के माध्यम से एकमात्र उद्देश्य आर्यत्व का प्रचार व प्रसार! लेकिन इसमें भी अब शिथिलता आ रही है। केवल आर्य समाज में जाने से ही काम नहीं चलेगा, बल्कि हममें क्रान्तिकारक परिवर्तन आना भी जरुरी है।

महर्षि दयानन्द की प्रचारयात्रा के विषय में डॉ.वाघमारे जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द ने भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों पर प्रचारयात्राएं की। विशेषकर उत्तर भारतीय विभिन्न नगरों में पहुंचकर स्वामीजी ने वेदों का पावन सन्देश सुनाकर आर्य समाज को बढाया। लेकिन दक्षिण भारत वे पहुंचे नहीं। वे केवल मुम्बई, पुणे व सातारा तक ही आये। इसी कारण आर्य समाज का प्रसार दक्षिण भारत में हो नहीं पाया। अब सार्वदेशिक सभा ने केरल, तामिलनाडू, आन्ध्र, तेलंगणा, कर्नाटक

एवं उर्वरित महाराष्ट्र में आर्य समाज कैसे फैले? इसपर विचार करना चाहिए। इसके लिए उन-उन प्रान्तीय भाषाओं में वैदिक साहित्य छपवाकर तथा भाषिक वक्ताओं को तैयार कर प्रचार की नई दिशा अपनानी होगी। यदि आर्यजन उन-उन प्रान्तों की भाषाओं में प्रचार करेंगे, तो धीरे-धीरे हिन्दी को लेकर बढ रहा विरोध भी खत्म होगा। इसके लिए आर्य समाज को भाषिक नेतृत्त्व हेतु आगे आना पडेगा। क्योंकि देश की ऐसी नाजूक स्थितियों में अब आर्य समाज को समग्र भारतवर्ष में वैदिक मानवीय विचारधारा फैलानी चाहिए।

इस अवसर पर मैं गौरवमूर्ति श्री काले (ब्रह्ममुनिजी) के लिए **'जीवेत शरदः शतम्।'** की कामना करता हूं। ईश्वर उन्हें अधिक सामर्थ्य देवें, ताकि उनके द्वारा समाज में नया मानवोचित परिवर्तन आवें!

समारोह के आरंभ में आर्यवीर दल के प्रमुख श्री डॉ.जगदीशजी कावरे एवं सौ.गोदावरी कावरे के नेतृत्त्व में आर्य वीरांगनाओं ने नगाडे बजाकर एवं लाठी का सुंदर प्रदर्शन किया तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी सर्वांगसुंदर व्यायाम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम की शुरुआत आर्य भजनोपदेश पं.श्री दिनेशजी 'पथिक' के मधुर भजन से हुई। साथ ही गायिका सौ. सोनाली तिवार एवं छात्राओं ने स्वागतगीत प्रस्तुत किया। मान्यवर विद्वानों व अतिथियों के स्वागत के पश्चात् समारोह की प्रस्तावना महाराष्ट्र सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी ने की एवं मंत्री श्री राजेंद्र दिवे ने सभी का स्वागत किया। मंच का संचालन डॉ. श्री नयनकुमार आचार्य ने किया तथा धन्यवाद प्रस्ताव श्री व्यंकटेशजी हालिंगे ने रखा।

मंच पर उद्योगपति श्री शेखरजी देसरडा, स्वाधीनता सैनिक श्री आनंदमुनि जी, सोममुनिजी, दयाराम बसैये, ओमप्रकाशजी होलीकर,पं. राजवीरजी शास्त्री, दिलीपजी वेलानी, वैद्यकीय अधिकारी डॉ. श्री राजेंद्र सूर्यवंशी, डॉ. अशोकजी थोरात, राज्य मंत्रालय के उपसचिव श्री नामदेवजी गुट्टे , राज्य जल संधारण विभाग के सचिव श्री वैजनाथजी से चिल्ले, वैज्ञानिक डॉ. श्री बी.एम. मेहेत्रे, उग्रसेन जी राठौर, जुगलकिशोर लोहिया, व्यंकटेश हालिंगे, मधुसूदन काले आदि मान्यवर उपस्थित थे ।

समारोह के उपलक्ष में दो दिनों तक प्रतिदिन अलग-अलग सत्रों में विभिन्न कार्यक्रम चलते रहे। प्रातः, दोपहर एवं रात्रि में विविध विषयों पर सम्मेलनों का आयोजन हुआ, जिसमें वैदिक विद्वान आचार्य डॉ. श्री वेदपालजी, श्री ओममुनि जी पंडित राजवीरजी शास्त्री, श्री दिलीपजी वेलानी, डॉ.बी.एम.मेहेत्रे, डॉ.वीरेन्द्र शास्त्री, डॉ.अखिलेशजी शर्मा तथा अन्यों ने मार्गदर्शन किया।

दि.१६ अप्रैल को दोपहर आयोजित गुरुकुलीय स्नातक सम्मेलन में सर्वश्री प्रमोद शास्त्री, भूपेन्द्र शास्त्री, राकेश शास्त्री आदियों ने विचार रखें। सायंकाल के डॉ.ब्रह्ममुनिजी शिष्य व स्नेहीजन सम्मेलन की अध्यक्षता पं.राजवीर शास्त्री ने की। इस बृहत्तर सम्मेलन में सर्वश्री प्रकाशजी कच्छवा, दत्तात्रय मुळे, बालाजी नरवडे, जयकिशोर दोडिया, सौ.डॉ.सरस्वती मुळजकर, नारायण कुलकर्णी, लखमसीभाई वेलानी, श्रीमती सुलोचना शिंदे, वैद्य विज्ञानमुनिजी, प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी, डॉ.शालिनीताई कराड, शंकरराव बिराजदार, डॉ.वीरश्री आर्य, सभामन्त्री राजेन्द्र दिवे, आर्यमुनिजी आदियों ने अपने विचार रखे तथा अपने ब्रह्ममुनिजी के विषय में कुछ प्रेरक प्रसंग भी सुनाये।

रात्रकालीन राष्ट्ररक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता वैदिक विद्वान डॉ.वेदपालजी ने की, जिसमें सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य ने राष्ट्ररक्षा हेतु बहुविध उपाय सुझाये।

तीनों दिनों तक आर्य भजनोपदेशक पंडित श्री दिनेशजी 'पथिक' ने मधुर स्वरों में भजनों की अमृतवर्षा की ! सम्मेलन सत्रों में सर्वश्री डॉ. वीरश्री आर्य, डॉ. अरुण चौहान, व्यंकटेशजी हालिंगे, आचार्य सत्येंद्र जी, लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी, डॉ. अखिलेश जी शर्मा आदियों संचालन का कार्यभार संभाला।

म.याज्ञवल्क्य यज्ञशाला में आयोजित बृहद्यज्ञ में विविध यजमानों ने श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। इस यज्ञ में श्री सोममुनिजी, आचार्य सत्येन्द्रजी,

पं.राजवीरजी शास्त्री ने उपस्थितों को आध्यात्मिक, धार्मिक विषयों पर मार्गदर्शन किया। यज्ञीय कार्यक्रमों का संचालन डॉ.वीरेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

इस भव्य समारोह की सफलता हेतु सभा के कोषाध्यक्ष एवं आर्य समाज के मन्त्री श्री उग्रसेनजी राठौर, प्रधान श्री जुगलकिशोरजी लोहिया, पदाधिकारी सर्वश्री लक्ष्मणराव आर्य, डॉ.मधुसूदन काले, जयपाल लाहोटी, पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, देविदासराव कावरे, गोवर्धन चाटे, रमेशजी भंडारी तथा शिवणखेड के आर्य कार्यकर्त्ता, गुरुकुल के पुर्व स्नातक मण्डल एवं डॉ.ब्रह्ममुनिजी के शिष्यों ने बहुत प्रयत्न किये।

कुल मिलाकर तीनों दिनों के कार्यक्रम बहुत ही सफलता के साथ संपन्न हुए। अंतिम दिन उपस्थित श्रोताओं की उपस्थिति काफी दिखाई दी । कोरोना की बीमारी के कारण लगभग तीन वर्षों के बाद कार्यक्रम का आयोजन होने से महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के साथ ही कर्नाटक, तेलंगाना, मुंबई आदि जगह से लोग भारी संख्या में पधारे थे।

प्रांतीय सभा के पदाधिकारियों, सदस्यों तथा आर्य समाज परली के कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम को अपूर्व सफलता के शिखर पर पहुंचाया।

स्थिरनिधि कार्यपूर्ति की ओर –

प्रस्तावीत डॉ.ब्रह्ममुनिजी गौरव स्थिरनिधि स्थापना का कार्य सम्प्रति सफलता की ओर है। जब से समारोह की तिथियां निश्चित हुई तब से प्रधान श्री योगमुनिजी, सभामन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर तथा अन्य पदाधिकारी निधि संकलन के कार्य में जुट गये। विशेषकर डॉ.श्री नयनकुमार आचार्य एवं श्री रंगनाथजी तिवार ने नगर–नगर व ग्राम–ग्राम घूमकर आर्य कार्यकर्त्ताओं एवं मुनिजी के शिष्यों व स्नेंहीजनों से मिले। सभी को इस पवित्र कार्य के लिए प्रेरित किया और समारोह में पधारने हेतु निमन्त्रण भी दिया।

निधि संकलन कार्य की शुरुआत लातूर में आयोजित एक दिवसीय प्रान्तीय आर्य कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन में हुई। इसे पधारें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनयजी आर्य पधारे थे। श्री विनजी ने सभी कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति में डॉ.ब्रह्ममुनिजी गौरव समारोह प्रचार योजना का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने मुनिजी का अभिनन्दन समारोह बडी धूमधाम से मनाने का आवाहन करते हुए पूर्वनिर्धारित रु.३१ लाख राशि के बजाय रु.५१ लाख की राशि बनाने का आग्रह किया और इस विषय पर आर्यों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने दिल्ली सभा व अन्य संस्थाओं से और एक लाख रु. भेजने का आश्वास दिया। दिल्ली सभा की ओर से एक लाख रुपयों के राशि की घोषणा की। इस अवसर पर सभामन्त्री श्री राजेन्द्रजी दिवे, रंगनाथ तिवार, डॉ.रंगनाथ तिवार, डॉ.नयनकुमार आचार्य तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं ने एक–एक लाख रुपयों की दाननिधियां घोषित की। तब तीन–चार महिनों के अन्तराल में निधिसंकलन कार्य में तेज गति से बढता गया। गौरव समिती के सदस्य रात–दिन इस एकमात्र कार्य में संलग्न हो गये। सभी आर्य समाजों, कार्यकर्त्ताओं, स्नेहीजनों व शिष्यों को परिपत्रक भेजे गये। चलभाष पर सम्पर्क कर सहयोग हेतु आवाहन किये गये। समिति के पदाधिकारियें ने लातूर, निलंगा, औराद, उदगीर, परभणी, हदगांव, हिंगोली, मालेगांव, धुलिया, नासिक, दौंड, पुणे आदि स्थानों पर पहुंचकर आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठकें आयोजित की और सभी से स्थिरनिधि हेतु अधिकाधिक धनराशियां प्रदान करने का आवाहन करते रहे। इस पर उत्साही आर्यजनों ने पूरी तरह से सहयोग देने का आश्वासन दिया। साथ ही अनेकों ने तुरन्त अपनी राशियाँ प्रदान की और कईयों ने आश्वासन दिया।

मुनिजी के अभिनन्दन समारोह तक निधि संकलन का कार्य लगभग ८०% प्रतिशत तक पूर्ण हुआ और अवशिष्ट कार्य भी समारोह के पश्चात पूर्ण हुआ। इस तरह से सभी के सहयोग से ब्रह्ममुनिजी गौरव स्थिरनिधि का पुनीत कार्य सम्पन्न हुआ। एतदर्थ सभी दानदाता, आर्यजनों, कार्यकर्त्ताओं, स्नेहीजनों व शिष्यों के शतशः आभार एवं कृतज्ञभाव से धन्यवाद!

महाशिवरात्रि एवं ऋषि बोध उत्सव के अवसर -

सच्चे शिव की खोज

-डॉ.विवेक आर्य

आगामी 'बोधदिवस' शिवरात्रि का पावन पर्व ज्ञान, भक्ति और उपासना का दिवस है। शिवरात्रि के तीसरे प्रहर में १४ वर्षीय बालक मूलशंकर के हृदय में सच्चे शिव को पाने की अभिलाषा जगी थी। शिव' विद्या और विज्ञान का प्रदाता स्वरूप है परमात्मा का। इसी दिन मूलशंकर को बोध-ज्ञान प्राप्त हुआ था और वह महर्षि दयानन्द सरस्वती बन सके। इस दिन को याद करते हुए दयानंद बोध दिवस के रूप में हर साल मनाया जाता है। शिवरात्रि का अर्थ है वह कल्याणकारी रात्रि जो विश्व को सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति कराने वाली है। मनुष्य के जीवन में न जाने कितनी शिवरात्रि आती हैं। किन्तु उसे न ज्ञान होता है और न परमात्मा का साक्षात्कार, न उनके मन में सच्चिदानंद परमात्मा के दर्शन की जिज्ञासा ही उत्पन्न होती है। बालक मूलशंकर ने अपने जीवन की प्रथम शिवरात्रि को शिव मंदिर में रात्रि जागरण किया। सभी पुजारिओं और पिता जी के सो जाने पर भी उन्हें नींद नहीं आई और वह सारी रात जागते रहे। अर्ध रात्रि के बाद उन्होंने शिव की मूर्ति पर नन्हे चूहे की उछल कूद करते व मल त्याग करते देखकर उनके मन में जिज्ञासा हुई की यह तो सच्चा शिव नहीं हो सकता। जो शिव अपनी रक्षा खुद ना कर सके वो दुनिया की क्या करेगा और उन्होंने इसका उत्तर अपने पिता व पुजारिओं से जानना चाहा लेकिन संतोषजनक उत्तर न मिल पाने के कारण उन्होंने व्रत तोड़ दिया। इसके बाद उन्होंने २१ वर्ष की युवा अवस्था में घर छोड़ कर सच्चे शिव की खोज में सन्यास लेकर दयानंद बने व मथुरा में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के शिष्य बनने हेतु पहुंचे। शिष्य को गुरू और गुरू को चिर काल से अभिलषित शिष्य मिल गया। तीन वर्ष तक कठोर श्रम करके वेद, वेदांग, दर्शनों का अंगों उपांगों सहित अध्ययन किया और गुरु दक्षिणा के रूप में स्वयं को देश के लिए समर्पित कर दिया ।

जिन सच्चे शिव की खोज में दयानन्द घर से निकले थे। उनकी पिपासा वेदों को साक्षात् कर धर्म अनुसार आचरण करने से तृप्त हुई। शिव तथा शिव के जितने भी पर्यायवाची शब्द- शम्भु, शंकर, मयस्कर, मयोभव आदि हैं, उन सबका अर्थ कल्याण, सुख ही हैं। उन्होंने उपदेश दिया कि जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है। वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है। निश्चय जानों कि वह अधर्माचरण धीरे-धीरे तुम्हारे सुख के मूल को काटता चला जाता है। धर्म का फल सुख और इसी भावना से यह मूल-मन्तव्य निर्दिष्ट किया है कि हमारे जीवन के हर क्षेत्र का प्रत्येक कार्य धर्म के ही अनुसार हो। वस्तुतः शिव का रहस्य, मर्म या मार्ग धर्म का आचरण ही है। धर्म शब्द 'धृ' से बनता है। जिसका अर्थ

है धारण अर्थात् जिसके धारण, पालन से सुख प्राप्त हो। धर्म का ईश्वर भक्ति एक प्रमुख तत्त्व है और ईश्वर आनन्द, सुख, कल्याण का खजाना है। हां, परमात्मा का मुख्य स्वरूप कर्म फल देना ही है। शेष सारे गुण इसी के अन्दर आ जाते हैं। अतः अच्छा फल प्राप्त करने के लिए अच्छे कर्म-धर्म का आचरण ही एक मात्र सुख का आधार है।

जैसे कि धर्म अच्छाई है, इस पर स्थिर रहने के लिए ही हम धर्म ग्रन्थ पढ़ते है, सत्संग करते है। इसीलिए मनु जी ने धृति, क्षमा, संयम, सच्चाई आदि दस बातों को धर्म कहा है। जो कि आचरण, अच्छाई की ही बातें हैं। इनको पालने से ही जीवन, परिवार, समाज सुखी होता है। धर्म के जितने भी अर्थ मिलते हैं, उनका असली आधार आचरण ही है। स्वामी जी ने निर्देश दिया कि जो धर्म को समझना चाहते हैं। वे वेद द्वारा ही धर्म का निश्चय करें, क्योंकि धर्म अधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक-ठीक नहीं होता। वेदों में शिव की महिमा के अनेक प्रसिद्ध मंत्र है। त्र्यम्बकं यजामहे महामृत्युंजय मन्त्र में प्रार्थना है कि विविध ज्ञान भण्डार, विद्यात्रयी के आगार, सुरक्षित आत्मबल के वर्धक परमात्मा का यजन करें। जिस प्रकार पक जाने पर खरबूजा अपनी बेल से स्वतः ही अलग हो जाता है वैसे ही हम इस मृत्यु के बन्धन से मुक्त हो जायें, मोक्ष से न छूटें। संध्या के प्रसिद्ध मन्त्र नमः शम्भवाय च में प्रेरणा है कि जो मनुष्य सुख को प्राप्त कराने हारे परमेश्वर और सुख प्राप्ति के हेतु विद्वान् का भी सत्कार कल्याण करने और सब प्राणियों को सुख पहुंचाने वाले का भी सत्कार मंगलकारी और अत्यन्त मंगल स्वरूप पुरुष का भी सत्कार करते हैं, वे कल्याण को प्राप्त होते हैं। वेदों के प्रसिद्ध रुद्र सूक्त में ईश्वर को दुष्टों के भय देने वाला और श्रेष्ठों को सुख देने वाला बताया गया है। रोगनाशक वैद्य के रूप में रोगों को दूर करने वाला बताया गया है।

महर्षि ने वेदों के माध्यम से सच्चे शिव को साक्षात् किया। यही ईश्वरीय प्रेरणा उन्हें महापुरुष की कोटि में शामिल करती है। उनके जीवन का हर पहलु संतुलित और प्रेरक था। एक श्रेष्ठ मनुष्य का जीवन कैसा होना चाहिए। वे उसके प्रतीक थे। उनकी जिंदगी की कथनी और करनी में कोई अंतर नहीं था। इस लिए उनके संपर्क में जो भी आता था, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वे प्रतिदिन आत्म-कल्याण के लिए ईश्वर का ध्यान करते थे। इसका ही परिणाम था कि बड़े से बड़े संकट के समय वे न घबराए और न तो कभी सत्य के मार्ग से पीछे हटे। समाज को हर बुराई, कुरीति, पाखण्ड एवं अंधविश्वास से मुक्ति दिलाने के लिए डट कर सत्य बातों का का प्रचार-प्रसार किया। उनकी तप, साधना व सच्चे ज्ञान ने समाज को एक नई दिशा दी। यदि मानव को सच्चे ईश्वर की प्राप्ति चाहिए तो उसे महर्षि दयानंद जी के मार्ग पर चलते हुए उनकी शिक्षाओं एवं ज्ञान को अपने जीवन में धारण करना ही होगा। महर्षि दयानंद जी के चरणों में सहस्रों बार साष्टांग नमन। शिव रात्रि का यही पावन सन्देश है।

(लेखक शिशु रोग विशेषज्ञ एवं सेंटर फॉर वैदिक स्टडीज के संस्थापक है)

- मो.९३१०६७९०९०

'वैदिक गर्जना' विलम्ब के लिए क्षमायाचना

महाराष्ट्र सभा के मुखपत्र 'वैदिक गर्जना' मासिक के प्रकाशन में काफी विलम्ब हो चुका है। किन्हीं कारणों से इस मासिक का प्रकाशन समय पर नहीं हो पाया। इस कारण गत सितम्बर से इस अंक की पाठकों को काफी प्रतीक्षा करनी पडी। इसी में ही डाक विभाग की वितरण व्यवस्था चरमरा जाने से भी इसके अंक पाठकों तक नहीं पहुंच पाये। अब यहाँ से आगे यह मासिक पत्रिका पाठकों को यथासमय प्रेषित की जायेगी। प्रस्तुत अंक सितम्बर-दिसम्बर २०२२ का है। विलम्ब के लिए सभी पाठकों से क्षमा याचना...!

- सम्पादक

शंकरराव मोरे अमृतमहोत्सव

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य एवं आर्य समाज रामनगर, लातूर के प्रधान श्री शंकरराव मोरे के यशस्वी जीवन के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर उनका लातूर में अमृत महोत्सव मनाया गया। दि.२३ मई २०२३ को आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री शिवाजीराव पाटिल कव्हेकर ने की। समारोह में पूज्य स्वामी श्रद्धानन्दजी, डॉ.ब्रह्ममुनिजी एवं अन्य आर्यजनों ने सम्मिलित होकर मोरे जी का अभिनन्दन किया व आशीर्वाद दिये। साथ ही विधायक श्री रमेशअप्पा कराड, विधायक श्री अभिमन्यू पवार तथा सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र से जुडे नेता व कार्यकर्त्ता इस अवसर पर उपस्थित थे। इस उपलक्ष्य में 'गौरव स्मारिका' का विमोचन भी किया गया। आर्य समाज, रामनगर-लातूर की प्रचार गतिविधियों के संचलनार्थ श्री मोरे जी ने एकलाख रुपयों की दानदाशि पदाधिकारियों को समर्पित की। सभामंत्री श्री राजेन्द्रजी दिवे व अन्यों ने भी इस अवसर पर विचार व्यक्त किये। समारोह से पूर्व डॉ.पं.अखिलेशजी शर्मा के पौरोहित्य में आयुष्कामेष्टि यज्ञ सम्पन्न हुआ। समारोह की प्रस्तावना डॉ.नयनकुमार आचार्य ने रखी तथा संचालन श्री व्यंकटेशजी हालिंगे एवं अब्दुल गालीब शेख ने किया। समारोह की सफलता के लिए आर्य समाज रामनगर के मंत्री अनंत लोखंडे, उपप्रधान श्री नागराज चुडमुडे, ज्ञानकुमारजी आर्य आदियों ने प्रयत्न किये।

पर्यावरण शुद्धि एवं पर्जन्यवृष्टि यज्ञ सम्पन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री लखमसीभाई वेलानी एवं समस्त वेलानी परिवार के पूर्ण सहयोग से तथा वैदिक परिवार प्रचार संघ के तत्त्वावधान में दि.२४ जून से ३ जुलाई तक उगेडी (जि.कच्छ-गुजरात) गांव में 'पर्यावरण शुद्धि एवं पर्जन्यवृष्टि यज्ञ' सम्पन्न हुआ। इस विशाल यज्ञ में परिसर के लगभग २४ गाव के श्रद्धालु यज्ञप्रेमी उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। आचार्य डॉ.कमलनारायणजी शास्त्री के प्रमुख ब्रह्मत्व में आयोजित इस भव्य वृष्टियज्ञ में लगभग १६ लाख रुपयों का व्यय हुआ। ६०० किलो शुद्ध देसी गाय का घी, २००० किलो सुगन्धित औषधि सामग्री के प्रयोग से सुसम्पन्न इस पुनीत यज्ञ का इतना बडा प्रभाव रहा कि यज्ञ के चौथे दिन से वर्षा प्रारंभ हुई और पांचवे दिन से तो घमासान भारी वर्षा होती रही। यज्ञ के इन सुपरिणामों से यज्ञप्रेमी आनन्दविभोर हो उठे। वृष्टियज्ञ में आचार्य चन्द्रगुप्तजी एवं स्वामी शान्तानन्दजी के व्याख्यान भी हुए।

'गुरु विरजानन्द' मराठी ग्रन्थ का विमोचन

'ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द दण्डी- जीवन व तत्त्वज्ञान' इस मराठी ग्रन्थ का विमोचन १४ अगस्त २०२२ को पुणे में सम्पन्न हुआ। आर्य समाज पिम्परी पुणे द्वारा प्रकाशित इस ग्रन्थ में गुरु विरजानन्दजी के तपस्वी जीवन एवं उनकी वैदिक सिद्धान्तनिष्ठा व तत्त्वज्ञान से सम्बन्धित वर्णन है। पूर्व सांसद आचार्य डॉ.रामप्रकाशजी द्वारा लिखित मूल हिन्दी ग्रन्थ का मराठी अनुवाद श्री चारुदत्तजी उपासनी ने किया है। समारोह में प्रा.डॉ.देवेन्द्रनाथ त्रिपाठी, प्रा.सोनेरावजी आचार्य, पं.धर्मवीरजी आर्य, सुमित दोशी, कृष्णकुमारजी गोयल, सुरेन्द्र कर्मचन्दानी उपस्थित थे।

स्वामी श्रद्धानन्दजी का १०६वां जन्मदिवस मनाया गया

आर्य जगत् तपोनिष्ठ सन्यासी तथा असंख्य विद्यार्थियों के निर्माता पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चन्द्र गुरुजी) का १०६ वां. जन्मदिवस आर्य समाज रामनगर, लातूर में समारोहपूर्वक मनाया गया। दि.८ नवम्बर २०२२ को आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ता पद्मश्री डॉ.अशोकरावजी कुकडे तथा ज्येष्ठ पत्रकार श्री प्रदीपजी ननन्दकर उपस्थित थे। सभा के उपप्रधान श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी ने समारोह की अध्यक्षता की। मंच पर सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री आनन्दमुनिजी एवं आर्य समाज, रामनगर के प्रधान श्री शंकरराव मोरे भी उपस्थित रहे। श्री कुकडेजी के करकमलों से पूज्य स्वामीजी को शॉल, पुष्पहार पहनाकर व गौरवचिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

आर्य समाज पिम्परी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पुणे स्थित आर्य समाज पिम्परी का ७२ वां वार्षिकोत्सव दि.२३ से २५ दिसम्बर २०२२ के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस वार्षिक उत्सव पर प्रमुख वक्ता के रुप में आर्य जगत् उच्च कोटि के वैदिक विद्वान् आचार्य श्री विष्णुमित्रजी वेदार्थी (बिजनौर, उ.प्रदेश) पधारे थे। तथा भजनोपदेशक के रुप में पं.भीष्म आर्य सम्मिलित हुए।

तीनों दिन प्रातः एवं सायं. पुरोहित पं.श्री विवेकजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में मान्यवर यजमानों की उपस्थिति में 'विश्वकल्याण यज्ञ' सम्पन्न होता रहा। यज्ञ के उपरान्त मधुर भजनों की प्रस्तुति एवं आचार्य विष्णुमित्रजी के सारगर्भित विषयों पर प्रवचन होते रहे। आचार्यजी के प्रभावशाली वक्तव्य को सुनकर श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हुए। दि.२४ दिसम्बर को सायं.४ बजे आर्य परिवारों के पुत्र-पुत्रियों के यज्ञोपवीत संस्कार हुए। अन्तिम दिन अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्दजी का बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर आर्यवीर दल पिम्परी की ओर से रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। साथ ही आर्य वीरों के व्यायाम व क्रीडा प्रशिक्षण का प्रदर्शन भी हुआ। समारोहान्तर्गत सभी गतिविधियों की सफलता हेतु पिम्परी आर्य समाज के संरक्षक मुरलीधरजी सुन्दरानी, प्रधान श्री सुरेन्द्रजी कर्मचन्दानी, मन्त्री हरेशजी तिलोकचन्दानी, कोषाध्यक्ष श्री जयरामजी धर्मदासानी, उपप्रधान माधवराव देशपांडे, सौ.नलिनी देशपांडे, अन्य सदस्य सर्वश्री उत्तमराव दण्डिमे, दिगम्बर रिद्दीवाडे, दत्ता सूर्यवंशी, दिनेशजी यादव आदियों ने प्रयत्न किये।

गुंजोटी में वेदप्रकाश बलिदान दिवस मनाया

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के पहले बलिदानी हुतात्मा वेदप्रकाश का स्मृतिदिवस दि.२७ नवम्बर २०२२ को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। साथ ही आर्य समाज का वार्षिकोत्सव भी सम्पन्न हुआ। त्रिदिवसीय इस समारोह में प्रा.श्री चंदेश्वरजी शास्त्री के प्रवचन एवं श्रीमती कंचनजी आर्या के भजन हुए। प्रातः यजमानों के उपस्थिति में बृहद्‌यज्ञ, भजन, प्रवचन होते रहे तथा रात्रि में भी इसी प्रकार कार्यक्रम हुए। दोपहर स्थानिय श्रीकृष्ण विद्यालय में उनके व्याख्यान का आयोजन हुआ। रात्रि में भी सामाजिक एवं राष्ट्रीय विषय पर व्याख्यान हुए। अंतिम दिन श्रीकृष्ण विद्यालय के प्रांगण से शोभायात्रा निकली, जिसमें गांव तथा परिसर के नागरिक सहभागी हुए। श्री दिनकरराव देशपांडे ने इस अवसर पर प्रेरक भजन प्रस्तुत किया। समारोह के दौरान डॉ.व्यंकटरावजी कोलफुके लिखित ग्रंथ का श्री वेदमुनिजी के करकमलों से विमोचन हुआ। इस अवसर पर प्रा.श्री ओमप्रकाशजी होलीकर, अशोकरावजी मलवाडे उपस्थित रहें। समारोह की सफलता के लिए प्रधान श्री प्रियदत्तजी शास्त्री, उपप्रधान महाळप्पा दुधभाते, मंत्री श्री राजवीरजी शास्त्री, कोषाध्यक्ष संतोष दुधभाते, संरक्षक काशीनाथ कदेरे, विश्वनाथ महाजन आदियों ने प्रयत्न किये।

शोक समाचार

ओमप्रकाशजी बसैये का देहावसान

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री दयारामजी बसैये के भ्राता श्री ओमप्रकाशजी राजारामजी बसैये का छह माह पूर्व हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। मृत्यु के समय वे ७४ वर्ष के थे। उनके पश्चात् पत्नी, तीन पुत्र, एक कन्या, दामाद, बहुएं, दो भाई, पौत्रादि परिवार है। श्री बसैये जी ने अपने शिक्षा काल में २ वर्ष तक गुरुकुल एटा (उ.प्र.) में संस्कृत अध्ययन किया था। सम्भाजीनगर (औ.बाद) के प्रसिद्ध व्यापारी के रूप में वे जाने जाते थे। धार्मिक, मिलनसार एवं कर्तव्य परायण व्यक्तित्त्व के धनी दिवंगत श्री बसैये का सभी के साथ सद्भावपूर्ण व्यवहार था। उनके पार्थिव पर रात्री ८ बजे वैदिक पद्धति से अंतिम संस्कार हुए।

प्रभाकरदेव आर्य चल बसे

आर्य जगत् में वैदिक साहित्य एवं आर्य समाज का साहित्य प्रकाशित करनेवाले सेवाभावी एवं सिद्धांतनिष्ठ प्रकाशक श्री प्रभाकर देवजी आर्य का दि.१ सितम्बर २०२२ को आकस्मिक देहावसान हुआ। वे ६९ वर्ष के थे। उनके पश्चात् परिवार में माताजी, पत्नी, पुत्र, बहु तथा पौत्रादि विद्यमान हैं। हिण्डौन सिटी(राजस्थान) में आर्य समाज के वरिष्ठ कर्मठ कार्यकर्ता के रुप में आपकी अलग पहचान थी। श्री प्रभाकर देवजी ने घूडमल आर्य प्रकाशन संस्था स्थापन कर वैदिक साहित्य प्रकाशित करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज तक कई ऐतिहासिक ग्रन्थों का प्रकाशन कर उन्होंने जो मौलिक साहित्य प्रकाशन सेवा की है, वह निश्चय ही आर्य जगत् में अमर कीर्ति स्थापन करेगी। शान्त, सुस्वभावशील, मितभाषी एवं महर्षि दयानन्द के कट्टर अनुयायी के रूप में वे जाने जाते थे। आर्य समाज के विचारों के संस्कार उन्हें अपने पिता के कारण मिले। वे आर्य समाज हिण्डौन सिटी के प्रधान भी रहे। उनके पार्थिव पर वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये।

श्रीमती वाप्ता का देहावसान

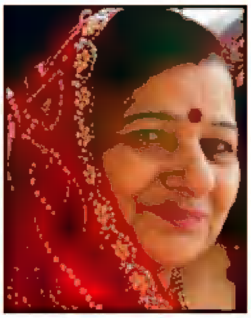

आर्य समाज पिम्परी पुणे के ज्येष्ठ कार्यकर्ता श्री हरिकृष्णजी वाप्ता की धर्मपत्नी सौ.संतोषजी वाप्ता का दि.१५ जुलाई २०२२ को वृद्धावस्था के कारण दुःखद निधन हुआ। वे ७९ वर्ष की थी। उनके पश्चात् पति, पुत्र, पुत्रवधू, पौत्र, कन्या, दामाद, दौहित्रादियों को छोडकर संसार से विदा हुई। माता श्रीमती वाप्ता के पार्थिव पर पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये गये। पिम्परी आर्य समाज के पुरोहित पं.विवेकजी शास्त्री ने यह दाहकर्म पूर्ण किया।

रमेशगीर गिरि का निधन

आर्य विचारों के अनुचर एवं लातूर के कवि श्री सुरेशजी गीर 'सागर' के छोटे भाई श्री रमेश श्यामगीर गिरि का दि.७ अक्टूबर २०२२ को रात्रि में ८.२० बजे हृदयाघात से आकस्मिक निधन हुआ। वे ७० वर्ष के थे। उनके पश्चात् पत्नी, एक पुत्र, एक विवाहित कन्या, दामाद, भाई आदि परिवार है। श्री गीर राज्य परिवहन मंडल में निवृत्त चालक कर्मचारी थे। अपने बडे भाई की प्रेरणा से उन्होंने मनुष्यकृत जातिप्रथा को तोडकर अन्तर्जातीय विवाह किया था।

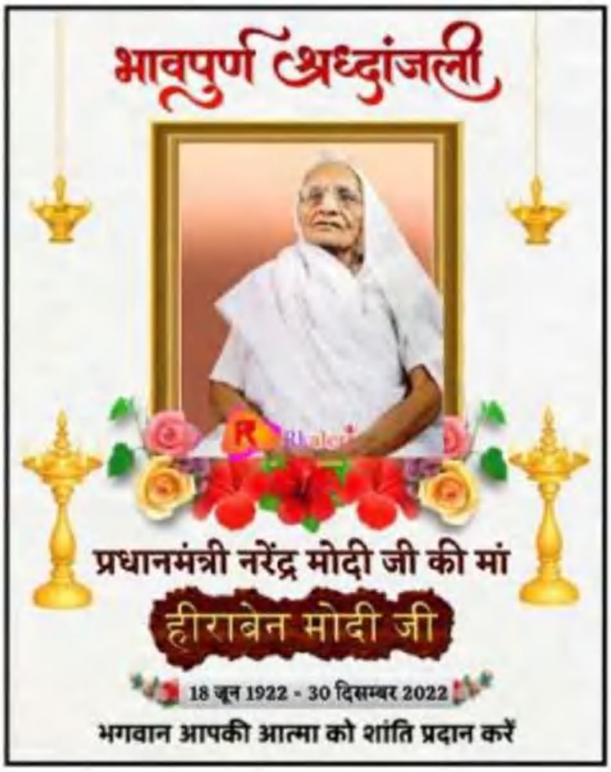

प्रधानमंत्री की माताजी

श्रीमती हीराबेनजी मोदी का देहावसान

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी की माताजी श्रीमती हीराबेनजी मोदी का दि.३० दिसम्बर २०२२ को वृद्धापकालीन अवस्था से देहावसान हुआ। वे सौ वर्ष की थी। कुछ ही दिनों से वे बीमार चल रही थी। अहमदाबाद के यू.एन. मेहता अस्पताल में उन्हें भरती कराया गया था।

माताजी के देहावसान से सारे देश में शोक मनाया गया। इनके पार्थिव पर अत्यंत साधारण रूप में अंतिम संस्कार किये गये। गत १८ जून को इन्होंने अपने जीवन के सौ वर्ष पूरे किये थे। परमपिता परमात्मा से माताजी की शान्ति एवं सद्गति हेतु प्रार्थना..!

प्रा.सोनेरावजी आचार्य को पुत्रशोक

अन्तर्राष्ट्रिय वैदिक विद्वान् प्रा.श्री सोनेरावजी आचार्य के पुत्र श्री भारतभूषणजी का मात्र ३८ वर्ष की अल्पायु में अल्पसी बिमारी के कारण पुणे(महाराष्ट्र) में दि.९ अप्रैल २०२२ को दुःखद निधन हुआ। मृत्यु से लगभग ४-५ महिनों पूर्व से वे पीलिया रोग से पीडित थे। वे अपने पश्चात् माता-पिता, ३ बहनों को छोड संसार से विदा हो गये। उनके पार्थिव शरीर पर दूसरे दिन आचार्य पं.अविनाशजी शास्त्री द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से अन्तिम संस्कार किये। दिवंगत श्री भारतभूषण स्थानिक कम्पनी में अभियन्ता पर कार्यरत थे। पुत्र के आकस्मिक निधन से प्रा.सोनेरावजी के परिवार पर वज्रपात हुआ है। ईश्वर उन्हें यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

हरिप्रसादजी गुप्ता को पत्नीशोक

आर्य समाज मालेगांव जि.नाशिक के प्रधान श्री हरिप्रसादजी गुप्ता की धर्मपत्नी सौ.सवितादेवी का दि.०६ दिसम्बर २०२२ को हृदयगति रुक जाने से दुखद निधन हुआ। उनकी आयु ६४ वर्ष की थी। दुर्भाग्य से दो वर्ष पूर्व ही उनके एकलौते पुत्र का आकस्मिक देहावसान हुआ था। अब वे अपने पश्चात् पति, दो विवाहित पुत्रियां, दामाद, दौहित्रादि परिवार को छोडकर इस संसार से विदा हुई। गुप्ता दम्पती अपने रिश्तेदारों के विवाह हेतु मालेगांव से उत्तरप्रदेश चले गये थे। वहीं पर यह दुर्घटना हुई।

दिवंगत सौ.सवितादेवी में आदर्श गृहिणी के आतिथ्यसेवा, स्नेहशीलता, मिलनसारिता, सहनशीलता आदि सभी गुण समाहित थे। उनके चले जाने से श्री गुप्ताजी पर दुख का पहाड टूट पडा है। संकट की इस घडी में परमात्मा उन्हें शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें। महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा के प्रधान श्री योगमुनिजी ने मालेगांव पहुंचकर श्री गुप्ताजी को सांत्वना दी। तथा शोकसंवेदना प्रकट कर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धान्जलि समर्पित की।

।।ओ३म्।।

माझा मराठीची बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें। मेळवीन।। (संत ज्ञानेश्वर)

* मराठी विभाग *

* उपनिषद संदेश *

ईश्वर व जीवात्म्याचे लक्षण

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

अर्थ – परमात्मा कधीही उत्पन्न होत नाही. तो कधीही मरत नाही. सर्वज्ञ असा परमेश्वर इतर कोणांद्वारेही उत्पन्न होत नाही. म्हणजेच याचे कोणीही कारण असू शकत नाही. तसेच आत्मा हा देखील जन्मविरहित, नाशहीन, शाश्वत, अनादी आहे. तसेच तो पुरातन असूनही नेहमीच एकरस व नवीन असतो. या नाशवंत शरीरात हा कधीही मारला जाऊ शकत नाही.

(कठोपनिषद–२/१८)

* दयानंद वाणी *

देशाच्या अधोगतीची कारणे

स्वायंभुव राजापासून ते पांडवांपर्यंत या भूमंडळावर आर्यांचे एकछत्री राज्य होते. त्यानंतर येथील राजे आपसातील विरोधामुळे एकमेकांशी लढून नष्ट झाले आणि आर्यांचे चक्रवर्ती राज्य संपुष्टात आले. परमेश्वराच्या या सृष्टीमध्ये अहंकारी, अन्यायी, अविद्वान लोकांचे राज्य फार काळ टिकत नसते. जगाची ही स्वाभाविक प्रवृत्ती आहे की, जेव्हा एखाद्या लोकसमूहात किंवा देशात लोकांच्या गरजेपेक्षा जास्त धन जमा होते, तेंव्हा आळस, पुरुषार्थहीनता, ईर्ष्या, द्वेष, विषयासक्ती आणि प्रमाद वाढू लागतात. त्यामुळे देशात विद्या व सुशिक्षण ही नष्ट होऊन मद्यमांस–सेवन, बाल्यावस्थेत विवाह, स्वैराचार वगैरे सारखे दुर्गुण व व्यसने वाढतात. तसेच जेंव्हा युद्धविभाग, युद्धविद्याकौशल्य आणि सैन्य इतके प्रचंड वाढते की, त्याच्यासमोर जगातील कोणताही देश टिकाव धरू शकत नाही, तेंव्हा त्या सामर्थ्यशाली देशाच्या लोकांमध्ये पक्षपात, अहंकार यामुळे अन्याय, अत्याचार या गोष्टी वाढतात. हे दोष प्रमाणाबाहेर वाढले की, त्यांच्यात यादवी सुरु होऊन त्यांचा नाश होतो किंवा त्यांच्या बाहेरच्या एखाद्या लहानशा गटातून एक अत्यंत समर्थ पुरुष उदयाला येतो आणि तो त्यांचा पराभव करतो. उदाहरणार्थ, मुसलमान बादशहांच्या सत्तेविरुद्ध शिवाजी व गुरु गोविंदसिंह दंड ठोकून उभे राहिले आणि त्यांनी मुसलमानी सत्ता धुळीला मिळविली.

(सत्यार्थ प्रकाश, अकरावा समुल्लास)

व्रतपती व्हा...!

- पं.राजवीर शास्त्री

एका अविवाहित अभिनेत्रीला विचारण्यात आले की, तुम्हाला कसा पती अपेक्षित आहे ? बोलणारा की ऐकणारा? ती म्हणाली 'माझे ऐकणारा पती मला हवा! कारण मला बोलायला फार आवडते. ऐकायला आवडत नाही.' अगदी अशीच सर्वत्र सर्वांची मानसिकता बनत चालली आहे. त्यामुळे परिवार असो की सामाजिक संस्था! धार्मिक संघटना असो की राजकीय पक्ष! यातला सुसंवाद-परिसंवाद संपुष्टात येत असून त्याऐवजी त्या ठिकाणी वादावादी, आरोप-प्रत्यारोप आणि वार-पलटवार असे प्रकार चालू आहेत. एकमेकांचा बदला घेणे, एकमेकांवर कुरघोडी करणे अशा गोष्टींमुळे सामाजिक वातावरण दूषित होत चालले आहे. कोणी कोणाचे ऐकणारच नसेल, तर सुधारणा कोण, कोणाची व कशी करायची ? हाच देशरक्षकांसमोर आणि धर्म व संस्कृतीच्या रक्षकांसमोर चिंतेचा विषय बनला आहे.

मला असे वाटते की, लोक(श्रोते) ऐकून तर घेतात, पण त्यावर विचार करीत नाहीत. त्यासाठीच चिंतन-मनन-निदिध्यासन करणे गरजेचे आहे. परिणामी त्यामुळे चांगल्या गोष्टी त्यांच्या आचरणात येत नाहीत. चांगले विचार सर्वांनाच आवडतात. अलीकडे वाट्सअपवर वाचताना 'सैतानामुखी बायबल' ही म्हण मला का आठवली कुणास ठावूक?

एका मराठी साहित्यिकाने अगदी बरोबर लिहिले आहे. तो म्हणतो, 'आपला देश ज्ञानाच्या अभावाने कंगाल झाला नाही. त्याच्या भिकारपणाचे मूळ त्याच्या दरिद्री आचरणात आहे.' दरिद्री आचरण म्हणजे दुराचरण, भ्रष्ट आचरण, अधर्माचरण अन्याय व पक्षपाती आचरण, असत्याचरण! आणि हे कशासाठी ? तर पद, पैसा, प्रतिष्ठा व प्रसिद्धी मिळविण्यासाठी! स्वार्थाचे पोषण करण्यासाठी, अहंकाराला पुष्ट करण्यासाठी! परंतु हे लक्षात ठेवा मित्रांनो! अधर्म व अन्यायाने मिळविलेली कोणतीही गोष्ट तुम्हाला सुख, शांती व यश देऊ शकत नाही. काहीही करून मिळवलेले पद, पैसा व प्रसिद्धी आदींना जीवनाची सफलता म्हणता येत नाही. ही जीवनाची इतिश्री नव्हे!

मित्रांनो! कुठे आपण सरस, सुगंधित व सुंदर फुले वेचायला इथे आलो होतो. फुलांसारखे फूल बनून इतरांना सुगंधित, शोभिवंत व प्रसन्न करायचे होते. ते तर दूरच राहिले. उलट आपण स्वतः काट्यात गुरफटले जात आहोत. इतरांच्या पायातले काटे बनत चाललो आहोत. आपली वाट स्मशानाच्या दिशेने चालली आहे. आपली दिशा चुकली आहे. याकरिता वेळीच भानावर यावे लागेल. सत्य, धर्म, प्रामाणिकपणा, मर्यादा, माणुसकी व नैतिकता या मूल्यांना तुम्ही स्वतःच्या उन्नती व विकास मार्गावरील अडथळा समजता. पण हा विचारच दुर्दैवी आहे. चुकीचा आहे.

ही बाब आपण एका उदाहरणावरून समजून घेवू या! पतंग उडवित असलेल्या एका व्यक्तीला त्याच्या मुलाने म्हटले- 'बाबा! त्याला का रोखता? दोरी सोडा. जाऊ द्या त्याला मुक्तपणे ऊंच आकाशात! वडिलांनी दोर सोडला. तसा तो पतंग ऊंच वर न जाता गिरठ्या मारत खाली आला. आणि काटेरी झाडात अडकून फाटून गेला. हे मुलाने पाहिलं. तेंव्हा त्याला वडिलांनी विचारलं 'आता सांग! उन्नती कशात आहे?' वडिलांनी समजावलं. 'बाळा शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नतीसाठी सत्य, ईमानदारी, धर्म, संस्कृती, यम-नियम व मर्यादा या गोष्टींचे बंधन गरजेचे आहे.' या बंधनातच उन्नती व विकासाची शोभा आहे, स्थिरता आहे.

महर्षी दयानंदांच्या मते, 'सत्यानुकूल, न्यायानुकूल व पक्षपात रहित व्यवहाराचे नाव धर्म आहे.' म्हणजे धर्म हा व्यवहाराचा विषय आहे. तो मंदिर-मस्जिद व चर्च चा विषय नाही. व्यवहार बिघडला की धर्म बिघडतो.

संस्कृती बिघडते. संस्कृती बिघडली की राष्ट्र बिघडते. व्यवहार सुधारणे हीच खरी धार्मिकता आहे. हीच खरी उपासना आहे. 'आदत बुरी सुधार ले, बस हो गया भजन!' आपला स्वार्थ साधण्यासाठी आपण धर्म व संस्कृतीशी फारकत घेण्याचे महापातक करु नये. सर्वांच्या उन्नतीत आपली उन्नती शोधायला शिकू या. सुपथगामी होऊन कल्याणमार्गाचे पथिक बनू या. प्रकाशाच्या वाटेवरचे वाटसरु होऊन अमृतानंदाचे यात्रेकरु होऊ या. हा धर्मशास्त्राचा संदेश पाळण्यातच मानवी जीवनाची सार्थकता आहे. मनुष्याच्या जीवनाचे अंतिम लक्ष्य संपत्ती, सत्ता व प्रतिष्ठा हे नसून सत्य (धर्म व ईश्वर) प्राप्ती हेच आहे. जो अंतिम ध्येयावर डोळा ठेवून धर्माचरण करतो, धर्मपूर्वक धन-संपत्ती मिळवतो व इष्टकामना पूर्तीसाठी प्रयत्न करतो. तोच दुःखातून मुक्त होतो. तोच सुखी, शांत व समाधानी होतो. त्याचेच जीवन खऱ्या अर्थाने सफल मानले जाते.

महर्षी दयानंदांचे ऐन दिवाळीत अमावस्येला निर्वाण झाले. त्यांनी वेदज्ञान प्रचाराचे अभूतपुर्व कार्य केले आहे. आता आम्हा अनुयायांचे कर्तव्य आहे की, स्वामीजींच्या वेदज्ञान प्रचार कार्याचे स्वप्न पूर्ण करणे. वेदज्ञानानुसार आम्ही आमचे समग्र जीवन व्यतीत करणे आणि इतरांनाही त्याकरिता प्रेरणा देणे, हाच आर्यजनांचा खरा धर्म आहे. याकरिता 'स्वयं आर्य बनो व अन्यों को आर्य बनाओ!' हे व्रत धारण करणे गरजेचे आहे.खरे तर आपल्या शिव संकल्पांवर दृढ निश्चयी असणे, याचे नाव व्रत आहे. व्रत म्हणजे संकल्प, प्रतिज्ञा किंवा शपथ! आता प्रश्न आहे- 'कोणते व्रत घ्यावे?'योगदर्शनमध्ये-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य व अपरिहग्रह या यमांना महाव्रत म्हटले आहे.

मनुस्मृती वगैरे ग्रंथामध्ये पंचमहायज्ञ, सत्संग, स्वाध्याय, दान, सेवा, अर्थशुचिता, यम-नियमांचे पालन, सत्य व प्रिय बोलणे, दुर्गुण-दुर्व्यसनांचा त्याग, काम-क्रोध लोभाचा त्याग, निरोगी राहणे असे अनेक व्रत सांगितले गेले आहेत. परंतू वेदामध्ये ब्रह्मचर्य व्रताला प्रमुखता दिली गेली आहे. शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक आणि सर्वांच्याच रोगांना हमखास दूर करणारी ब्रह्मचर्य ही महाऔषधी आहे. ब्रह्मचर्याचे व्रत घेणे म्हणजे जन्मभर अविवाहित राहणे. एवढा संकुचित अर्थ नाही. ब्रह्मचर्य पालन करणे म्हणजे-वीर्यरक्षण करणे, जितेन्द्रिय बनणे, मनावर संयम ठेवणे, वेदविद्या संपादन करणे, तपस्वी बनणे, कर्मशील बनणे, ईश्वराची उपासना करण्यात रममाण होणे, अष्टांगयोगाचे पालन करणे, वेदानुकूल व्यवहार करणे, वर्णाश्रम व्यवस्थेचे पालन करणे अशा अनेक गोष्टी **'ब्रह्मचर्य'** या शब्दात सामावलेल्या आहेत. या अर्थाने विचार केल्यास ब्रह्मचर्याच्या व्रताने व्यष्टी आणि समष्टी या सर्वांचेच कल्याण होते. हे ब्रह्मचर्य व्रतच त्या ब्रह्मरुप ईश्वराच्या जवळ जाण्यास उपयुक्त ठरणारे आहे. म्हणून म्हटले आहे - **'व्रतं कृणुतः।'** व्रती बना, व्रत धारण करा! वडिलांनी व्रत धारण केले, तर पुत्रांना त्यांचे अनुव्रती होणे सहज शक्य होते. पती जर व्रती असेल, तर पत्नीला पतिव्रता होता येते. **'पतिचिया मता, अनुसरोनि पतिव्रता। अनायासे आत्महिता, साधि चिते।।'**(संत ज्ञानेश्वर)

आचार्य व्रतधारी असेल तरच **'मम व्रते ते हृदयं दधामि...।'** ही आचार्यांची प्रतिज्ञा सुसंगत होईल. व्रत हा एक शक्ती उत्पादक अग्नी आहे. या शक्तीच्या जोरावरच व्यक्ती आपल्या जीवनात महान कार्य करु शकते. ती महापुरुष म्हणविली जाते. म्हणूनच महापुरुष ज्या मार्गाने गेले. त्याच मार्गाने तुम्हीही जा! असे शास्त्रकार सांगतात. **'महाजनो येन गतः स पन्था।'** धनुर्धारी मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, सुदर्शनधारी योगेश्वर श्रीकृष्ण, छत्रपती शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, महर्षी दयानंद, स्वामी श्रद्धानंद, पं.लेखराम गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला लाजपतराय, लोकमान्य टिळक, वीर सावरकर, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, छत्रपती शाहू महाराज, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर अशी खूप यादी देता येईल. हे सर्वजण शिवव्रतधारी होते. तेंव्हा मित्रांनो! व्रत घ्या. **'व्रतमिति कर्मनाम!'** व्रतानुसार कामाला लागा. नाही तर देश, धर्म व संस्कृतीचा विनाश व्हायला वेळ लागणार नाही. आणि याच गोष्टी नसतील, तर तुम्ही कुठे असाल? कितीही पोटतिडकीने सांगा, पण लोक ऐकत नाही. ही माझी तक्रार खरी ठरवायची की खोटी ठरवायची? हे काम तुमच्यावर सोपवितो.

- आर्य समाज, बुधवार पेठ, सोलापुर

मो.९८२२९९००११

स्वातंत्र्याचा अमृतमहोत्सव आणि आपण!

- प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी

१५ ऑगस्ट १९४७ रोजी भारताला स्वातंत्र्य मिळाले. या घटनेला ७५ वर्षे पूर्ण झाली. स्वातंत्र्य मिळण्यापूर्वी दीर्घ काळापासून आपला देश पारतंत्र्यात होता. त्यामुळे आपल्या देशातील बहुसंख्य लोक राष्ट्रीय भावनेपासून खूपच दूर होते. स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतरही ही भावना टिकून आहे. समाज म्हणून आपण कमालीच्या नकारात्मक पद्धतीने विचार करीत होतो. 'मला काय त्याचे?' ही नकारात्मक दृष्टी आपल्यामध्ये रुजली होती. 'कोणी आले तरी काही फरक पडणार नाही. हे असच चालणारच. आपल्या परिस्थितीत काहीही सुधारणा होऊ शकत नाही!' अशी आपली मानसिकता होती. 'मी राष्ट्रासाठी काय केले पाहिजे ?' या ऐवजी 'राष्ट्राने माझ्यासाठी काय केले?' ही स्वार्थी भावना आपल्यामध्ये भिनलेली आहे.

गेल्या काही वर्षांपासून ह्या मानसिकतेत बदल होऊ लागला आहे. आपण सर्वांनी मिळून ठरवलं व त्या दिशेने सामूहिक प्रयत्न केले, तर बदल निश्चित करू शकतो, हा विश्वास येत गेला. 'स्वच्छ भारत अभियान' ही त्याची सुरुवात होती. कोविड काळात अनेक कुटुंबांना अन्नसुरक्षा, स्वदेशी कोविड प्रतिबंधक लसीचे यशस्वी उत्पादन, गंगेचे पुनरुज्जीवन, शेती उत्पादनातील वाढ, लघु, मध्यम व ग्रामीण उद्योगांना चालना, स्वयं रोजगार देणाऱ्या योजना, अशा अनेक उपक्रमांच्या माध्यमातून हा विश्वास वाढत गेला. 'आपल्याला हवे असलेले बदल घडवण्यात आपलाही वाटा आहे आणि आपण त्या दृष्टीने खूप काही करू शकतो.' हा विश्वास सर्वसामान्य माणसाच्या मनात जागा होऊ लागला. ही सकारात्मक बाब आपल्या देशाच्या उज्ज्वल भवितव्याच्या दृष्टीने आशादायक आहे.

स्वातंत्र्याचा 'अमृत महोत्सव' हा उत्सव केवळ शासकीय पातळीवर राहू नये. सर्व समाज त्यात सहभागी झाला पाहिजे, या उद्देश्याने आपल्या पंतप्रधानांनी 'हर घर तिरंगा' ही घोषणा केली आणि घराघरावर तिरंगा फडकावून स्वातंत्र्याचा अमृतमहोत्सव साजरा करावा, असे आवाहन केले. आपण सर्वांनी त्या आवाहनाला अभूतपूर्व प्रतिसाद दिला. त्याचबरोबर पुढच्या पंचवीस वर्षांनंतर जेंव्हा स्वातंत्र्याची शतकपूर्ती होईल. त्यावेळेला भारत जागतिक महासत्ता बनलेला असेल. यासाठी सर्व प्रकारे प्रयत्न करण्याचा संकल्प देखील पण सर्वांनी केला. राष्ट्रनिर्मिती, राष्ट्राची उभारणी हे काही फक्त चार दोन नेत्यांचे किंवा केवळ राजकीय पक्षांचे काम नाही. त्यात सर्व समाजाचा सहभाग असावा लागतो. संपूर्ण समाजाच्या सक्रीय सहभागातूनच राष्ट्रनिर्मिती, राष्ट्रउभारणी होत असते. समाजाचा असा सहभाग वेगवेगळ्या सामूहिक उपक्रमांतून मिळत असतो. राष्ट्राच्या जडणघडणीसाठी आवश्यक असलेले सामूहिक मानस अशा उपक्रमांमधून तयार होते. 'हर घर तिरंगा' हा असाच एक सामूहिक उपक्रम होता.

सामाजिक उत्थानासाठी प्रत्येकाने आपल्या प्रयत्नांची छोटीशी पणती लावली, तर देशाच्या कानाकोपऱ्यातील अंधःकार हां-हां म्हणता नाहीसा होईल.

भारतात सकारात्मक बदल घडवण्यात आपलाही वाटा आहे आणि आपण त्याबाबतीत खूप काही करू शकतो हा विश्वा सर्वसामान्य माणसाच्या मनात जागा होऊ लागला आहे. 'सगळे सरकारने करावे!' या अपेक्षेपेक्षा ही जाणीव आपला देशाच्या भविष्याच्या दृष्टीने खूपच आश्वासक आहे.

आपण ज्या समाजात व देशात राहतो, त्या समाजाचे व देशाचे आपल्यावर ऋण आहेत. त्या ऋणाची परतफेड करण्याची भावना मनात बाळगून आपण कर्तव्य पालन करीत राहिलो, तर आपल्या देशाला चांगले दिवस येण्यासाठी जास्त वेळ लागणार नाही.

- नांदेड नाका, उदगीर

भ्रमणध्वनी-९४२२६१०३१३

हैदराबाद स्वातंत्र्य लढ्यात आर्य समाजाचे योगदान

- सुभाष वेदपाठक (निवृत्त अभियंता)

इ.स.१८७५ मध्ये मुंबई येथे महर्षी दयानंद सरस्वतींनी आर्य समाजाची स्थापना केली. याचा हेतू अत्यंत उदात्त होता. विशुद्ध वेदज्ञानाच्या माध्यमाने समस्त विश्वातील मानवांचे कल्याण व शांततेची प्रस्थापना, हा यामागचा उद्देश होता. हैदराबादमध्ये आर्य समाजाची स्थापना इ.स.१८९२ मध्ये झाली. मराठवाड्यात अनेक ठिकाणी आर्य समाज स्थापन झाले. हैदराबाद संस्थानामध्ये मराठवाडा, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश हा भाग समाविष्ट होता. हैदराबाद संस्थानावर निझामाची सत्ता चालत होती. देशात ५६५ च्या वर संस्थाने होती. त्यामध्ये हैदराबाद संस्थान हे सर्वात मोठे होते. या संस्थानात आसफिया घराण्याचे राज्य इ.स.१७२४ ते इ.स.१९४८ पर्यंत अबाधित म्हणजे २२५ वर्ष चालले. सहावा निझाम मीर मेहबूब अली याने इ.स.१८६९ ते १९११ पर्यंत राज्य केले. सातवा व शेवटचा निझाम याने इ.स.१९११ ते १९४८ पर्यंत राज्य केले. सहावा निझाम याने जातिभेद केला नाही. सर्व राज्यात सर्वांना समान लेखले जात होते. त्या काळी प्रजेमध्ये असंतोष नव्हता.

सातवा निझाम मीर उस्मान अली खाँ याने मात्र धोरण बदलले. तो जातिभेद वाढवू लागला. हिंदु-मुसलमान यांना वेगळी वागणूक देऊ लागला. हिंदूवर अत्यावर सुरु झाले. बळजबरीने धर्मांतरण सुरु केले. हिंदूच्या सणांसाठी परवानगी घ्यावी लागे, तसेच मंदिरात व्याख्यान असेल तर प्रथम मसुदा मंजूर करून घ्यावा लागे. आर्यसमाजी लोकांच्या हवन, यज्ञावर बंदी घातली. यज्ञकुंड तोडले जात होते. महर्षी दयानंद कृत ग्रंथ'**सत्यार्थ प्रकाशा**'वर बंदी घातली. कुणी तो ग्रंथ वाचत असल्याचे समजले, तर त्यास सजा व्हायची. आया बहिणींची अब्रू लुटत. हे असले अत्याचार गांवागावातून होत असत. या कार्यास निझामाकडून पाठबळ मिळत होते. हिंदू, आर्य समाजी जनता अत्याचारात भरडली जात होती. यांना कोणीही वाली नव्हता. अशा बिकट परिस्थितीमध्ये आर्यसमाजाने या अत्याचारास वाचा फोडण्याचे काम केले. हैदराबाद येथे पं.नरेंद्रजी, पं.विनायकराव विद्यालंकार यांनी आर्यसमाजाच्या माध्यमातून आवाज बुलंद केला. पं.नरेंद्रजी म्हणतात- '८२ हजार चौरस मैलाचा हैदराबाद एक मोठा तुरुंग बनलेला आहे.' कल्पना करा, किती भीषण असेल ती परिस्थिती!

महर्षि दयानंद म्हणतात- 'अन्याय करणाऱ्यापेक्षा अन्याय सहन करणारा जास्त पापी असतो.' अन्यायाचा प्रतिकार करण्याचे शस्त्र महर्षी दयानंदांनी दिल्यामुळे आर्य समाज शांत बसू शकत नव्हता. लोक रझाकाराच्या अत्याचाराने भयभीत होत गेले, तसतसे कासिम रझवीला एक राक्षसी बळ प्राप्त होत गेले. पुढे चालून तर तो लाल किल्ल्यावर आसफशाही वंशाचा झेंडा फडकविण्याची भाषा बोलू लागला.

१९३८ सोलापूर सम्मेलन-

१९३८ मध्ये सोलापूर येथे झालेल्या विराट संमेलनात या अन्यायाच्या विरुद्ध सत्याग्रह पुकारण्याचे ठरले.हा सत्याग्रह राज्यात होणाऱ्या अन्याय, अत्याचाराविरुद्ध एक प्रतिक्रियात्मक आंदोलन होते. हा अभुतपूर्व आर्य सत्याग्रह जानेवारी १९३९ मध्ये सुरु झाला व ७ ऑगस्ट १९३९ रोजी संपला. या आठ महिन्यांच्या प्रदीर्घ कालावधीत हजारो आर्यांनी सहभाग घेतला. हैदराबादचे सर्व जेलखाने सत्याग्रहींनी खचाखच भरले. त्यामुळे निझामाला नवीन जेल बांधावी लागली. देशाच्या अनेक प्रांतातून हा लोंढा चालू होता. सर्व धर्मांच्या लोकांचा यात सहभाग होता. कित्येक मुसलमान लोकही या सत्याग्रहात सहभागी होते.

ऑगस्ट १९३९ मध्ये निझामाने आर्य समाजाच्या जवळपास सर्व मागण्या मान्य केल्या, हा मोठा विजय भविष्यासाठी फलदायी ठरला. अनेकांनी याबद्दल कौतुक

व अभिनंदनपर संदेश दिले. यामध्ये पं.जवाहरलाल नेहरु, डॉ.राजेंद्र प्रसाद, लोकनायक अणे आदींचा समावेश होता. अनेक वृत्तपत्रांचे शुभ संदेश आले. त्यात दैनिक द्रिग्विजय सोलापूर, हिन्दुस्तान टाइम्स, दैनिक हिन्दुस्तान दिल्ली, नॅशनल हेरॉल्ड, हिन्दी मिलाप, ट्रिब्यूनल लाहोर पत्र, फ्रिप्रेस जर्नल मुंबई इ. होत.

आर्य हुतात्म्यांनी रचला पाया–

हैदराबाद संस्थानाचा पाया खिळखिळा करण्यासाठी ज्यांनी आपले प्राण समर्पित केले. त्या आर्य हुतात्म्यांनीच हैदराबाद स्वातंत्र्य भवनाचा पाया रचला. त्यांनीच संस्थानातील जनतेस धार्मिक आणि नागरी हक्क मिळवून देण्यासाठी आपल्या प्राणाची आहुती दिली.

सत्याग्रहींना तुरुंगात अनंत यातना दिल्या, मेहनतीची कामे करवून घेतली. मात्र जेवण निकृष्ट दिले जात असे. कधी–कधी भाकरीत राख, सिमेंट, वाळू, काचेचे तुकडे असायचे. या सत्याग्रहात ४५ कार्यकर्ते व आर्य सत्याग्रही निझाम शासनाच्या अत्याचाराने शहीद झाले. या व्यतिरिक्त असे अनेक अज्ञात लोक आहेत, जे की निझामाच्या अत्याचाराचे बळी ठरले.

महाराष्ट्राचे प्रसिद्ध साहित्य समीक्षक स्व.नरहर कुरुंदकर लिहितात, 'आजचे तथाकथित नेते आर्य समाजाचे ऋण स्पष्टपणे व्यक्त करीत नाहीत. परंतु हैदराबाद मुक्ती संग्रामाच्या काळात जनजागृतीचे कार्य आणि रझाकारांच्या अत्याचाराचा प्रतिकार करण्याची कामगिरी आर्य समाजानेच केली. अत्याचारी शासनाच्या विरोधात आरंभापासून ते शेवटपर्यंत आर्यसमाज एक सर्वात बलाढ्य शक्ती होती.'

आर्य सत्याग्रहास स्वातंत्र्यवीर सावकरांचा संपूर्ण पाठिंबा होता. हिंदू महासभा ही सत्याग्रहात सहभागी होती. महात्मा गांधींजीने एका पत्रकार परिषदेत सांगितले की, या सत्याग्रहास माझा पाठिंबाच नाही, तर समर्थन देखील आहे. भेकडा प्रमाणे पळून जाण्याऐवजी हातात शस्त्र घेऊन कॉंग्रेस कार्यकर्ते निजाम सरकारशी संघर्ष करीत आहेत,असे करणे माझ्या अहिंसामूलक तत्त्वात बसणार आहे.'

पं.नेहरु म्हणतात– 'हैदराबाद राज्यात अनागोंदी पसरली आहे. इथे आल्यास माझा जीव गुदमरतो.' स्व.नरहरी कुरुंदकर म्हणतात– 'सर्वप्रथम हैदराबादेत संघर्षाची सुरुवात आर्यसमाजाने केली. १९४७–४८ च्या मुक्ती लढ्यात स्टेट कॉंग्रेस आणि आर्य समाजाने खांद्याला खांदा लावून या सांप्रदायिक सत्तेशी संघर्ष केला.' मौ.सय्यद तिरमिजी म्हणतात– 'आसफिया घराण्यातील शेवटचा निजाम मीर उस्मान अली खान यापेक्षा मला सरदार भगतसिंह हे अधिक जवळचे वाटतात.'

१५ ऑगस्ट १९४७ ला देश स्वतंत्र झाला, पण हैदराबाद संस्थान भारतात विलीन होत नव्हते. या संस्थानातील जनता त्या दिवसाची आतुरतेने वाट पाहत होती, जेंव्हा ते स्वातंत्र्याच्या मोकळ्या हवेत श्वास घेतील! सर्व प्रयत्न संपल्यानंतर भारताचे गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल यांनी पोलीस ॲक्शन केली. १३ सप्टेंबर १९४८ ते १७ सप्टेंबर १९४८ या १०९ तासांच्या आक्रमक लढाईत निझामाला शरण येण्यास भाग पाडले. १७ सप्टेंबर १९४८ रोजी दु.१.३०वा. निझामाने शरणागती पत्करली व हैदराबाद संस्थान भारतात विलीन झाले. सरदार वल्लभभाई पटेल म्हणतात, आर्य सत्याग्रहाने पृष्ठभूमी तयार केल्याने एवढ्या कमी कालावधीत आम्हाला हे यश मिळाले आहे. या लढ्यात आर्यनेते पं.नरेंद्रजी, पं.विनायकराव विद्यालंकार, भाई श्यामलाल, भाई बन्सीलाल, ॲड.शेषरावजी वाघमारे अशा अनेकांनी महत्त्वपूर्ण भूमिका बजावली. कित्येक आर्य सन्यासी पं.रामचंद्र देहलवी, महात्मा नारायण स्वामी, पं.बुद्धदेव विद्यालंकार, स्वामी स्वतंत्रानंदजी इत्यादींनी प्रत्यक्ष सहभाग घेतला. गुंजोटीचे वेदप्रकाश, भाई श्यामालाल आर्य, महादेवजी अंबुलगा, रामा मांग आर्य (तावशीगड), भीमराव, धर्मप्रकाश, सत्यनारायण (अंबुलगा), अर्जुनसिंह (कन्नड) यांना ठार मारण्यात आले. देशाच्या स्वातंत्र्य लढ्यात ही आर्य क्रांतिकारकांचे व आर्यसमाजी लोकांचे फार मोठे योगदान होते.

– ३१, जयनगर, न्यू उस्मानपुरा, छ.संभाजीनगर

मो.९४२१७०६७७५

आयुर्वेद परिचय

- वैद्य विज्ञानमुनी

आयुर्वेद हे भारताचे प्राचीन चिकित्सा विज्ञान आहे. आयुर्वेद-चिकित्साच पूर्ण निरोगी शरीर ठेवू शकते. आयुर्वेदाचे प्रणेते ऋषिमुनी हे रोग झाल्यानंतर त्याची चिकित्सा करण्याऐवजी रोगच होऊ नये, याकडे मुख्यत्वे ध्यान देत असत. यावरून असे दिसून येते की हे एक वेगळे विज्ञान आहे. त्याचे नाव 'स्वस्थवृत्त' आहे.

आयुर्वेद केवळ रोगी माणसाचीच चिकित्सा करत नाही. तर मानवाचा परम उद्देश्य आत्मानंदाच्या-मोक्षाच्या-चिकित्सेचाही उपाय सांगतो. महर्षी सुश्रुताचार्यांनी आपल्या संहितेमध्ये स्वस्थ पुरुषांचे लक्षण याप्रमाणे केले आहे-

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियाः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

(सुश्रुत-सूत्रस्थान १५/४५)

ज्या मनुष्याचे वात, पित्त, कफ हे त्रिदोष सम अवस्थेत, त्याचबरोबर रस, रक्त,मांस, मेद, अस्थी, मज्जा व शुक्र/रज या सप्त धातूंची क्रियाही सम अवस्थेत असते शरीरातील मळ, मूत्र, पुरीष(शौचाचा मल), घाम, बेडके इत्यादी आपापल्या परीने सहज विसर्जित होतात, आणि ज्या व्यक्तीचा आत्मा, इंद्रिये व मन प्रसन्न असते, त्याला आयुर्वेद 'स्वस्थ' अर्थात निरोगी मानतो.

महर्षी सुश्रुताचार्यांनी अष्टांग-आयुर्वेदाचे निरूपण केले आहे. त्यात शल्य, शालाक्य, कायाचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभृत्यम्, अगतन्त्रम् व वाजीकरण यांचा समावेश होतो. महर्षी चरकाचार्यांनी खालील शब्दांत आयुष्य आणि आयुर्वेदाची परिभाषा सांगितली आहे.

हिताहित-सुखदुःखमायुस्तस्य हिताहितम्।
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते।।

(चरक सू.१/४१)

ज्या शास्त्रामध्ये हितकारक व अहितकारक आयुष्य, सुखकारक व दुःखकारक आयुष्य व आयुष्याचे हितकारक व अहितकारक मान-प्रमाण यांचे ज्ञान प्राप्त होते, त्याला 'आयुर्वेद' असे म्हणतात.

आचार्य चरक हे सात्त्विक व राजसिक चिकित्सेचे समर्थक आहेत, तर आचार्य सुश्रुत हे शल्य(शस्त्रक्रिया) चिकित्सेचे समर्थक आहेत. आयुर्वेदात नाडीज्ञानाचे पूर्वरुप, रुप व संप्राप्ती इत्यादींचे ज्ञान आहे. तसेच शोधन, शमन, ब्रहण, आहार, व्यायाम, ब्रह्मचर्य, पंचकर्म, षड्रस, औषधी ज्ञान, प्राणायामाचे ज्ञान, रोगाच्या अष्टविध परीक्षेचे ज्ञान आहे. तसेच साध्य, असाध्य व कष्टसाध्य रोग ओळखण्याचे ज्ञानही आहे.

आयुर्वेदात काष्ठौषधी व रस-रसायनांचा प्रयोग होतो. पण ॲलोपॅथी तज्ज्ञ रस-रसायन, भस्म चिकित्सा मानत नाहीत. ते रसायन-पारा, सुवर्ण, रजत, ताम्र, नाग, वंग, यशद, लोह हे विषारी आहेत, असे मानतात. हे विषारी असले तरी त्यांचे मारण-जारण, घर्षण-मर्दन, पूट इत्यादी करून चिकित्सेसाठी उपयोगात आणतात. त्यात ते यशस्वीही झाले आहेत.

जेव्हा ॲलोपॅथी तज्ज्ञांनी रक्ताचे परीक्षण केले, तेंव्हा त्यांना रक्तात लोहकण मिळाले. वीर्याचे परीक्षण केल्यास त्यात त्यांना सुवर्णकण दिसून आले. तेंव्हापासून ते आता औषधात ऑक्साईड वापरु लागले आहेत. आयुर्वेदीय लौहभस्माचा विरोध त्यांनी बंद केला आहे. आयुर्वेदाच्या या रस-रसायनांनी कष्टसाध्य रोगी बरे होतात. हे आयुर्वेद तज्ज्ञांनी सिद्ध करून दाखवले आहे.

भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा पद्धती ही हजारो वर्षांपासून परीक्षित आणि प्रमाणित विज्ञान आहे. आयुर्वेदाच्या आचार्यांनी परीक्षणानंतर मानव चिकित्सा विज्ञान या रुपात प्रतिष्ठापित केले आहे. ते पूर्णतः वैज्ञानिक आहे. औषधांचा आनुषंगिक परिणाम (साईड इफेक्ट) होत नाही.

- संजीवनी आरोग्य मंदिर,
श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम, परळी-वै. जि.बीड
मो.९९७५३७५७११

श्रावणी महोत्सव

यज्ञ, भजन, प्रवचनांनी वातावरण बनले अध्यात्ममय

महाराष्ट्रात सर्वत्र दरवळला वेदज्ञानाचा परिमळ

दोन वर्षाच्या कोरोना महामारीच्या कालखंडानंतर यावर्षी राज्यात नव्या उत्साहाने श्रावणी उपाकर्म पर्व पार पडले. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियानांतर्गत श्रावणी वेद प्रचाराचा कार्यक्रम व्यापक स्तरावर घेण्यात आला. उत्तर भारतातील पाच विद्वान व पाच भजनोपदेशकांना या कार्यक्रमासाठी आमंत्रित करण्यात आले होते, तर राज्यातील विद्वान व भजनीकांचाही या प्रचार अभियानात समावेश करण्यात आला होता.

शहरी व ग्रामीण भागातील क्रियाशील अशा आर्य समाजांसाठी सात, पाच किंवा तीन दिवसांचे कार्यक्रम ठेवण्यात आले होते, तर ग्रामीण भागातील कांही आर्य समाजासाठी एक अथवा एका दिवसांचे कार्यक्रम घेण्यात आले . महर्षी दयानंद सरस्वती यांच्या 'वेदांचे शिकणे आणि शिकविणे, तसेच ऐकणे व ऐकणे ऐकविणे, हे आर्यजनांचे परमकर्तव्य आहे', या वचनाला जागत राज्याची आर्य प्रतिनिधी सभा गेल्या २५ वर्षांपासून वेदप्रचाराचे व्रत अव्याहतपणे जोपासत आहे. त्यानुसार विद्वान व प्रचारक ठिकठिकाणी जातात व आपल्या भजन, प्रवचन व व्याख्यानांद्वारे वैदिक धर्माचा पवित्र मानवतेचा संदेश सामान्यांपर्यंत पोहोचवतात.

सकाळी व संध्याकाळी कार्यक्रम

यावर्षीचे श्रावणी कार्यक्रम दि.२९ जुलै ते २७ ऑगस्ट २०२२ दरम्यान संपन्न झाले. पण पोळा हा पारंपारिक सण आल्याने काही ठिकाणी या कार्यक्रमाची सांगता २५ ऑगस्टलाच झाली.जवळपास सव्वाशे आर्य समाजासाठी कार्यक्रमांचे नियोजन करण्यात आले होते. कांही ठिकाणचे आर्य समाज क्रियाशील नसल्याने तेथे कार्यक्रम होऊ शकले नाहीत. श्रावणी वेद प्रचार कार्यक्रमांदरम्यान दररोज सकाळी विविध यजमानांच्या उपस्थितीत वैदिक यज्ञ संपन्न होत असे. यात यजमान दांपत्य व इतर आर्यजनांनी श्रद्धेने पवित्र वेदमंत्रांच्या आहुत्या देत असत. या कार्यात स्थानिक पुरोहितांची भूमिका देखील महत्त्वाची ठरली. यज्ञानंतर आर्य भजनोपदेशकांनी संगीतमय वातावरणात भजने सादर केली. नंतर वैदिक विद्वानांनी श्रोत्यांना प्रवचनाच्या माध्यमाने विविध विषयांवर संबोधित केले. सकाळच्या सत्रात भजन-प्रवचनांचे विषय हे प्रामुख्याने आध्यात्मिक व धार्मिक असत.

शाळा महाविद्यालयात व्याख्याने

विद्यार्थ्यांच्या बालमनावर वैदिक मानवी मूल्यांचे संस्कार रुजविण्याच्या उद्देशाने आर्य समाजाच्या श्रावणी कार्यक्रमांसोबतच स्थानिक शाळा महाविद्यालयांत देखील भजनोपदेशक व विद्वानांचे कार्यक्रम आयोजित केले गेले. भारताचे भविष्य समजल्या जाणाऱ्या विद्यार्थ्यांमध्ये सुसंस्कारांचे बीजारोपण करणे, हा देखील वेदप्रचाराचाच भाग आहे, असे समजून सकाळी ११ ते दुपारी १ वाजेपर्यंतच्या काळात शाळा व महाविद्यालयात विद्वान व भजनोपदेशकांचे कार्यक्रम संपन्न होत असत. यात उत्तम दिनचर्या, देशभक्ती, मातृ-पितृसेवा, शरीर, मन,बुद्धीचा विकास आदी विषयांवर मार्गदर्शन केले गेले.

रात्री सामाजिक व राष्ट्रीय विषय

रात्रकालीन सत्रात ८ ते १० वा.दरम्यान राष्ट्रीय, सामाजिक तर प्रासंगिक विषयांवर भजनसंगीत व व्याख्यानाचे कार्यक्रम पार पडले. सकाळपेक्षा रात्रीच्या कार्यक्रमात श्रोत्यांची उपस्थिती अधिक जाणवत असे. तसेच काही ठिकाणी पारिवारिक सत्संग देखील संपन्न झाले.

संभाजीनगर, परळी ,लातूर व सोलापुरात उत्साह

भरतपुर (राजस्थान) येथील वैदिक विद्वान व लेखक पं.रामनिवासजी गुणग्राहक व मथुरा येथील भजनीक पं.उदयवीर आर्य यांनी संभाजीनगर (औरंगाबाद) येथील सरस्वती कॉलनी व गारखेडा या दोन आर्य समाजात, तसेच परळी, लातूरच्या गांधी चौक व भक्तीनगर या

आर्य समाजात आणि शेवटी सोलापूर येथील आर्य समाजात प्रचार व प्रसार केला. परळी येथील न्यू हायस्कूल, महर्षी कणाद विद्यालय, वैद्यनाथ कॉलेज, मॉडर्न कनिष्ठ महाविद्यालय या ठिकाणी विद्यार्थ्यांसाठी कार्यक्रम पार पडले, तर श्रावणी पौर्णिमेदिनी सामूहिक संस्कृत दिन समारंभात दोन्ही विद्वानांनी संस्कृत विषयांचे महत्त्व प्रतिपादित केले.

शाहू महाविद्यालयात कार्यक्रम

लातूर येथे वेद प्रचारादरम्यान राज्यात शिक्षण क्षेत्रात उंच भरारी घेणाऱ्या राजर्षी शाहू महाविद्यालयात संस्कृत दिन साजरा करण्यात आला. यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री पं.रामनिवासजी गुणग्राहक हे उपस्थित होते. यावेळी त्यांना आधुनिक युगात संस्कृत भाषा किती मोलाची आहे, यावर प्रकाश टाकला.

गांधी चौक आर्य समाजाबरोबरच भक्तीनगर आर्य समाजात देखील या विद्वानांच्या वेद प्रचार कार्यक्रमाला स्वतःकडून उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला. शेवटी या दोन्ही विद्वानांच्या वेदप्रचार अभियानाची सांगता सोलापूरच्या आर्य समाजात झाली. येथील दयानंद महाविद्यालय देखील या दोन्ही विद्वानांची व्याख्याने पार पडली.

आनंद पुरुषार्थी यांच्यामुळे नवचैतन्य

देश-विदेशात ओजस्वी भाषणांद्वारे वेदप्रचार करणारे आंतरराष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ते आचार्य श्री आनंदजी पुरुषार्थी (होशंगाबाद- म.प्र.) यांनी व देवबंद (उत्तर प्रदेश) येथील भजनीक पंडित अमरेशजी आर्य यांनी परभणी ,हिंगोली ,नांदेड, देगलूर, शहापूर, मुदखेड आणि धर्माबाद या ठिकाणी आपल्या प्रभावशाली भजने व प्रवचनांद्वारे श्रोत्यांमध्ये नवा उत्साह निर्माण केला. त्या त्या ठिकाणच्या श्रावणी समापनदिनी बहुकुंडीय यज्ञाचे आयोजन करून मोठ्या प्रमाणावर नवे यजमान जोडण्याचे कार्य श्री पुरुषार्थी यांनी केले. जोशपूर्ण व्याख्यानांनी वेदांचे महात्म्य व अन्य वैदिक मूल्यांना श्रोत्यांच्या हृदयापर्यंत पोहोचवण्याचे पवित्र कार्य त्यांनी केले.

दोन युवा प्रचारकांचे मौलिक कार्य

सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) येथून आमंत्रित युवा विद्वान पं.शिवकुमारजी शास्त्री व फरीदाबाद (हरियाणा) येथून आमंत्रित युवा भजन गायक पं.प्रदीपजी आर्य या जोडी आपल्या उत्कृष्ट शैलीतून वेदज्ञानाची गंगा प्रवाहित केली. श्रोत्यांना त्यांचे विचार ऐकून खूपच समाधान वाटत असे.बीड जिल्ह्यातील अंबाजोगाई व किल्लेधारूर या दोन ठिकाणच्या आर्य समाजातील कार्यक्रम यशस्वी ठरले. तर लातूर जिल्ह्यातील रेणापूर, शिवणखेड, सुगाव आणि रामनगर(शहर) या आर्य समाजातही या दोन विद्वान मित्रांनी श्रोत्यांच्या अंतरंगात वेदज्ञानाचा प्रकाश निर्माण केला. त्यांची प्रवचने व भजने ऐकून सामान्य श्रोते देखील अतिशय प्रभावीत होत असत. शिवणखेड सारख्या ग्रामीण पण क्रियाशील अशा आर्य समाजात या दोन्ही विद्वान मित्रांनी खूपच प्रभावशाली व्याख्याने दिली. खेडेगावातील माता भगिनींना हा कार्यक्रम खूपच भावला.

पं.ब्रिजेशजींकडून निरंतर कार्य

अतिशय उदात्त, समर्पण व तळमळीच्या भावनेतून नेहमीच प्रचाराचे कार्य करणारे आणि सभेला सर्वाधिक वेळ देणारे गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश) येथील वैदिक विद्वान श्री ब्रिजेश जी शास्त्री हे सर्व काही सहन करीत मोठ्या उत्साहात प्रचार कार्य करतात . अगदी छोट्याशा अडवळणी गावात देखील श्रोते कमी असोत की अधिक... व्यवस्था कोणत्याही पद्धतीची असो.... पण काहीही तक्रार न करता तितक्याच उत्साहाने ऋषी दयानंदांचा संदेश पोहोचण्याचे कार्य निरंतरपणे त्यांच्याकडून होते. या वर्षी त्यांनी व सहारनपुर येथून आलेले भजनोपदेशक पं.ऋषिपालजी पथिक यांनी तितक्याच तळमळीने वेदप्रचाराचे कार्य केल. धाराशिव (उस्मानाबाद) जिल्ह्यातील उमरगा ,गुंजोटी, औराद, माडज तर लातूर जिल्ह्यातील निलंगा, बिबराळ, उदगीर ,औराद शहाजानी या ठिकाणी त्यांनी वेदांचा संदेश लोकापर्यंत पोहोचवला. बिबराळ या गावी उत्साही आर्य कार्यकर्ते श्री हनुमंत जाधव यांच्या प्रयत्नातून आणि गावकऱ्यांच्या सहकार्याने नव्याने बांधण्यात आलेल्या आर्य समाज मंचाचे उद्घाटन या विद्वानांच्या प्रमुख उपस्थितीत तर सभामंत्री राजेंद्र दिवे व इतर मान्यवरांच्या

उपस्थितीत संपन्न झाला. त्यानंतर यावर्षी उदगीर येथे श्रावणी वेद प्रचार पारिवार सत्संगाच्या रूपात ही साजरा करण्यात आला. तेथेही या विद्वानांनी मार्गदर्शन केले .तर एक महिनाभरापासून चालू असलेल्या औराद शहाजानी येथील पारिवारिक सत्संग उपक्रमाची सांगता या दोन्ही पंडितांच्या मार्गदर्शनाने संपन्न झाली. येथील प्रधान डॉ.श्री प्रकाशजी कच्छवा हे लहानशा अपघातात जखमी (हाताला प्लास्टर) झाले असताना सुद्धा खूपच प्रयत्नशील राहिले. त्यांनी व त्यांच्या पदाधिकाऱ्यांनी अथक प्रयत्न करून मासिक वेदसत्संग व श्रावणी वेदप्रचाराची परंपरा चालूच ठेवली.

पुणे व नाशिकात वेदप्रचारास साफल्य

आर्य विश्वाचे प्रभावशाली वैज्ञानिक विद्वान डॉ सत्यप्रकाशजी यांचे शिष्य वैदिक विद्वान श्री विमलकुमारजी आर्य (हरदोई उ.प्र.) आणि भजनीक पं. रामकुमारजी आर्य (हिसार- हरियाणा) यांनी महाराष्ट्राची सांस्कृतिक व शैक्षणिक राजधानी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या पुणे येथील वारजे, नाना पेठ व पिंपरी या तीन आर्य समाजात तर नाशिकातील देवळाली कॅम्प, भगूर आणि पंचवटी येथील तीन आर्य समाजात वैदिक धर्माच्या प्रचाराचे कार्य केले. त्यांच्या कार्यक्रमाची सांगता धुळे येथील आर्य समाजात झाली.

मराठी विद्वानांचे प्रचारकार्य

या व्यतिरिक्त मराठी भाषिक विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री यांनी करडखेल, लोहारा ,निवघा, हदगाव आणि शिऊर येथे वेदप्रचाराचे कार्य केले. हदगाव येथे पं.राजवीरजी यांच्या समवेत स्वामी गोविंददेवजी ,पं. चंद्रकांत वेदालंकार ,श्री आर्य मुनीजी,पं. सोगाजी घुन्नर हेही वेदप्रचार सप्ताहात विद्वान म्हणून सहभागी झाले. तर नांदेडचे आर्य लेखक पं.नारायणजी कुलकर्णी व सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रताप सिंहजी चौहान यांनी जरोडा, येळेगाव, मरडगा, भाटेगाव, कंजारा, तामसा या गावात जाऊन ग्रामीण भागातील लोकांसमोर वेदांची शिकवण समजावून सांगितली. तर परळीचे विद्वान डॉ. वीरेंद्रजी शास्त्री यांनी अजनी, माजलगाव व गंगाखेड येथे पोहोचून वेदप्रचाराचे कार्य केले. तसेच उदगीरचे डॉ. श्री नरेंद्रजी शिंदे यांनी हाळी, धनेगाव या गावी पोहोचून वेदज्ञान विशद केले. पं.नारायण शास्त्री व संगमेश्वर शास्त्री यांनी गांजूर, उजेड व अंकुलगा येथे प्रचाराची धुरा वाहिली. पं.चंद्रेश्वर शास्त्री यांनी धाराशिव , रामेगाव येथे प्रचाराचे कार्य केले. तर पं.आर्यमुनिजी,पं. अशोकराव कातपुरे आणि श्री सदाशिवराव जगताप यांनी कळंब, वाशी, ईट, घाटपिंपरी गिरवली, चांदवड, अंजनसोंडा, मानेवाडी तेरखेडा, येथे प्रचाराचे कार्य केले .तसेच श्री आर्यमुनिजी, सोगाजी घुन्नर आणि सुलोचनाबाई शिंदे यांनी वलांडी ,मदनसुरी, कासार बालकुंदा ,बडूर ,कंधार ,मुखेड बाराहाळी या ठिकाणी प्रचाराच्या कार्याची जबाबदारी यशस्वीपणे पार पाडली.तसेच पं.शिवाजीराव निकम यांनी मोगरगा, मंगरूळ ,अंबुलगा, हनुमंतवाडी येथे यज्ञाद्वारे प्रचार केला.प्रा.डॉ.अखिलेशी शर्मा यांनी मालेगाव व जळगाव भागात वेदोपदेश दिला. पं. वशिष्ठजी आर्य व योगिराज भारती यांनी बनसारोळा व शिराढोण येथे प्रचारकार्य केले. पं.लक्ष्मणजी आर्य व पं.धोंडीरामजी शेप यांनी येलदरी व अंधोरी येथे प्रचाराचे कार्य केले. पं.भानुदासरावजी देशमुख यांनी घाटनांदुर येथे सत्संग. करुन शाळेत व्याख्यान केले. पं. श्रीरामजी आर्य व सुलोचनाबाई शिंदे यांनी पानचिंचोली, होळी, मुशिराबाद येथे प्रचार कार्य केले तर सोममुनिजी व आचार्य सत्येंद्रजी यांनी चाकूर ,वळवळ नागनाथ येथे जाऊन प्रचार केला.तसेच पू.विज्ञानमुनिजी, डॉ. विठ्ठलराव जाधव आणिपं. करणसिंह यांनी मुरूम, सास्तुर, बेडगा, कदेर येथे वेदप्रचार केला . पं. प्रकाशवीर आर्य, पं. ज्ञानकुमार जी आर्य, पं. दिनेश शास्त्री, अजित शाहीर ,पं.शेरसिंह शास्त्री, प्रमोदजी कावरे, सहजानंद शास्त्री आदींनीही विविध ठिकाणच्या वेदप्रचारात भाग घेतला.

वरील सर्व कार्यक्रम यशस्वी केल्याबद्दल महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान श्री योगमुनीजी, मंत्री श्री राजेंद्रजी दिवे, कोषाध्यक्ष उग्रेसर राठौर व इतर पदाधिकाऱ्यांनी सर्व विद्वान भजनीक प्रचारकांचे आणि आयोजक आर्य समाजांचे धन्यवाद व्यक्त केले आहेत.

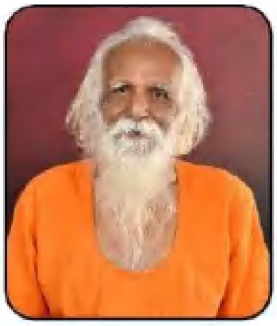

– तपस्वी महात्म्याचा १०६ वा वाढदिवस –

पू.हरिश्चंद्र गुरुजी हे 'कर्मयोगी ऋषी'

आर्य समाजाने पुनर्जागरणाचे कार्य केले!

–पद्मभूषण डॉ. कुकडे यांचे गौरवोद्गार

देशात अंधश्रद्धा, अनिष्ट रूढी परंपरा, पंथभेद, जातीयता व वाईट प्रथांचे स्तोम माजले असता महर्षी दयानंदांनी वैदिक ज्ञानाच्या आधारे त्यांचे खंडन करून मानवतेवर आधारित नवी समाजव्यवस्था निर्माण केली. त्यांनी स्थापन केलेल्या आर्य समाजाने सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक व राष्ट्रीय क्षेत्रात पुनर्जागरणाचे महान कार्य केले. पूज्य हरिश्चंद्र गुरुजी (श्रद्धानंद सरस्वती) हे याच विचारांचा वारसा पुढे नेणारे आधुनिक कर्मयोगी ऋषी आहेत,असे गौरवोद्गार ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ते पद्मभूषण डॉ. अशोकराव कुकडे यांनी काढले.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाज रामनगर लातूर च्या संयुक्त विद्यमाने वतीने दि.८ नोव्हेबर २०२२ रोजी ज्येष्ठ समाजसेवक स्वा.सै.पूज्य श्री हरिश्चंद्र गुरूजी (स्वामी श्रद्धानंदजी) यांच्या १०६ व्या वाढदिवसानिमित्त आयोजित विशेष अभीष्टचिंतन गौरव सोहळ्यात डा.श्री कुकडे प्रमुख पाहुणे म्हणून बोलत होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी महाराष्ट्र सभेचे उपप्रधान श्री प्रमोदकुमारजी तिवारी हे होते. तर विशिष्ट अतिथी म्हणून ज्येष्ठ पत्रकार श्री प्रदीप नणंदकर उपस्थित होते. या कार्यक्रमास ज्येष्ठ स्वा.सै. श्री आनंदमुनिजी, रामनगर आर्य समाजाचे प्रधान श्री शंकरराव मोरे, प्रांतीय सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांची उपस्थिती होती.

आपल्या मौलिक भाषणात श्री कुकडे म्हणाले, अगदी प्रारंभीच्या काळी मी माझ्या मित्रांसमवेत गांधी चौक आर्यसमाजमध्ये नियमित जात होतो. त्यावेळी अनेक विद्वानांची भाषणे ऐकण्याची संधी लाभली. त्यामुळे खऱ्या अर्थाने जगण्याचे बळ मिळाले. आर्यसमाज व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघाचे विचार जवळपास मिळते-जुळते आहे. अंधश्रद्धा निर्मूलन, बालविवाह रोखणे, विधवांचे पुर्नविवाह आदी बाबतीत आर्य समाजाने केलेले काम गौरवशाली आहे. आमचे मित्र दिवंगत श्री बिरदीचंद्रजी कुचेरिया यांच्या संपर्कामुळे चाळीस वर्षांपूर्वी मी सत्यार्थप्रकाश हा ग्रंथ वाचला. या ग्रंथाच्या वाचनामुळे मला सत्य वैदिक विचारांची जाणीव झाली. त्यामुळे संघ व आर्यसमाज हे पूरक काम करते आहे, हे लक्षात आले. स्वामी दयानंद सरस्वती यांनी आर्य वैदिक विचारांची मध्यवर्ती कल्पना पुन्हा समाजात रुजवण्याचे मानवतावादी काम केले.

आर्य समाज व मानवतेबरोबरच वैदिक विचारांशिवाय आता देशाला पर्याय नाही. खऱ्या अर्थाने मानवतेची दृष्टी आर्य समाजाकडे आहे. चोहीकडे राक्षसी वृत्ती वाढत असतांना वेदानुसार चालण्याचा संदेश आर्यसमाजाने दिला आहे. हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्रामात आर्य समाजी देशभक्त वीरांनी दिलेले बलिदान अतिशय मोलाचे आहे. हिंदू समाजावर अनन्वित अत्याचार झाले, हिंदुत्वावर निजामाने आघात केला. त्यावेळी आर्यसमाजी तरुणांनी मोठ्या शौर्याने केलेला प्रतिकार व दिलेले योगदान अविस्मरणीय राहील. निजामाविरोधात लढण्यासाठी

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश आदी उत्तर भारतीय राज्यांतून आर्यसमाजी आले होते. आर्यसमाजाचा हा क्रांतिकारी लढा कदापी विसरता येणार नाही.जातीयता नष्ट करण्याचे काम आर्यसमाजाने केले. मोठ्या प्रमाणात धर्मांतरित झालेल्या बांधवांना पुन्हा वैदिक धर्मात घेण्याचे व त्यांच्या शुद्धीकरणाचे धाडसी काम आर्यसमाज व अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंदजी यांनी केले. पूज्य हरिश्चंद्र गुरूजी यांच्याबद्दल गौरवपूर्ण उद्गार काढतांना श्री डॉ. कुकडे म्हणाले–'गुरुजींचे आदर्श जीवन दीपस्तंभासारखे आहे. देशाच्या उज्वल भवितव्यासाठी त्यांनी असंख्य विद्यार्थ्यांना मानवतेची जाणीव दिली . त्यांना सुसंस्कारित केले . आचार्य सोनेराव सारख्यांना घडविण्याचे काम काम गुरुजींनी केले आहे. ही प्रेरणा सर्वांनी घेतली पाहिजे.' गुरूजी हे खऱ्या अर्थाने नव्या पिढीचे प्रेरणास्त्रोत असल्याचे त्यांनी शेवटी प्रतिपादन केले.

प्रमुख पाहुणे ज्येष्ठ पत्रकार प्रदीप नणंदकर म्हणाले, 'माझा आर्य समाजाशी प्रत्यक्षात संबंध आला नसला, तरी मी निलंगा तालुक्यातील नणंद गावचा असल्याने माझ्या गावातील एका आर्यसमाजी व्यक्तीशी माझी जवळीकता होती. क्रांतिकारी आर्य नेते शेषराव वाघमारे यांच्यामुळे मला आर्यसमाजाचे विचार विशुद्ध स्वरूपाचे व प्रखर राष्ट्रवादी असल्याचे लक्षात आले. गुरूजींनी साठ–सत्तर वर्षात शेकडो विद्यार्थी घडविले आहेत. दयानंद महाविद्यालयात शिकत असतांना माझे अनेक मित्र गुरुजींच्या सानिध्यात असायचे. कॉलेजच्या मैदानावर गुरुजींची मानवतेची शाळा भरत असे. अगदी शांत व सुस्वभावी असा श्वेत वस्त्रातील हा महात्मा विद्यार्थ्यांना काय सांगत आहे ? याविषयी त्यावेळी कुतूहल वाटे. गुरूजींकडे पाहुन आम्हां सर्वांना प्रेरणा मिळते. यापुढे त्यांचे हे पवित्र कार्य त्यांच्या शिष्यवृंदांनी करण्याचा संकल्प केला पाहिजे, असेही ते म्हणाले.

याप्रसंगी श्री आनंदमुनीजी यांनी गुरुजींच्या कार्यास तोड नसल्याचे सांगून असंख्य विद्यार्थी घडवण्याचे हे महत्कार्य म्हणजे खऱ्या अर्थाने ईश्वरीय कार्य असल्याचे सांगितले. यावेळी सर्वश्री प्रा. ओमप्रकाशजी होळीकर, श्री व्यंकटेश हालिंगे, विजयकुमार कानडे, डॉ. प्रकाश कच्छवा, प्रा. डॉ. अरुण चव्हाण, रांजणकर, इत्यादींनी आपल्या मनोगतातून गुरुजींना शुभकामना दिल्या. याच कार्यक्रमात सरकारने पूज्य गुरुजींना पद्म पुरस्कार जाहीर करावा, या डॉ. नयनकुमार आचार्य यांनी मांडलेल्या प्रस्तावाचे उपस्थितांनी टाळ्यांच्या कडकडाटात स्वागत केले व एकमुखाने हा ठराव पारित केला.

कार्यक्रमाच्या प्रारंभी पं.श्री चंदेश्वरजी शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली संपन्न झालेल्या आयुष्कामेष्टी यज्ञात यजमान म्हणून सौ. सुमनदेवी व श्री अंबादासराव सोमवंशी,सौ.नीरादेवी व श्री नागराज चुडमुडे, सौ. अरुणादेवी व श्री माधवराव गायकवाड हे सहभागी झाले.

मुख्य सत्कार सोहळ्याची सुरुवात सर्वश्री प्रा.डा. अरुण चव्हाण, प्रा. सोमदेव शिंदे- शास्त्री, पं. शिवकुमार अंबुलगे व पं. नारायण शास्त्री यांनी सादर केलेल्या वैदिक स्वस्तिमंत्र पठनाने झाली. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांनी केले. सभेचे भजनोदेशक श्री प्रतापसिंह चौहान व श्री आनंद रायकर यांनी भजन गायिले. सूत्रसंचालन प्रा. नयनकुमार आचार्य यांनी केले तर आभार प्रा.डा. श्री अरुण चव्हाण यांनी मानले.

कार्यक्रमास किल्लेधारूर, नांदेड, धाराशिव, शिवणखेड, सुगाव,निलंगा, नांदेड, मोगरगा, औराद शहाजानी, गुंजोटी, उमरगा, औराद, रेणापुर, अंबाजोगाई, परळी, उदगीर इत्यादी ठिकाणाहुन आर्यप्रेमी उपस्थित होते. तसेच लातूर शहरातील सर्व आर्य समाजाचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते व गुरुजींचे अनेक शिष्य मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होते.

या कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी आर्य समाज रामनगरचे प्रधान शंकरराव मोरे, मंत्री अनंत लोखंडे,सदस्य ज्ञानकुमार आर्य, नागराज चुडमुडे, अभिज्ञ लोखंडे, नारायण शास्त्री आदींनी प्रयत्न केले. विशेष करून श्री हंसराज सूर्यवंशी, वेदभूषण चुडमुडे, हर्षवर्धन सूर्यवंशी, नारायण शास्त्री यांनी अत्यधिक परिश्रम घेतले.

सोलापूर येथे राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा संपन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे सोलापूर येथील आर्य समाजात दि.४ डिसेंबर २०२२ रोजी घेण्यात आलेल्या दिवंगत विठ्ठलराव बिराजदार तांबाळकर स्मृती राज्यस्तरीय वक्तृत्व स्पर्धेला चांगलाच प्रतिसाद मिळाला. या स्पर्धेत सेवा सदन विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु. सृष्टी प्रकाश सोनवणे हिने पहिला क्रमांक मिळवला. तर द्वितीय क्रमांक त्याच शाळेच्या कु. अक्षता दत्तात्रय लाटे हिने तर तृतीय पुरस्कार श्रीमती निर्मळताई ठोकळ प्रशाला सोलापूर या शाळेच्या कु. स्नेहल भीमराव पवार हिने मिळवला. उत्तेजनार्थ पारितोषिके बीएफ दमानी प्रशाला सोलापूरच्या देवराज श्रीशैल् विभुते या विद्यार्थ्याने प्राप्त केला. स्पर्धेसाठी स्पर्धेचा महर्षी दयानंदांचे मानवतावादी विचारहा विषय ठेवण्यात आला होता. या

स्पर्धेचा विषय 'स्वामी दयानंद यांचे मानवतावादी विचार' हा होता. पं. राजवीर शास्त्रीजी आणि प्रा. प्रदीप आर्य यांनी स्पर्धेचे परीक्षक म्हणून काम पाहिले. आर्य प्रतिनिधी सभा महाराष्ट्र चे उपमंत्री श्री शंकरराव बिराजदार, आर्य समाज सोलापूरचे प्रधान श्री सुभाष गायकवाड, मंत्री रेवणसिद्ध कट्टे,उपमंत्री सत्यव्रत आर्य, कोषाध्यक्ष शरद विष्णू होमकर, वेदसुमन भोसले, केदार पुजारी, आदित्य सिद्धालकर, देविदास उकिरडे आदींच्या हस्ते पुरस्काराचे वितरण करण्यात आले.

कानडे (आर्य) दांपत्याचे प्रेरणादायी कार्य

नातवांसह चार नातींचाही केला जाहीर उपनयन संस्कार

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे अंतरंग सदस्य व आर्य समाज निलंगाचे प्रधान श्री विजयकुमारजी कानडे व त्यांच्या सुविद्य धर्मपत्नी सौ. करुणादेवी कानडे यांनी दि.३० ऑक्टोबर २०२२ रोजी आपली मुले सर्वश्री डॉ. वेदकुमार, विश्वजीत, विवेक व सत्यप्रकाश यांची मुले आर्यन, यज्ञाक्ष, दक्ष तर मुली ऋतंभरा, अदिती, दीपशिखा व आर्या यांचा जाहीर समारंभपूर्वक उपनयन संस्कार संपन्न केल्याने समाजासमोर एक नवा आदर्श स्थापन झाला आहे.

हल्ली मुलांचे उपनयन संस्कार मोठ्या प्रमाणात केले जातात, पण मुलींचे उपनयन संस्कार मात्र तुरळक प्रमाणात होतात. काही ठिकाणी 'उपनयनाचा अधिकार मुलींना नाही', असे म्हणून टाळले जाते. पण श्री कानडे (आर्य) परिवाराने नातवांसह आपल्या नातींचा उपनयन संस्कार करून या परंपरेला छेद दिला असून त्यांनी महर्षी दयानंद प्रतिपादित विशुद्ध वैदिक विचार व संस्कारांची परंपरा समाजात रुजवण्याचा प्रयत्न त्यांनी केला आहे.

या जाहीर उपनयन संस्काराचे पौरोहित्य वैदिक विद्वान डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी अतिशय प्रभावीपणे केले. तर सहयोगी पुरोहित म्हणून पं. श्री प्रकाशवीर आर्य व पं.श्री दिनेश शास्त्री यांनी मोलाची भूमिका बजावली. या कार्यक्रमात पूज्य स्वामी श्रद्धानंद जी (हरिश्चंद्र गुरुजी), सभेचे महामंत्री श्री राजेंद्र दिवे, उपमंत्री श्री प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी यांनी बालक- बालिकांना आशीर्वाद दिले. तर राजकीय, धार्मिक व सामाजिक क्षेत्रातील मंडळींनी यावेळी आवर्जून उपस्थिती दर्शवून बालकांना शुभेच्छा दिल्या. या प्रेरणादायक कार्याबद्दल श्री विजयकुमारजी कानडे व सौ. करुणादेवी कानडे आणि समस्त कानडे कुटुंबियाचे सर्वत्र अभिनंदन होत आहे.

'मराठी' सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथाचे थाटात प्रकाशन

महर्षी दयानंद सरस्वती यांनी अपार ज्ञानसाधनेतून रचलेला सत्यार्थ प्रकाश हा ग्रंथ जगातील प्रत्येक मानवाचे सर्वंकष कल्याण साधणारा असून धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक व राष्ट्रीय क्षेत्राची यथायोग्य उन्नती करणारा आहे. या ग्रंथाच्या वाचनाने वैश्विक समस्यांचे निराकरण होते व जगात सर्वत्र शांतता नांदते, असे विचार प्रांतीय सभेचे प्रधान श्री योगमुनीजी यांनी व्यक्त केले. सभेने प्रकाशित केलेल्या या बहुप्रतीक्षित 'मराठी सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथाचे विमोचन श्री मुनीजींनी केले.

याप्रसंगी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर, उपमंत्री श्री लखमसीभाई वेलानी, प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, पुस्तकाध्यक्ष ज्ञानकुमार आर्य ,आर्य समाज परळीचे प्रधान श्री जुगलकिशोर लोहिया, वैद्य विज्ञानमुनी, डॉ. नयनकुमार आचार्य, प्रांतीय आर्य वीर दलाचे अधिष्ठाता व्यंकटेश हालिंगे, अंतरंग सदस्य शंकरराव मोरे, ओमप्रकाश पाराशर, किशनराव राऊत, अॅड. जोगेंद्रसिंह चौहान, लक्ष्मणराव आर्य, शंकरराव मोरे, ओमप्रकाश पाराशर, डॉ.प्रकाश कच्छवा, विजयकुमार कानडे, ओमप्रकाश वाघमारे, सौ.लीलावती जगदाळे, देविदासराव कावरे, डॉ.वीरेंद्र शास्त्री, सोमनाथ अप्पा आर्य , काशिनाथ चिंचाळकर, रंगनाथ तिवार इत्यादी उपस्थित होते.

'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथाची ही पंधरावी मराठी आवृत्ती असून आर्य समाज पिंपरीच्या वतीने ज्येष्ठ अभ्यासक श्रीपाद जोशी यांच्याकडून अनुवादित करण्यात आलेल्या मराठी आवृत्तीचे हे विशुद्ध स्वरूपातील प्रकाशन आहे. एकूण ६१६ पृष्ठांच्या या ग्रंथाची छपाई अतिशय सुबक, सुंदर, दर्जेदार आणि आकर्षक स्वरूपात झाली असून अभ्यासू तज्ज्ञांकरवी शुद्ध असे मुद्रित संशोधन करण्यात आले आहे.

मुखपृष्ठावर अतिशय कल्पकतेतून समग्र पृथ्वीवर दाटलेल्या ढगांच्या काळोखात वैदिक सत्यज्ञानाचा सूर्योदय होत असून त्याची किरणे पृथ्वीवरील सर्व देशांवर सर्वत्र पसरत असतानाचे चित्र रेखाटले आहे. तर त्याच्या मागे सत्यार्थ प्रकाशाचे निर्माते लेखक महर्षी दयानंद यांचे उत्कृष्ट चित्र छापले आहे. मलपृष्ठावर विद्वानांनी काढलेल्या ग्रंथविषयक गौरवोद्गारांना स्थान देण्यात आले असून ज्या-ज्या दानदात्यांनी ग्रंथ प्रकाशनासाठी सहकार्य केले, त्यांचे फोटो व नावांची यादी प्रकाशित केली आहे.

या ग्रंथाची किंमत रू.१२० इतकी असून प्रचारार्थ रू.९० किंमतीत विक्रीस हा ग्रंथ देण्याचे निश्चित झाले आहे. तरी हा ग्रंथ मागवू इच्छिणाऱ्या वाचकांनी सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे व व्यवस्थापक श्री रंगनाथ तिवार यांच्याशी संपर्क करावा.

राज्यस्तरीय चिल्ले गौरव वक्तृत्त्व स्पर्धा संपन्न

मेघराज शेवाळे प्रथम, गीता वाडकर द्वितीय तर साक्षी जकाकुरे तृतीय

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे आर्य समाज, औराद (शहाजाणी) येथे २५ डिसेंबर २०२२ रोजी स्वा.सै.मन्मथअप्पा चिल्ले व सौ.कलावतीबाई चिल्ले गौरव राज्यस्तरीय आंतरमहाविद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा घेण्यात आली. 'महर्षी दयानंदांचे राष्ट्रनिर्मितीविषयक विचार' या विषयावर आयोजित या स्पर्धेत ठिकठिकाणच्या जवळपास दहा ते बारा विद्यार्थ्यांनी भाग घेतला.

या स्पर्धेत लातूर येथील दयानंद महाविद्यालयाचा विद्यार्थी मेघराज दयानंद शेवाळे याने प्रथम येण्याचा मान मिळविला. तर निलंगा येथील महाराष्ट्र विद्यालयाची विद्यार्थिनी कु.गीता माधवराव वाडकर हिने द्वितीय व स्थानिक औरादच्या महाराष्ट्र उच्च माध्यमिक विद्यालयाची स्पर्धक कु.साक्षी ओम जकाकुरे हिने तृतीय क्रमांकाचे वक्षीस पटकावले. या स्पर्धा कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थान निवृत्त प्राध्यापक श्री भगवानरावव पेठकर यांनी भूषविले, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून लातूरचे वैदिक विद्वान प्रा.श्री चंद्रेश्वर शास्त्री उपस्थित होते. स्पर्धेचे परीक्षण प्राचार्या सौ.शारदा जाधव, कवी श्री सतीश होनगावे, साहित्यिक श्री रावसाहेब घाटगे, आर्ययुवक दिनेश शास्त्री यांनी केले.

मान्यवरांच्या व परीक्षकांच्या मार्गदर्शनानंतर शेवटी वरील पारितोषिक प्राप्त तिन्ही स्पर्धकांना प्रथम (रु.२०००), द्वितीय(रु.१५००) व तृतीय (रु.१०००) अशी बक्षीस रक्कम, प्रमाणपत्र व वैदिक साहित्य प्रदान करण्यात आले.

स्पर्धेच्या सफलतेसाठी सर्वश्री डॉ.प्रकाशजी कच्छवा (प्रधान), बसवराज वलांडे (उपप्रधान), भरतजी बियाणी(मंत्री), आदर्श व्यास, प्रताप मुळे, रावसाहेब, मधुसूदन बियाणी (कोषाध्यक्ष), काशीनाथ सज्जनशेटे, विनोद डोईजोडे, काशीनाथ डुमनाबादे, सौ.सुनीता आर्य आदींनी परिश्रम घेतले.

आर्य दिनदर्शिका २०२३ चे प्रकाशन संपन्न

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे या वर्षीच्या आर्य दिनदर्शिकेचे प्रकाशन दि.११ डिसेंबर रोजी लातूर येथील रामनगर आर्य समाजात करण्यात आले. सर्वहितकारी व विश्व कल्याणकारी विचारांनी आणि हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्रामातील थोर क्रांतिकारी नेत्यांच्या छायाचित्रांनी परिपूर्ण अशा या दिनदर्शिकेचे

प्रकाशन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, पुस्तकाध्यक्ष श्री ज्ञानकुमार जी आर्य , अंतरंग सदस्य व आर्य समाज रामनगरचे प्रधान श्री शंकरराव मोरे, मंत्री श्री अनंत लोखंडे, उपप्रधान श्री नागराज चुडमुडे, सदस्य श्री बालाजी पेन्सलवार यांच्या शुभहस्ते हे प्रकाशित संपन्न झाले.

यावेळी आर्यजनांच्या उपस्थितीत बृहद्यज्ञ भजन व प्रवचन असे कार्यक्रम पार पडले. सभामंत्री श्री राजेंद्र दिवे यांनी यावेळी आर्य दिनदर्शिकेच्या प्रकाशनामागची भूमिका विषद केली. यावर्षी हैदराबाद स्वातंत्र्यसंग्रामाचा अमृत महोत्सव असल्याने दिनदर्शिकेच्या प्रत्येक पृष्ठावर या संग्रामात मोलाची भूमिका बजावणाऱ्या आर्य बलिदानी क्रांतिकारी महापुरुषांची चित्रे प्रकाशित करण्यात आली आहेत. तसेच वैदिक विचारांच्या प्रचारासाठी या दिनदर्शिकेची किंमत नाममात्र १५ /- रुपये इतकी ठेवण्यात आली आहे.

वैदिक व्याख्यानमाला उपक्रमास ठिकठिकाणी भरीव प्रतिसाद

आचार्य श्री मनुदेवजी, पं. प्रतापसिंह चौहान, आर्यमुनी यांचे विद्यार्थ्यांना मोलाचे मार्गदर्शन

विद्यार्थी जीवन हा आयुष्याचा मूलभूत पाया असून याच वयात दिले जाणारे संस्कार विद्यार्थ्यांचे भावी आयुष्य घडवतात. याकरिता विद्यार्थ्यांनी वेदांनी प्रतिपादित केलेले मानवतेचे संस्कार ग्रहण करून जीवन यशस्वी बनवावे. आळस दूर करून, दुर्गुणांचा त्याग करून नेहमी विवेक जागृत करावा. शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व बौद्धिक उन्नती साधण्यासाठी तत्पर राहावे. माणुसकीचा मार्ग स्वीकारावा आणि सर्व दृष्टीने यशस्वी बनवावे, असे आवाहन युवा वैदिक विद्वान आचार्य श्री मनुदेवजी आर्य (गाजियाबाद) यांनी व्यक्त केले.

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे विद्यार्थ्यांना सुसंस्कारित करण्याच्या उद्देशाने आयोजित वैदिक व्याख्यानमाला या उपक्रमांतर्गत अंबाजोगाई येथील योगेश्वरी महाविद्यालयात आयोजित कार्यक्रमात श्री आर्य बोलत होते. या पहिल्याच कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ.श्री व्ही. एन. जोशी हे होते. याप्रसंगी पंडितजींनी विद्यार्थ्यांमध्ये माणुसकीचे संस्कार रुजवणे आवश्यक असल्याचे सांगून माता-पिता व गुरुजनांनी यासाठी प्रयत्न करावे, असे आवाहन केले. याच कार्यक्रमास श्री आर्यमुनी यांनी वेदांचे महत्त्व प्रतिपादन करून वेदाच्या चार संहिता विद्यार्थ्यांना दाखवल्या. तर सभेचे भजनोपदेशक पंडित श्री प्रताप चौहान यांनी भजन सादर केले. संचलन प्रा. डी. आर. देवळे यांनी केले. यावेळी अंबाजोगाई येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते मंत्री श्री भानुदासराव देशमुख, प्रधान सरस्वती वशिष्ट आर्य यांच्यासह अनेक मान्यवर उपस्थित होते.

कार्यक्रमांना चांगलाच प्रतिसाद

अंबाजोगाई नंतर आडस येथील आर्य कार्यकर्ते श्री रमेश खाडे यांच्या प्रयत्नातून केंद्रेवाडी येथील तुलसी किशन प्राथमिक व माध्यमिक निवासी शाळेत कार्यक्रम पार पडला. नंतर किल्ले धारूर येथे कस्तुरबा गांधी बालिका विद्यालय व ज्ञानदीप माध्यमिक विद्यालयात आयोजित कार्यक्रमांना विद्यार्थ्यांकडून चांगला प्रतिसाद मिळाला. त्यानंतर अंजनडोह येथे नूतन माध्यमिक विद्यालयात आर्य कार्यकर्ते प्रमोदजी मिश्रा, विठ्ठलरावजी आदमाने, सोमनाथ आप्पा आर्य मुख्याध्यापक एन. पी. देशमुख आदींच्या उपस्थितीत विद्वानांचे व्याख्यान व भजन पार पडले. येथे पारिवारिक सत्संग देखील संपन्न झाला.त्यानंतर कळंब येथे विद्याभवन हायस्कूल, शिवाजी महाराज महाविद्यालय या ठिकाणी व्याख्यानाचे आयोजन झाले. दिनांक ७ डिसेंबर रोजी वाशी जिल्हा उस्मानाबाद येथे प्राथमिक शाळा शिवशक्ती नगर व जगदाळे मामा विद्यालयात कार्यक्रम घेण्यात आला. त्यानंतर दुसऱ्या दिवशी घाटपिंपरी येथे न्यू हायस्कूल विद्यालयात मुलांसाठी व्याख्यान संपन्न झाले. विविध ठिकाणच्या कार्यक्रमात विद्यार्थ्यांना अल्पदरात प्रबोधनात्मक साहित्य वितरण केले जात आहे, तर शाळांच्या मुख्याध्यापकांना सत्यार्थ प्रकाश हा ग्रंथ भेट दिला जात आहे. पुढे हे वेदप्रचार वाहन बार्शी व करमाळा कडे रवाना झाले. ठिकठिकाणी कार्यकर्त्यांकडून वैदिक विद्वानांचे व प्रचारकांचे स्वागत होत असून शाळा-महाविद्यालयात कार्यक्रम घेण्यासाठी ते सर्व प्रयत्नशील आहेत.

शोक वार्ता

सत्यप्रिय मुनीजी यांचे देहावसान

रेणापुर येथील आर्य समाजाचे आधारस्तंभ व आंतरजातीय विवाह मंडळाचे संस्थापक सदस्य श्री सत्यप्रियमुनीजी उर्फ सांबाप्पा शंकररावजी राऊत यांचे शुक्रवार दि.२५ मार्च २०२२ रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८९ वर्षे वयाचे होते.त्यांच्यामागे पत्नी निलूबाई, तीन मुले, एक मुलगी, सुना-जावई, नातू-नाती असा परिवार आहे. विद्यार्थी दशेपासूनच श्री सांबाप्पा राऊत हे आर्य विचारांशी जोडले गेले. आपल्या सहकाऱ्यांसमवेत राहुन त्यांनी गावात आर्य समाजाची स्थापना केली. १९६९ साली स्व.रामस्वरूप लोखंडे, माणिकराव भोसले व श्री राऊत हे तिघे हळीखेड (कर्नाटक) येथे आयोजित स्वामी अग्निवेशजींचे व्याख्यान ऐकण्यासाठी गेले. मानवनिर्मित जातीपातीच्या उच्चाटनाविषयीचे स्वामीजींचे क्रांतिकारी भाषण ऐकून हे तिघेही इतके प्रभावित झाले की या विचारांना कृतीरूप देत त्यांनी १४ जानेवारी १९७० रोजी आपल्या गावी 'आंतरजातीय विवाह मंडळा'ची स्थापना केली. पुढे या संस्थेने जातिनिर्मूलनाचे मोठे कार्य केले. या मंडळातर्फे आजपावेतो पाचशेच्या वर आंतरजातीय विवाह झाले आहेत. परळी येथील एका कार्यक्रमात त्यांना वानप्रस्थाश्रमाची दीक्षा घेतली. ते विद्वानांची व्याख्याने मन लावून ऐकत असत. त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. सर्वश्री पं.शेरसिंह शास्त्री, संगमेश्वर शास्त्री, प्रशांतकुमार शास्त्री, प्रकाशवीर आर्य, डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी हा अंत्यविधी संपन्न केला. सर्वश्री राजेंद्र दिवे (सभामंत्री), नामदेव साबदे, उटगे गुरुजी, डॉ.चंद्रशेखर लोखंडे यांनी श्रद्धांजली वाहिली.

श्रीमती लीलावती शर्मा यांचे निधन

औराद शहाजानीयेथील ज्येष्ठ आर्य कार्यकर्त्या व आर्य समाजाचे संस्थापक सदस्य स्व.श्री किशनलालजी शर्मा (महाराज) यांच्या धर्मपत्नी श्रीमती लीलावतीबाई शर्मा यांचे दि.२२ मार्च २०२२ रोजी दु.२ वा. च्या समारास वार्धक्यावस्थेने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ९३ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे २ मुले, २ मुली, नातू-पणतू असा परिवार आहे. गरजुंना आर्थिक मदत करणे, घरी आलेल्या विद्वानांचे आदरातिथ्य करणे व सामाजिक कार्यात सहकार्य करणे या सारख्या कार्यात त्या आघाडीवर राहिल्या. मनमिळावू व प्रेमळ स्वभावाच्या लीलावतीबाईंची वैदिक सिद्धांतावर दृढ निष्ठा होती. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. आर्य समाजाचे मंत्री डॉ.श्री.प्रकाश कच्छवा यानी हा अंत्यविधी संपन्न केला.

शिक्षण महर्षी वलांडे गुरुजी यांचे निधन

औराद (शहा.) येथील शारदोपासक शिक्षण संस्थेचे संस्थापक सदस्य आर्य समाजी विचारांनी प्रभावित असलेले ज्येष्ठ शिक्षण प्रसारक व सामाजिक कार्यकर्ते शिक्षणमहर्षी श्री विश्वनाथराव शंकरअप्पा वलांडे गुरुजी यांचे दि.२५ मार्च रोजी दुपारी निधन झाले. ते ८५ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे तीन मुले, दोन मुली, सुना, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. औरादच्या आर्य समाज उभारणीत त्यांचे योगदान होते. ते महाराष्ट्र विद्यालयाचे मुख्याध्यापक देखील होते. शारदोपासक शिक्षण संस्थेच्या व आर्य समाजाच्या जडणघडणीत त्यांचा मोलाचा वाटा होता. मादीमं महाविद्यालयात १०वेळा मानवता संस्कार शिबिरांचे निःशुल्क आयोजन करून त्यांनी सहकार्य केले. त्यांच्या पार्थिवावर तगरखेड या त्यांच्या मूळ गावी अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

श्रीमती वेदवती शास्त्री यांचे निधन

नांदेड आर्य समाजाच्या सदस्या, प्रसिद्ध आर्य लेखक स्व.कुशलदेवजी शास्त्री यांच्या धर्मपत्नी व निवृत्त मुख्याध्यापिका श्रीमती वेदवती शास्त्री यांचे दि.२८ मार्च २०२२ रोजी प्रदीर्घ आजाराने बारामती येथे सुपुत्र डॉ.राजवीरजी शास्त्री यांचे घरी दुःखद निधन झाले. गेली दोन वर्षापासून त्या आजारी होत्या. त्यांच्या मागे पुत्र, स्नुषा, कन्या, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे. त्या ६८ वर्षांच्या होत्या.त्यांच्या पार्थिवावर तिसऱ्या दिवशी नांदेडच्या गोदातीरी गोवर्धन घाटावर पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेचे मंत्री श्री राजेंद्र दिवे, नारायणराव कुलकर्णी, श्रीमती मारमपल्ले, आचार्य सत्येन्द्रजी, सत्यव्रतजी जिंदम, प्रा.सत्यकाम पाठक, शैलेंद्र गोजे, शंकर महाजन, वैजनाथ हालिंगे आदी कार्यकर्ते उपस्थित होते.

मारुतीराव काळे यांचे देहावसान

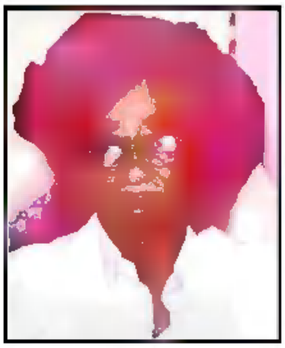

आर्य समाजाचे वरिष्ठ मार्गदर्शक कार्यकर्ते डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी यांचे ज्येष्ठ बंधू व कष्टकरी शेतकरी श्री मारुतीराव बळीराम काळे यांचे दि.११ एप्रिल २०२२ रोजी सकाळी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ९० वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात तीन मुले, सुना, तीन कन्या, जावई, भाऊ, भावजय, नाती-नातू व पणतू असा विशाल परिवार आहे. मूळचे औराद (ता.उमरगा जि.धाराशिव) येथील रहिवासी असलेले श्री मारुतीराव काळे यांनी आयुष्यभर मेहनतीतून शेती व्यवसाय केला. परिकूल परिस्थितीवर मात करीत त्यांनी संसार फुलविला. लहान बंधू प्रा.श्री सु.ब.काळे यांचे अपूर्व सहकार्य, मार्गदर्शन व प्रेरणा यातून त्यांचे संघर्षमय जीवन विकसित होत राहिले. पुढे एरंडेश्वर ता.पूर्णा जि.परभणी येथे सपरिवार येऊन स्थिरस्थावर झाले व एक उत्तम श्रमनिष्ठ शेतकरी म्हणून नावारुपाला आले.

त्यांच्या पार्थिवावर मान्यवरांच्या उपस्थितीत वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले, तर तिसऱ्या दिवशी शांतियज्ञ संपन्न झाला.

जितेंद्र कापसे यांचे निधन

वैदिक विद्वान-लेखक स्व.कुशलदेव शास्त्री यांचे ज्येष्ठ बंधू श्री जितेंद्र शंकरदेव कापसे यांचे दि.२१ एप्रिल २०२२ रोजी वडवळ(ना.) येथे हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी, दोन मुले, मुली, जावई, सुना व नातवंडे असा परिवार आहे. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. परळी गुरुकुलाचे आचार्य श्री सत्येंद्रजी व वैजनाथ हालिंगे यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

श्रीमती मीरादेवी सोनवणे यांचे देहावसान

जुन्या पिढीतील आर्य कार्यकर्त्या व कन्या गुरुकुलाच्या स्नातिका श्रीमती मीरादेवी चंद्रभानू सोनवणे यांचे जून २०२२ च्या पहिल्या आठवड्यात वृद्धापकालीन आजाराने निधन झाले.

त्यांच्या मागे दोन मुले, ३ मुली, जावई व नातू-नाती असा परिवार आहे. श्रीमती सोनवणे यानी आपले पतिदेवांच्या शैक्षणिक व सामाजिक कार्यात मोलाची भूमिका पार पाडली, तर कौटुंबिक जबाबदारी उत्तमपणे सांभाळली. त्यांच्या पार्थिवावर पं.नारायण शास्त्री यांनी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले.

ओमप्रकाश पाखरसांगवे यांचे निधन

निलंगा येथील परिवर्तनवादी आर्य कार्यकर्ते श्री ओमप्रकाशजी नामदेवराव पाखरसांगवे यांचे दि.२७ जुलै २०२२ रोजी अल्पशा आजाराने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ६४ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे वडील, पत्नी श्रीमती शोभादेवी, चार कन्या, जावई, भाऊ व नातू-नाती असा परिवार आहे.

मृत्युच्या ५-६ महिन्यां अगोदर त्यांना कर्करोगाने ग्रासले.त्यांचेवर औरंगाबाद, लातूर, परळी आदी ठिकाणी उपचार करण्यात आले. विशेष करून जावई आचार्य श्री सत्येंद्रजी व कन्या सौ.रेखा यांनी परिश्रमपूर्वक सेवाशुश्रूषा केली. शेवटी गुरुकुल परळी येथे निसर्गोपचार पद्धतीने उपचार घेत असताना अचानक हृदयविकाराचे झटका आल्याने त्यांची प्राणज्योत मालवली.

समाजसेवक पू.हरिश्चंद्र गुरुजींचे शिष्य म्हणून ओळखले जाणारे श्री पाखरसांगवे यांनी स्वतःसह आपल्या भगिनी व चारही मुलींचे परंपरागत जातीप्रथेचे बंधन जुगारुन आंतरजातीय विवाह केले. महाराष्ट्र राज्य वीज मंडळाच्या ऑपरेटर पदावरुन ते ६ वर्षांपूर्वी निवृत्त झाले होते. राज्य तांत्रिक कामगार युनियनचे सचिव म्हणूनही त्यांनी काम पाहिले.

त्यांच्या पार्थिवावर निलंगा येथे दुसऱ्या दिवशी वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. पं.नयनकुमार आचार्य, पूज्य श्री सोममुनिजी व इतरांनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

स्वा.सै.पत्नी कमलबाई भोसले काळाच्या पडद्यावर

लातूर येथील एकनिष्ठ आर्य कार्यकर्त्या, यज्ञप्रेमी, सेवाभावी व दानशूर व्यक्तिमत्त्व म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या स्वातंत्र्य सैनिक पत्नी श्रीमती कमलबाई गंगाधरराव भोसले यांचे दि.७ सप्टेंबर २०२२ रोजी वयाच्या ७८ व्या वर्षी दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे बंधू श्री बाबूराव झांपले, भावजय व त्यांचा परिवार विद्यमान आहे. श्रीमती भोसले या स्वातंत्र्य सैनिक पत्नी असल्याने त्यांना शासनाकडून पेन्शन मिळत असे, तर रेल्वे व बसची विनामूल्य प्रवास सुविधा उपलब्ध होती. आपल्या या सोयीसुविधांचा त्यानी आर्य समाजाच्या कार्यासाठी सदुपयोग केला. गुरुकुलीय शिक्षणाकरिता मुला-मुलींना उ.भारतात सोडणे, आर्य दिनदर्शिका गावोगावी पोहोचविणे आदी प्रवासात त्या आर्यजनांसोबत जात असत. तर विविध ठिकाणच्या आर्य महासंमेलन, उत्सव व अन्य कार्यक्रमांतही त्या सहभागी होत असत. काही गुरुकुल संस्था, आर्य समाजांना ही त्यांनी भरघोस निधींचे दान केले आहे. आपल्या दिवंगत पतिंच्या स्मरणार्थ त्यांनी आर्य समाज रामनगर-लातूरसाठी स्थायी कोष देखील स्थापन केला आहे. त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार केले. यावेळी सभेचे मंत्री राजेंद्र दिवे, विजयकुमार कानडे, अनंत लोखंडे आदी उपस्थित होते.

माणिकराव टोंपे यांचे निधन

उदगीर येथील आर्य समाजाचे क्रियाशील कार्यकर्ते, पुरोहित व प्रचारक पं.माणिकराव टोंपे यांचे दि.१६ सप्टेंबर २०२२ रोजी दुःखद निधन झाले. महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे विविध ठिकाणी आयोजित श्रावणी वेदप्रचार कार्यक्रमात ते श्रद्धेने सहभागी होत असत. विवाह, नामकरण, अंत्येष्टी आदी वैदिक संस्कारांचे पुरोहित म्हणूनही त्यांनी कार्य केले आहे. त्यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

ज्योतिबा सूर्यवंशी यांना पत्नीशोक

औराद ता.उमरगा येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते व जालना येथे राज्य राखीव पोलीस दलात कार्यरत श्री ज्योतिबा सूर्यवंशी यांच्या पत्नी सौ.सुनीताबाई यांचे दि.१८ सप्टेंबर २०२२ रोजी पहाटे वयाच्या ५७ व्या वर्षी प्रदीर्घ आजाराने दुःखद निधन झाले. त्या गेल्या ८ ते १० वर्षांपासून अर्धांगवायू आजाराने ग्रस्त होत्या. त्यांच्या मागे पती, दोन मुले, मुलगी, जावई व नातू-नाती असा परिवार आहे. परळी येथील श्रद्धानंद गुरुकुलाचे स्नातक व पतंजली संस्थेचे समाजमाध्यम राज्यप्रभारी योग शिक्षक आचार्य श्री अविनाश शास्त्री यांच्या त्या मातुःश्री होत्या.

धार्मिक, मनमिळाऊ व आर्य समाजी विचारांशी अनुकुल असलेल्या तसेच स्वावलंबी, स्वाभिमानी, सत्प्रवृत्तींच्या अनुगामिनी सौ.सुनीताबाई यांच्या निधनाने सूर्यवंशी परिवारात पोकळी निर्माण झाली आहे. त्यांच्या पार्थिवावर दुपारी ११ वाजता वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. परळीचे प्रा.डॉ.अरुण चव्हाण व संतोष आर्य यांच्या पौरोहित्याखाली हा अंत्यविधी पार पडला.

बळीरामजी खोडवे यांचे निधन

माजलगांव येथील सिद्धेश्वर माध्यमिक विद्यालयाचे संस्कृताध्यापक व गुरुकुलाचे स्नातक श्री रवींद्र खोडवे (शास्त्री) यांचे वडील श्री बळीरामजी शेषराव खोडवे (वय ७७ वर्षे) यांचे येल्डा ता.अंबाजोगाई येथे राहत्या घरी दि.१४ ऑक्टोबर २०२२ रोजी रात्री ११ वाजता हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे एक मुलगा, सहा मुली, जावई, सून व नातू-नाती असा परिवार आहे. श्रमनिष्ठ शेतकरी व आर्य समाजी विचारात वाढलेले स्व.खोडवे हे अतिशय मनमिळाऊ, कष्टाळू व धार्मिक सद्‌गृहस्थ होते. ते आपल्या मामामुळे आर्य समाजी विचारांच्या संपर्कात आले. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी ११ वाजता पं.डॉ.वीरेंद्रजी शास्त्री यांच्या प्रमुख पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

प्रा.डॉ.बिरादार यांना मातृ-पितृ शोक

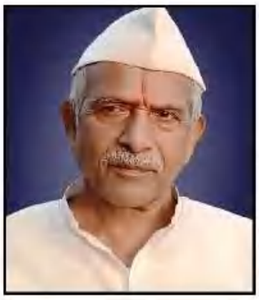

अहमदपूर येथील म.फुले महाविद्यालयातील संस्कृत विभागप्रमुख प्रा.डॉ.प्रशांत बिरादार यांच्या माता-पित्यांचे दोन महिन्याच्या फरकाने दुःखद निधन झाले. मातुःश्री सौ.सुनंदा बाबुराव बिराजदार यांचे दि.१९.०९.२०२२ रोजी वयाच्या ५५ व्या वर्षी प्रदीर्घ आजाराने देहावसान झाले. त्या गेल्या ८ ते १० वर्षांपासून अर्धांगवायूच्या आजाराने पीडित होत्या. त्यांच्यावर दुसऱ्या दिवशी अंत्यसंस्कार करण्यात आले. वडील श्री बाबुराव गणपतराव बिरादार यांचे दि.२७.११.२०२२ रोजी वयाच्या ६९ व्या वर्षी दुपारी १२ वा. अल्पशा आजाराने निधन झाले. ते १ महिन्यापासून अर्धांगवायू व निमोनिया आजाराने ग्रस्त होते. त्यातच त्यांची प्राणज्योत मालवली. श्री बाबुरावजी हे प्रतिष्ठित नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ते व गावकऱ्यांचे मार्गदर्शक होते. विशेष म्हणजे त्यांना वाचन व लेखनाचा छंद होता. त्यांनी लिहिलेल्या कादंबऱ्या, नाटक व कथासंग्रह अप्रकाशित आहेत. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी चवण हिप्परगा ता.देवणी जि.लातूर या मूळगावी अंत्यसंस्कार करण्यात आले. या दोन्ही दिवंगत दाम्पत्याच्या मागे एक पुत्र, एक कन्या, सून, जावई व नातू-नाती असा परिवार आहे.

नरहरी सोन्नर यांचे निधन

येल्डा ता.अंबाजोगाई येथील प्रतिष्ठित कार्यकर्ते व श्रमनिष्ठ शेतकरी श्री नरहरी धोंडिराम सोन्नर (वय ८० वर्षे) यांचे १८ ऑगस्ट २०२२ रोजी सकाळी ९ वा. हृदयविकाराने दुःखद निधन झाले. त्यांच्या मागे पत्नी, दोन मुले, सूना, मुली व जावई असा परिवार आहे. गुरुकुलाचे स्नातक व माजलगाव येथील सिद्धेश्वर महाविद्यालयाचे उपप्राचार्य प्रा.लक्ष्मीकांत सोन्नर (शास्त्री) यांचे ते वडील होते.

श्री सोन्नर हे धार्मिक वृत्तीचे आर्य कार्यकर्ते होते. परळीचे आर्य समाजी दिवंगत श्री नंदलाल लाहोटी हे येल्डा गावचे असल्याने सोन्नर कुटुंबावर आर्य समाजी विचारांचे संस्कार झाले. परळी येथे आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रमात सोन्नर पिता-पुत्र व गावातील मंडळी सहभागी होत असत. याच प्रेरणेतून श्री नरहरी सोन्नर यानी आपली दोन मुले व गावातील इतरही मुलांना संस्कृत शिकविण्यासाठी गुरुकुलास पाठविले. गावासोबतच चिचखंडी, बोधेगांव, राक्षसवाडी, ममदापुर, मोरफळी या गावातील जवळपास ५० ते ६० विद्यार्थ्यांना गुरुकुलात दाखल केले. त्यांपैकी जवळपास १० ते १५ विद्यार्थी गुरुकुलाचे स्नातक बनून ठिकठिकाणी शिक्षक व प्राध्यापक म्हणून कार्य करतात. वैदिक विचारांचे अनुयायी दिवंगत नरहरी सोन्नर यांनी गावात गोरक्षण, व्यसनमुक्ती, यज्ञप्रचार हे देखील उपक्रम राबविले. प्रभातवेळी ते ग्रामगीता वाचन करीत असतांनाच अचानक त्यांना हृदयविकाराचा झटका येवून त्यांची प्राणज्योत मालवली.

त्यांच्या पार्थिवावर दुपारी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. यावेळी गुरुकुलांचे विविध ठिकाणचे स्नातक, गावातील प्रतिष्ठित नागरिक, तर भारतीय शिक्षण प्रसारक मंडळाचे सचिव प्रा.चंद्रकांत मुळे हे उपस्थित होते. नंतर पार पडलेल्या शांतियज्ञाचे पौरोहित्य प्रा.डॉ.वीरेंद्र शास्त्री यांनी केले. याप्रसंगी गुरुकुलीय स्नातक मित्रमंडळी उपस्थित होती.

प्रा.रवींद्र नवेकर यांचे देहावसान

मुखेड येथील म.फुले महाविद्यालयातील इंग्रजी विषयाचे प्राध्यापक श्री रवींद्र तानाजीराव नवेकर यांचे दि.७ सप्टेंबर २०२२ रोजी रात्री ११.४५ वा. सोलापूर येथील खाजगी इस्पीतळात उपचाराअंती दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते अवघे ४८ वर्षे वयाचे होते. निधनापूर्वी दीड-दोन वर्षापासून ते कोरोना व कर्करोगाने आजारी होते. लातूर, मुंबई व सोलापूर येथील खाजगी रुग्णालयात त्यांच्यावर उपचार करण्यात आले. त्यांच्या मागे पत्नी, आई, वडील, मुलगा व भाऊ असा परिवार आहे. महाराष्ट्र आर्य सभेचे पुस्तकाध्यक्ष श्री ज्ञानकुमार आर्य यांचे ते जावई होते.

लहानपणापासून श्री नवेकर हे आर्य समाजाच्या सान्निध्यात वाढले. मनमिळाऊ स्वभाव असल्याने त्यांचे सर्वांशी मैत्रीपूर्ण संबंध होते. गरजू विद्यार्थी, गरीब व्यक्ती व सामाजिक संस्थांना मदत करणारे प्रा.श्री नवेकर यांची 'विद्यार्थी प्रिय' प्राध्यापक म्हणून ओळख होती.

दिवंगत प्रा.श्री नवेकर यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी दुपारी पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. पं.संगमेश्वर शास्त्री यांनी हा विधी संपन्न केला. यावेळी सभामंत्री राजेंद्र दिवे, प्राचार्य डॉ.व्यंकटराव रानसेवार, आनंदराव आइनवाडे आदींनी श्रद्धांजली वाहिली.

वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली! ईश्वर दिवंगतांना शांती व सद्‌गती प्रदान करो, हीच कामना..! सर्व शोकाकुल कुटुंबियांच्या दुःखात आम्ही सहभागी आहोत...!

!! कृण्वन्तो विश्वमार्यम् !!

श्रेष्ठ मानव बनों ! वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एफ. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४१.
स्थापना ५ मार्च १९७७)

मानव कल्याणकारी उपक्रम

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

विद्वानो व आर्यनेताओं के सम्बोधन

डॉ.सत्यपालसिंह जी

स्वामी श्रद्धानंदजी

प्रकाशजी आर्य

विनयजी आर्य

डॉ.वेदपालजी

ओम मुनिजी

सांसद डॉ.प्रीतमजी मुंडे

पूर्व सांसद डॉ.वाघमारे

प्रधान योगमुनिजी

मन्त्री राजेन्द्रजी दिवे

डॉ.बी.एम.म्हेत्रे

पं.राजवीरजी

Reg.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/108/RNP/Beed/2021-2023

सेवा मे,

श्री. ____________________

____

____

____

प्रेषक –
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली– वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संपर्क कार्यालय आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१५१५ (महाराष्ट्र) इस स्थान से प्रकाशित किया ।